महर्षि

नवग्रह रहस्यम्

धर्मग्रंथों, शास्त्रों एवं विद्वानों द्वारा कही गई कथाओं की संग्रहीत ज्ञानमाला

लेखक

ज्योतिषाचार्य

पं. विनोद गौतम

प्रकाशक

ज्योतिष मठ संस्थान

ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल, मो. नं. 9827322068

pt.vinodgoutam@gmail.com

web.www.jyotishmath.com

महर्षि

नवग्रह रहस्यम्

धर्मग्रंथों, शास्त्रों एवं विद्वानों द्वारा कही गई कथाओं की संग्रहीत ज्ञानमाला नवग्रह रहस्यम्

लेखक : **ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम**

© सर्वाधिकार सुरक्षाधीन : ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल

प्रकाशक : ज्योतिष मठ संस्थान, नेहरू नगर, भोपाल
संस्थापक ज्योतिषाचार्य पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतम
अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वेदमूर्ति
ज्ञानरत्न की उपाधि से विभूषित

प्रकाशन वर्ष : अगस्त 2022

संस्करण : प्रथम

मूल्य : 101 रुपए

आवरण, आकल्पन : शनिदेव ग्राफिक्स, भोपाल 9926980190

प्रेरणा स्रोत

यहां मैं उन मार्गदर्शी विद्वानों का उल्लेख कर रहा हूं जिन्होंने पुस्तक 'नवग्रह रहस्यम्' को लिखने की प्रेरणा दी।

- *महामंडलेश्वर अवधूत बाबा श्री अरुण गिरि महाराजजी, ऋषिकेश*
- *पूज्य ब्रह्मचारी गिरीशजी महाराज, कुलाधिपति महर्षि संस्थानम*
- *प्रख्यात भविष्यवक्ता श्री नारायण शंकर-नाथूराम व्यासजी, जबलपुर*
- *वैज्ञानिक पर्यावरण एवं पृथ्वी विज्ञान, डॉ. प्रकाश गौतमजी, दमोह*
- *डॉ. अनिल शर्मा प्रसिद्ध चिकित्सक एवं कवि, भोपाल*

अनुक्रमणिका

1	नवग्रह : पौराणिक सत्य	4
2	ब्रह्मांड के ग्रह	5
3	नवग्रहों की कथा	6
4	विंसोतरी दशा में नवग्रहों के दशाफल	31
5	नवग्रहों के कल्याणकारक मंत्र	51
6	श्री नवग्रह स्तोत्र, नवग्रह चालीसा, नवग्रहों की आरती	56
7	नवग्रह गुणधर्म विषयक सर्वोपयोगी चक्रम्	65
8	नवग्रह परिचय	67
9	ग्रहराज सूर्यदेव का परिचय, सूर्य शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	68
10	चन्द्रदेव का परिचय, चंद्र शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	87
11	मंगलदेव का परिचय, मंगल शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	108
12	बुधदेव का परिचय, बुध शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	129
13	बृहस्पति देव का परिचय, गुरु शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	153
14	शुक्रदेव का परिचय, शुक्र शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	176
15	शनिदेव का परिचय, शनि शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	198
16	राहुदेव का परिचय, राहु शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	216
17	केतुदेव का परिचय, केतु शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, पूजन-व्रत विधि, दान, आदि संपूर्ण विवरण	239
18	शास्त्रोक्त वचन	255

संपादकीय

नवग्रह : पौराणिक सत्य

आकाश मंडल में सुशोभित नवग्रह की गाथा लिखना साधारणतया कठिन ही था, परन्तु इस कार्य के लिए हमारे ऋषि-मुनियों के ज्ञान, पारंपरिक प्रचलित कथाओं से संबंधित, पौराणिक ज्ञान तथा प्रसिद्ध साहित्यिक, धार्मिक ज्ञान के सहयोग से यह पुस्तक 'नवग्रह रहस्यम्' आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। धर्मग्रंथों शास्त्रों एवं विद्वानों द्वारा कही गई कथाओं की संग्रहीत ज्ञानमाला है 'नवग्रह रहस्यम'। इस पुस्तक में सभी प्रकार के धार्मिक, आध्यात्मिक एवं ज्योतिषीय महत्व के साथ नवग्रहों का संपूर्ण सार कथा-गाथा के रूप में सरल शब्दों में समाहित करने का प्रयास है। कहते हैं कि ज्योतिषी जब नवग्रहों की आकृति-प्रकृति एवं व्यक्तित्व के बारे में जान जाते हैं तो ज्योतिषी के सामने ग्रह नाचने लगते हैं। आशा है यह पुस्तक विद्वान पाठकों खासकर ज्योतिष प्रेमियों के लिए जन्म-जन्मान्तरों की सहयोगी बनेगी। इसी आशा एवं विश्वास के साथ प्रस्तुत है 'नवग्रह रहस्यम'।

ज्योतिषाचार्य

पं. विनोद गौतम

संचालक

ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल

अगस्त-2022

ब्रह्मांड के ग्रह

भगवान सूर्य संपूर्ण लोकों के आत्मा हैं। वे पृथ्वी और ब्राह्मण लोक के मध्य आकाश मंडल के भीतर कालचक्र में स्थित होकर बारहमासों को भोगते हैं। सूर्य की किरणों से एक लाख योजन ऊपर चंद्रमा हैं जिसकी चाल बहुत तेज है। इसलिए वे सब नक्षत्रों से आगे रहते हैं। ये सूर्य के एक वर्ष के मार्ग को एक माह में एवं एक माह के मार्ग को सवा दो दिन में तय कर लेते हैं। चंद्रमा से तीन लाख योजन ऊपर अभिजित के साथ 27 अन्य नक्षत्र हैं। भगवान ने इन्हें कालचक्र में नियुक्त कर रखा है। अतः ये मेरू को दांई ओर रखकर घूमते रहते हैं। नक्षत्रों से दो लाख योजन ऊपर शुक्र ग्रह का प्रभाव वर्षा कराने वाले ग्रह के रूप में रहता है। चंद्रमा के पुत्र बुध, शुक्र से दो लाख योजन ऊपर हैं। ये प्रायः मंगलकारी ही हैं, परन्तु जब सूर्य की गति का उल्लंघन करते हैं तब बहुत अधिक आंधी-बादल, प्राकृतिक प्रकोप होते हैं। बुध से दो लाख योजन ऊपर मंगल हैं। ये अशुभ ग्रह हैं, इनके ऊपर दो लाख योजन की दूरी पर भगवान बृहस्पति हैं। ये वक्र गति से न चलें तो एक राशि एक वर्ष में पार कर लेते हैं। बृहस्पति से दो लाख योजन की दूरी पर ऊपर शनिचर का अधिपत्य है। ये एक राशि में तीस-तीस महीने तक रह सकते हैं। इन सभी ग्रहों के ऊपर 11 लाख योजन की दूरी पर सप्तऋषियों का पवित्र लोक है। ये सप्तऋषि भगवान विष्णु के परमपद ध्रुव लोक की प्रदक्षिणा करते हैं। सप्तऋषियों से 13 लाख योजन ऊपर अंतिम ध्रुव लोक है इसमें भगवान विष्णु के परमपद उत्तानपाद के परमपुत्र भगवत भक्त ध्रुवजी विराजमान हैं।

इति ब्रह्मांडम्।

नवग्रहों की कथा

एक समय स्वर्गलोक की सत्ता-सिंहासन पर आसीन इंद्रदेव ने सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु से अनुरोध किया कि आप लोग क्रमशः अपने मुख से अपना-अपना शुभ, अशुभ, आकृति-प्रकृति, व्यक्तित्व, प्रभाव, शक्ति, पराक्रम और गरिमा का वर्णन करें। प्रस्तुत है सभी नौ ग्रहों की उनके श्रीमुख से प्रस्तुत की गई जानकारी...

।। मैं सूर्य देव हूँ ।।

सर्वप्रथम सूर्यदेव ने कहा – हे राजन मैं पृथ्वी से तेरह लाख गुणा बड़ा हूँ। मेरा रंग पीलापन लिए हुए लाल है। मैं सौरमंडल का स्वामी हूँ। प्रत्येक जड़-चेतन, प्राणियों की आत्मा मैं हूँ। मेरे प्रकाश से ही सब प्रकाशित होते हैं। मैं अंधकार और अज्ञान का शत्रु हूँ। मेरे द्वारा ही धातुओं और रत्नों में रंग एवं चमक आती है। सभी ग्रह नक्षत्र मेरी ही आकर्षण शक्ति से अपनी-अपनी कक्षा में स्थित और गतिमान हैं। समस्त इंद्रधनुषी रंगों का स्रोत मैं ही हूँ। मेरी असंख्य किरणें समस्त लोकों को आलोकित करती हैं, इसलिए मैं सहस्त्रांशु कहलाता हूँ। यह सातों रंग ही मेरे सात घोड़े हैं जो मेरे प्रखर एवं दिव्य रथ को खींचते हैं। मैं समस्त ग्रहों का राजा हूँ। चंद्रमा मेरा मंत्री है। शनि मेरा पुत्र है। बृहस्पति और मंगल मेरे अभिन्न मित्र हैं। मैं क्षत्रिय वर्ण हूँ। अग्नि तत्व प्रधान हूँ। मैं ही पृथ्वी पर जल की वर्षा करके जीव-जन्तु, वनस्पतियों को अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित एवं फलित करता हूँ। मानव के हृदय, आंखें और स्नायु आदि पर मेरा ही प्रभाव रहता है। मेरा शुभ प्रभाव होने पर साधारण व्यक्ति भी राजा, मंत्री या राष्ट्राध्यक्ष बन जाता है। शारीरिक, मानसिक रोग,

दुख, उदासीनता, अपमान, मंदाग्नि, उदर की क्षीणता और रोगों का आगमन मेरे प्रकूिल प्रभाव के कारण ही होता है।

किन्तु जो मेरे दिन अर्थात रविवार को व्रत रखते हैं, नमक नहीं खाते, उन्हें मैं रोग मुक्त रखता हूँ। जो लोग उपरोक्त वस्तुएं न खाते और न छूते हुए मेरे दिन व्रत-उपवास रखते हैं और उगते समय मेरे स्वरूप को अर्घ्य देकर विधिवत पूजन करते हैं उन पर मैं प्रसन्न होकर उन्हें धन-धान्य से परिपूर्ण करके जीवन में सफलता देता हूँ। मैं परम प्रतापी और समस्त जगत की आत्मा हूँ अत: ब्रह्मस्वरूप हूँ। मेरे दिन यानि रविवार को जन्म लेने वाला व्यक्ति तेजस्वी, चतुर, स्वाभिमानी और दानी होता है। उदार प्रकृति वाला ऐसा व्यक्ति कुलभूषण होता है। उसे 13वें तथा 23वें वर्ष में मेरी कृपा प्राप्त होता है। मैं प्रसन्न रहूँ तो उसका भाग्योदय करा देता हूँ। यदि रुष्ट रहूँ तो इन्हीं वर्षों में कष्ट देता हूँ। ऐसे व्यक्ति की उम्र 60 वर्ष से अधिक नहीं होती, यदि अनुकूल हूँ तो 119 वर्ष तक का जीवन देता हूँ।

मेरे रविवार के दिन संगीत, शिक्षा-दीक्षा, औषधि सेवन करना, पशु-पालन करना, नौकरी का प्रारंभ करना, हवन यज्ञ करना, मंत्र उपदेश को ग्रहण करना शुभ होता है। मैं अस्त्र-शस्त्र खरीदने बेचने, सीखने और वाद-विवाद में सफलता दिलाता हूँ। मेरे वार में पुष्य नक्षत्र हो तो महायोग बनता है। इस रवि-पुष्य योग में की गई हर साधना शीघ्र सिद्धिदायक होती है। साधक, तांत्रिक, ज्योतिषी रवि-पुष्य की शुभ घड़ियों में अपना तांत्रिक प्रयोग या साधना करने को उतावले रहते हैं।

मेरे दिन गाय का घी खाना बल, वीर्य एवं स्वास्थ्यवर्द्धक है, किन्तु गुड़, तेल, शहद खाना हानिकारक है। मेरे उदय-अस्त से

पृथ्वी के हर चराचर प्रभावित होते हैं तथा उदय पर जागते हैं और क्रियाशील होते हैं। अस्त होने पर क्रियाहीन होकर सोते हैं, यदि नहीं सोते तो पाचन तंत्र बिगड़ जाता है। पृथ्वी के जिस भाग पर मेरी किरणें नहीं पड़तीं वह भाग भूतों, प्रेतों, राक्षसों, निशाचरों का डेरा बन जाता है। चोर-चांडालों का भय मेरे प्रकाश के बिना प्राणियों को सताता रहता है। जन्म कुंडली में 3, 6, 10, 11वें स्थान पर मैं शुभ प्रभाव देता हूँ। मेरी स्वराशि सिंह, उच्च राशि मेष तथा नीच राशि तुला है।

विशेष

आजकल प्रचलन में रत्नों द्वारा ग्रह शांति के संबंध में प्राचीन ज्योतिष धर्म ग्रन्थों में कहीं पर भी कोई एक श्लोक द्वारा उल्लेख नहीं है। इस विषय में हम सभी का दायित्व है कि ज्योतिष से हटकर विषय रत्न, आभूषण आदि का प्रचार-प्रसार करने से बचें। इसी में ज्योतिष शास्त्र एवं हम सभी की भलाई है।

मैं चंद्र हूँ

राजन क्षमा करें! मुझसे सूर्य का अभिमान और स्वयं की प्रशंसा सहन नहीं हुई। इसलिए मैं अपने आसन से उठ खड़ा हुआ हूँ। मेरी भी सुनें राजन ये तपने वाले सूर्य तो स्वयं अपनी आग से जलते रहते हैं और उसी ताप से दूसरों को भी तपाते रहते हैं। इस तरह सभा में अपनी डींगे मार रहे हैं जैसे सारे चराचर पर तुम्हारा ही साम्राज्य है। यहां बैठे हम सब तुम्हारे आगे मानो तुच्छ हैं। यह न भूलें संसार के प्राणियों का मन मैं ही हूँ। मेरे कारण ही हर प्राणी के मन में शुभ-अशुभ विचार, कल्पना शक्ति का उदय होता है।

हे सूर्य! तुम्हारे ताप से पीड़ित लोगों को मैं ही शीतलता प्रदान करके उनका ताप और पीड़ा हरता हूँ। मेरे दर्शन से लोगों का मन आनंदित होता है। मैं सबसे तेज गति से चलता हूँ, इसलिए प्राणियों का मन भी तेजगति से सोचता और दौड़ता है। जहां तुम्हारी किरणें भी नहीं पहुँच पातीं वहीं मेरे द्वारा प्रभावित लोगों का मन पहुंच जाता है। तेज चलने के कारण ही मेरा नाम आशुगामी है। मेरे अशुभ होने पर जो प्राणी अपने मन संयमित

नहीं रख पाते वे पतन को प्राप्त होते हैं। ऐसे लोगों में भोग-विलास की इच्छा तीव्र होती है। अत: ऐसे लोगों को कन्याएं अधिक होती हैं। स्त्रियों पर मेरा सुप्रभाव सौन्दर्य, कांति एवं कलाएं देता है। मेरे पास सोलह कलाएं हैं उन्हीं कलाओं से लोग प्रेरणा और ज्ञान प्राप्त करते हैं। मेरी कृपा से सौन्दर्य ही नहीं, यश भी प्राप्त होता है। मेरे शुभत्व से प्राप्त होने वाला यश उज्जवल एवं सम्मानजनक होता है। अशुभ होने पर मैं व्यक्ति को अपमानित, लज्जित एवं अपयश का शिकार बना देता हूँ। गर्भ में भ्रूण की रक्षा मैं ही करता हूँ। मानव शरीर में रक्त का परिभ्रमण मेरे ही कारण होता है। समुद्र में ज्वारभाटा मेरे ही कारण आता है। मेरे अशुभ होने या रुष्ट पर उन्माद रोग, मानसिक विकार, मस्तिष्क ज्वर, सिरदर्द, शीत ज्वर, स्वांस रोग, कफ रोग होते हैं। मेरे अंदर जल तत्व सारे संसार को प्रभावित करता है। माता का प्रतिनिधित्व मैं ही करता हूँ। जिसको शुभ प्रभाव देता हूँ, वह दीर्घकाल तक मातृसुख प्राप्त करता है, किन्तु यदि अशुभ होता हूँ तो उसे बाल्यावस्था में ही मातृविहीन कर देता हूँ। स्त्रीजन्य रोग मेरे ही कारण होते हैं। गर्भपात और मासिक धर्म का क्रम मेरे ही कारण होता है। मेरे वार सोमवार के दिन मेरी उपासना, व्रत रखना और मेरे इष्ट शिव की पूजा-अर्चना करना लाभप्रद होता है। पूर्णमासी, प्रदोष (13) चतुर्थी (14) को मेरी तथा शिव की उपासना करने से लोगों के दुख, दारिद्र दूर होते हैं। ऐसे लोगों को मैं रोग मुक्त कर यश तथा संपत्ति देता हूँ। शुक्ल पक्ष की द्वितीया और चतुर्थी को जो महिलाएं व्रत रखती हैं, गणेश और मेरी पूजा करती हैं, अर्घ्य देती हैं और मेरा दर्शन कर चावल, देशी घी और शक्कर का प्रसाद अर्पित करती हैं, उसमें से आधा गाय को

खिलाकर आधा स्वयं खाती हैं, उन्हें धन-धान्य, संतान का सुख देकर लक्ष्मी का सुख प्रदान करता हूँ। जो नित्य मेरा दर्शन कर मेरे मंत्र का जाप करते हैं उनका सारा कष्ट दूर करके उन्हें सदैव प्रसन्नचित रखना मेरा परम कर्तव्य होता है। मेरे वार को जन्म लेने वाला चतुर, संतुलित मन मस्तिष्क वाला और यश-कीर्ति वाला होता है। वह शांत चित्त, स्थिर बुद्धि, धैर्यवान और राज्य कर्मचारी एवं राज्य मान्य होता है। मेरे शुभ होने पर उसे 4थे, 16वें एवं 27वें वर्ष में लाभ प्राप्ति होती है, किन्तु मेरे अशुभ प्रभाव में होने कारण इन्हीं वर्षों में उसे हानि या कष्ट होता है। ऐसे व्यक्ति की आयु 84 वर्ष होती है। प्रसन्न होने पर मैं 105 वर्ष की आयु देता हूँ तथा वह अपना संपूर्ण जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करता है।

मेरे वार में बीजों का रोपण करना, पौधे लगाना, कृषि यंत्र खरीदना या कृषि कार्य करना, व्यवसाय का शुभारंभ करना, भ्रमण तथा यात्रा करना शुभ रहता है। स्त्री प्रसंग करना, वस्त्र धारण करना, चावल, खीर बनाना, प्रसव होना सुखकारी होता है। मेरी शुभता व्यक्ति के अंदर कल्पना शक्ति देती है। ऐसा व्यक्ति कल्पना की उड़ान भरकर कविता एवं साहित्य का श्रवण कर यश प्राप्त करता है और विभिन्न उपाधियां तथा मान-पत्र पाता है। मैं कुंडली व लग्न में, 3, 4, 6, 8, 7, 10, 11वें स्थान (भाव) में शुभ परिणाम देता हूँ। मैं कर्क राशी का राशीष कहलाता हूँ। मेरी स्वराशि कर्क है। वृष मेरी उच्च राशि तथा वृश्चिक मेरी नीच राशि है। मैं ही जगदम्बा का स्वरूप हूँ। शिव मेरे पति हैं, इसलिए मुझे लोग चंद्रमा, निशापति, आदि नामों से संबोधित करते हैं।

मैं मंगल हूँ

इसके बाद मंगल ने कहा राजन आपने चंद्रमा की आत्म प्रवंचना सुनी है। 'वाह रे चद्रमा! अपने मुंह से इतनी प्रशंसा भी अच्छी नहीं होती। क्या मेरा महत्व किसी से कम है। मेरा नाम ही मंगल है। मैं जिस पर प्रसन्न होता हूँ उसे और उसके संपूर्ण जीवन को मंगलमय कर देता हूँ, किन्तु जिस पर कुपित होता हूँ उसका सर्वनाश करने में जरा भी विलंब नहीं करता। मेरी क्रूरता जग जाहिर है। देवता तक मुझसे घबराते हैं। मैं रक्तवर्णित अग्नितत्व से परिपूर्ण, सिंदूरीवर्ण वाला युवा पुरुष हूँ। मेरे अंदर पुरुषत्व एवं पराक्रम कूट-कूटकर भरा हुआ है। मैं ही प्राणियों में लाल रक्त का निर्माण एवं संतुलन करता हूँ। मैं पुरुषों को पराक्रम, शक्ति और धैर्य प्रदान करता हूँ।

मेरे अशुभ होने पर पित्त, मूर्च्छा, रक्त बहना, नकसीर फूटना, चोट लगना, पहाड़ों से गिरकर मरना, भूस्खलन, भूकंप, संग्राम में हत्या होना, आत्म हत्या का कारण बनना मानव के लिए कष्ट भोगना हो जाता है और यदि मैं शुभत्व देता हूँ तो

व्यक्ति को स्वस्थ, मजबूत, साहसी, विजेता, पुलिस एवं सेना में नायक पद दिलाता हूँ। भूमि, भवन मेरे ही कारण लोगों को प्राप्त होते हैं। मेरे कुपित होने पर व्यक्ति भूमि-भवनहीन होकर दर-दर भटकता है।'

मेरा दिन अर्थात मंगलवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति गर्म स्वभाव का, उत्साही, स्वाभीमानी, पराक्रमी, वीर और साहसी होता है। बौद्धिक कार्यों से ऐसा व्यक्ति दूर रहकर पहलवानी, जासूसी, खेलों में रुचि रखने वाला, मजबूत तन-बदन वाला और अपनी वीरता से आगे बढ़कर अपना लक्ष्य प्राप्त करने वाला होता है। मेरा शुभत्व निम्न क्षेत्रों में अच्छा और अशुभत्व होने पर बुरा फल देता है। मेरी शुभ स्थान पर उपस्थिति विजयकारी आग, करंट, वाद-विवाद, युद्ध, ऋण लेने या देने, ठेकेदारी, भूमि-भवन का निर्माण करने था ईंट, पत्थर, सीमेंट, मिट्टी का व्यवसाय करने से लाभ होता है। मेरा कुपित होना राजा को रंक बना देता है। मैं स्त्रियों को विधवा और पुरुषों को स्त्री वियोग भी देता हूँ। मैं विध्वंसक ग्रह हूँ। प्राणी के छठवें भाव पर दृष्टि डालकर रोगकारी बना देता हूँ।

28वां वर्ष मेरे लिए महत्वपूर्ण होता है। यदि मैं शुभत्व देता हूँ तो 28वें वर्ष में भाग्योदय कराकर व्यक्ति को सुखी करता हूँ, अशुभ होने पर इस आयु में घोर पतन, वैधव्य, कारागार, ऋण का बोझ डालकर व्यक्ति को इतना निराश कर देता हूँ कि वह आत्महत्या या किसी शत्रु की हत्या तक कर डालता है। 32वां वर्ष भी महत्वपूर्ण होता है। मेरे वार में जन्म लेने वाला 74 वर्ष की आयु पाकर पूर्ण आयु का सुख भोगता है। जो व्यक्ति मंगलवार का व्रत रखता है। नमक नहीं खाता, एक समय चने

या चने से बने पुए का भोग लगाकर खाता है। मेरा मंत्र जपता है। मेरे यंत्र की पूजा-अर्चना करता है और बेसन के लड्डू का भोग हनुमानजी को चढ़ाकर गाय, कुत्ते, बंदर तथा गरीबों में बांटता है उस पर मैं प्रसन्न होकर उसका हित करता हूँ। मेरे दिन गुड़, चना खाना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। यदि कोई मेरे कोप से बचना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह नित्य मसूर या चने की दाल, गुड़ और लाल वस्त्र का दान दे और मेरी उपासना करे।

मेष और वृश्चिक राशियों का मैं स्वामी हूँ। मकर मेरी उच्च राशि है और कर्क मेरी नीच राशि है। व्यक्ति की जन्म-पत्रिका के लग्न चक्र में मैं 3, 6, 10वें स्थान पर शुभ फल देता हूँ। दशम स्थान पर उच्च राशि मकर में स्थित होने पर मैं व्यक्ति को उच्च प्रशासनिक अधिकारी, सेनानायक आदि बनाकर राज्य में शासन करने का अवसर प्रदान करता हूँ। किन्तु नीच राशि कर्क पर कहीं भी रहकर मैं उस व्यक्ति को जीवन भर कष्ट ही देता हूँ। सूर्य और बृहस्पति मेरे मित्र हैं।

मैं बुध हूँ

इतना सब सुनते ही बुध ग्रह देव चीखकर बोले - बस-बस बहुत डींगे न मारो मंगल। तुम्हारा नाम मंगल जरूर है, परन्तु तुम इतना क्रूर ग्रह हो कि प्राणियों का अमंगल अधिक करते हो, तुम्हारे कारण ही शांतिप्रिय लोग युद्ध करते हैं, तुम भाई-भाई में फूट डालकर विवाद कराते हो। तुम्हारे कारण ही नित्य नई दुर्घटनाएं होती हैं। रक्तपात कराना तुम्हारा अहम काम है। तुम ही मांगलिक दोष उत्पन्न कर अबोध वधुओं को वैधव्य का कष्ट और पुरुषों को प्रिया विछोह का दुख देते हो। कलहप्रिय दुष्ट मंगल तुम्हारे तो नाम से स्त्रियां घबराती हैं।

किन्तु मुझे देखो, समस्त देवगण और देव राजा इन्द्रजी। मैं श्री गणेश स्वरूप हूँ। शांतिप्रियता और बुद्धि मेरा प्रधान गुण है। व्यापार कराने वाला, वेदशास्त्र, गणित, वैद्य और ज्योतिष शास्त्रों का जानकार तथा इन विषयों में निपुण बनाने वाला मैं बुध ग्रह हरित क्रांति वाला सौम्य ग्रह हूँ।

तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, हस्तरेखा, वाणिज्य, कानून के ज्ञान से मैं

अपना शुभत्व प्रकट करता हूँ। मैं शीघ्र नाराज या कुपित नहीं होता, यदि कुपित हो भी गया तो शीघ्र प्रसन्न भी हो जाता हूँ। हे मंगल! तुम्हें याद होगा कि मेरे आकाशमंडल में प्रकट होने पर एक बार चंद्रमा ने मेरे अपमान में कहा था कि - 'वह गणेशजी फुदक-फुदक कर आ गए।' तब मुझे क्रोध आया था और मैंने चंद्रमा को शाप दे दिया कि उसे क्षय रोग हो जाए।

परन्तु ब्रह्माजी के निवेदन करने पर मैंने अपना वह शाप वापस लेकर उसे नित्य घटता और बढ़ता रहने पर छोड़ दिया। फिर भी उस पर क्षय रोग का आंशिक प्रभाव काले धब्बे के रूप में अभी भी मौजूद है।

इस धरती पर हरित क्रांति मैं ही लाता हूँ। हरियाली, कृषि कार्य मेरी प्रसन्नता कारण ही सफल होते हैं। जो स्त्री-पुरुष संयम से न रहकर मन की मस्ती से काम करते हैं, वो बुद्धिहीन तथा क्षय रोग से ग्रसित होते हैं। ऐसे लोगों के घरों में अत्यधिक संतानें होकर उनकी आर्थिक एवं शारीरिक क्षमता नष्ट कर देता हूँ। कुछ संतानें नपुंसक या शक्तिहीन हो जाती हैं। व्यक्ति के अंदर बुद्धि में मैं ही हूँ। यकृत की बीमारी या अच्छाई मुझी से है। शरीर में रक्त शोधन मैं ही करता हूँ। मेरे अशुभ प्रभाव से यकृत रोग से पीड़ित व्यक्ति तथा रक्त दोष के कारण स्वास्थ्य का नाश होता है।

मेरे दिन जो जन्म लेते हैं वह शांति, चतुर, विद्वान, लेखक, ज्योतिषी, चिकित्सक, मुंशी, अध्यापक बनते हैं। 8वां तथा 18वां वर्ष शुभाशुभ परिणाम देता है। प्राणी की आयु 64 वर्ष होती है। मेरी प्रसन्नता, आराधना के द्वारा होने वाले पुण्य से 105 वर्ष की आयु प्रदान हूँ

बुधवार के दिन अर्थात मेरे दिन शिक्षा-दीक्षा, व्यापार करना, नोटिस देना, औषधि देना या वनस्पति औषधियां लाना शुभ रहता है, किन्तु किसी को ऋण देना, साझेदारी करना अहितकर होता है। मेरे दिन विद्यालय जाना, गृह प्रवेश, राजनीति में प्रवेश करना श्रेष्ठ होता है।

मुझे प्रसन्न करने के लिए गणेशजी को भोग लगाना, व्रत रखना तथा पूजन करना श्रेष्ठ रहता है। मैं मिथुन और कन्या दो राशियों का स्वामी हूँ। कन्या राशि मेरी उच्च राशि है और मीन मेरी नीच राशि है। मैं सदैव सूर्य और शुक्र के मध्य या सूर्य के साथ लग्न में स्थित रहता हूँ तो शुभ होने पर व्यक्ति को कलाकार, साहित्यकार, अभिनेता बना देता हूँ। उन्नत ललाट का ऐसा व्यक्ति कुलभूषण होता है।

विशेष

आजकल प्रचलन में रत्नों द्वारा ग्रह शांति के संबंध में प्राचीन ज्योतिष धर्म ग्रन्थों में कहीं पर भी कोई एक श्लोक द्वारा उल्लेख नहीं है। इस विषय में हम सभी का दायित्व है कि ज्योतिष से हटकर विषय रत्न, आभूषण आदि का प्रचार-प्रसार करने से बचें। इसी में ज्योतिष शास्त्र एवं हम सभी की भलाई है।

मैं बृहस्पति हूँ

बुध की झक-झक और आत्म प्रशंसा सुनकर बृहस्पतिजी से रहा नहीं गया और वे अपनी दाढ़ी सहलाते हुए बोले - 'क्यों बुध! क्यों इतना अधिक बोल रहे हो, सब जानते हैं कि तुम न नर है न नारी। तुम तो नपुंसक ग्रह हो। नाम तो तुम्हारा बुध है पर है तुम पूरे कुबुद्धि वाले। तुम्हारा स्वयं का कोई अस्तित्व ही नहीं। तुम्हारा अपना कोई प्रभाव नहीं। तुम तो जिस ग्रह के साथ रहते हो उसके साथ वैसा बनकर, वैसा ही प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है।'

सबसे बड़ा तो मुझे सब मानते हैं और गुरु कहते हैं। गुरु भी देवताओं का। इस सभा में इसीलिए मेरा उच्च स्थान है। मैं ही जातक की कुंडली में राजयोग बनाकर देवर्षि का पद दिलाता

हूँ। पुत्र प्राप्ति या संतानहीनता का विचार मेरे शुभाशुभ से ही किया जाता है। धन एवं धर्म का विचार मुझसे किया जाता है। व्यक्ति की मानसिक योग्यता मेरे प्रभाव के शुभाशुभ से नापी जाती है। मैं सुख-संपत्ति प्रदाता हूँ। मैं ही व्यक्ति के कुटुम्ब, अचल संपत्ति, वाक्य शक्ति एवं वाणी का गुण देता हूँ। सत वृत्तियों को प्रदान करने वाला मैं ही एक सात्विक ग्रह हूँ। आध्यात्मिक ज्ञान का दाता हूं, ज्ञान में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान देने वाला हूं।

सतयुग मैं सत्यवादी हरिश्चंद्र मैं ही था। त्रेता में राम के रूप में मेरा ही महत्व झलकता था। द्वापर युग में श्री कृष्ण के रूप में मैं ही था। मैं ही विष्णु हूँ। मुझे तीनों लोक में पूजा जाता है। कलियुग में सुमित, शांति-ज्ञान और सदाचार का स्वरूप मेरे द्वारा ही बचा हुआ है।

मेरे दिन अर्थात बृहस्पतिवार को जन्मा व्यक्ति उच्च आदर्श वाला राजा, शिक्षक, कवि, लेखक, नेता, मंत्री, वकील, न्यायाधीश बनता है। इतना ही नहीं मेरे वार के दिन जन्मे लोग तपस्वी, योगी, ध्यानी, ज्ञानी एवं विष्णु भक्त होते हैं। मैं अपने क्रोध पर नियंत्रण रखता हूँ। अत: किसी व्यक्ति पर अधिक कुपित होने पर भी उसका बहुत बड़ा अनिष्ट नहीं करता। मेरी सौम्यता एवं साधुता त्रैलोक में विदित है।

जो लोग विशेषकर महिलाएं मेरे वार के दिन उपासना, व्रत करती हैं। पीले पदार्थों का भोग लगाती हैं, उसे परिवार में बांट कर भोजन करती हैं, पीत वस्त्र धारण करती हैं। उन पर मैं पूर्ण प्रसन्न होकर उन्हे सुख-सौभाग्य तथा पुत्र-पौत्र का सौभाग्य प्रदान करता हूँ। अशुभ होने पर भी मैं जातक को मंत्र जाप का

अनुष्ठान करने की शक्ति और प्रेरणा देता हूँ। मेरे कुपित होने पर व्यक्ति ज्ञानहीन शिक्षाविहीन और शक्तिहीन होता है। मेरे दिन जन्मा व्यक्ति 5वें, 13वें, 16वें एवं 30वें वर्ष अच्छा-बुरा प्रभाव ग्रहण करता है और 85 साल की उम्र पाता है। यदि पूर्ण शुभ हुआ तो 115 वर्ष की आयु देता हूं।

मेरे वार के दिन ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा प्रारंभ, धर्म, न्याय, अनुष्ठान, ग्रहशांति आदि कार्य करने से सफलता प्राप्त होती है। चने की दाल खाना, केसर मिश्रित मिष्ठान खाना व दान देना, पीली रोटी गाय को खिलाना लाभप्रद एवं शुभ होता है। मैं शरीर में मस्तिष्क हूँ।

व्यक्ति की कुंडली में 1, 2, 4, 5, 7, 9 एवं 10वें भाव में शुभ फल देता हूँ। मैं धनु और मीन राशि का स्वामी हूँ। मेरी उच्च राशि कर्क है और नीच राशि मकर है। मैं अन्य ग्रहों से अधिक पांचवीं एवं नौंवी दृष्टि से जिस भाव को देखता हूँ उसके महत्व को बढ़ा देता हूँ। मंगल और सूर्य मेरे मित्र हैं। शुक्र मेरा शत्रु है।

मैं शुक्र हूँ

शुक्र ग्रह बृहस्पति की बातें सुनकर भड़क उठे। उन्होंने उच्च स्वर में कहा – हे बृहस्पति ध्यान से सुनो 'तेरी–मेरी समानता कभी नहीं रही। तुम तो इन छली देवताओं के गुरु हो तुम्हारे अनुयायियों शिष्यों ने तुम्हें साध लिया है और मैं कर्मनिष्ठ वीर बहादुर निर्भीक राक्षसों का गुरु हूँ। यहां बैठकर तो डींगें मार रहे हो। वह दिन भूल गए जब मेरे शिष्य राक्षस राजा रावण के दरबार में तुम एक साधारण मृदंग बजाने वाले थे। उस समय आपकी सारी गुरुता कहां थी? मैं आकाशमंडल में सबसे दैदीप्यमान श्यामल गौर मिश्रित वर्ण वाला ग्रह हूँ। मेरे उदय–अस्त का हिसाब रखा जाता है। सरस्वती स्वरूप, वादन, कला, साहित्य, संगीत का महत्व मेरे द्वारा आंका जाता है। मैं व्यक्तियों में सौन्दर्यप्रियता, श्रृंगार–प्रियता, नाटकीयता, अभिनय कला का समावेश करता हूँ। मैं पुरुषों के शरीर के वीर्य हूँ। पुरुषों का

दांपत्य सुख मेरी कृपा पर निर्भर रहता है। मेरे द्वारा माता का सुख, वाहन सुख, पुरुषत्व का सम्मान देखा जाता है। मैं ही पुरुषों के व्यक्तित्व का विकास करता हूँ। मैं सुगंधी एवं प्रसाधन प्रिय ग्रह हूँ। मेरे दिन जन्मे व्यक्ति देवों के उपासक, कुछ गर्म प्रकृति वाले, चंचल स्वभाव वाले, स्त्रियों के मोहक, रूपवान, गुणवान, प्रबल भाषणकर्ता होते हैं। ऐसा जातक जिस पर मेरी कृपा होती है वह नेता, अभिनेता, नर्तक, संगीतकार, कलाकार बनता है। मेरे कुपित या अशुभ होने पर व्यक्ति नपुंसक, वीर्यहीन, संतानहीन होकर दीन-हीन सा जीवन जीता है। स्त्री सुख ऐसे जातक को समुचित नहीं मिल पाता है। मेरे वार में जन्मा व्यक्ति 20वें वर्ष में शुभाशुभ फल पाकर 60 वर्ष की आयु प्राप्त करता है। मुझे प्रसन्न करने के लिए स्वच्छ सुंदर रहना आवश्यक है। मेरे वार के दिन उपवास रखकर मंत्र जाप और स्तोत्र से, प्रसन्न करने पर अपने जातक का पूर्णहित चिंतन करता हूँ।

मेरी स्वराशि वृष एवं तुला है। उच्च राशि मीन है और नीच राशि कन्या है। शनि मेरा मित्र बृहस्पति मेरा शत्रु है। लग्न 4, 7, 10, 11, 12वें स्थान पर मैं शुभ फल देता हूँ। मेरा प्रिय व्यक्ति शौकीन मिजाज और रहन-सहन में उच्च विचारों का श्रेष्ठ -सम्मानित व्यक्ति होता है।

मैं शनि हूँ

शनिदेव शुक्राचार्य की स्वमुख से स्वकीर्ति सुनकर तिलमिला उठे। उन्होंने समस्त ग्रहों को संबोधित करते हुए कहा – 'तुम सब कोरी बकवास कर रहे हो। तुममें सबसे बड़ा तो मैं ही हूँ। मेरे पिताजी सूर्यदेव भी मेरी ऊंचाई से घबराते हैं, क्योंकि मैं उनसे भी ऊंचा हूँ। सूर्यदेव सारे ग्रहों में प्रबल हैं। उन्हीं से सारे ग्रह प्रकाश पाते हैं, किन्तु मैं उससे भी ज्यादा प्रबल एवं पराक्रमी हूँ, सूर्यदेव भी मेरा लोहा मानते हैं। मेरा रंग भले ही काला है पर शिव के महाकाल का स्वरूप भी काला है। इसीलिए मैं शिव स्वरूप महाकाल का शिष्य हूँ। हर पल सोच-विचार कर सतर्क कदमों से शनैः-शनैः चलने के कारण ही मुझे शनैश्चर कहते हैं। शरीर में लौह तत्व के रूप में विराजमान रहता हूँ। प्राणियों को मैं सुख-दुख भोगने वाला बनाता रहता हूँ। मैं रहस्य विद्या, गूढ़ तत्व ज्ञान, नौकर-चाकर, यश-अपयश तथा शारीरिक बल प्रदान करने वाला हूँ। मैं ही व्यक्ति के लिए मृत्यु का कारण बनता हूँ। मैं न्यायकारी हूं, अपराधी को दंड देने में समर्थ हूँ, त्रलोक में सब मेरे कोप से

डरते हैं। मैं अखंड ब्रह्मांड का सर्वोच्च न्यायाधीश हूं। मेरे प्रभुत्व में तिल, पेट्रोल, डीजल, जलाने का तेल, कोयला, मादक पदार्थ के व्यापार से लाभ होता है। मैं भले ही धीरे-धीरे चलता हूँ, किन्तु लाभ-हानि देने में बहुत ही तेज हूँ। मेरे कारण व्यक्ति को अप्रत्याशित लाभ एवं अप्रत्याशित हानि दोनों ही हो जाती हैं।

मेरे वार यानि शनिवार को जन्म लेने वाला व्यक्ति तीव्र स्वभाव का, दृढ़ प्रतिज्ञ, रंग-रूप में छीण कालिमा लिए हुए, पुरुषत्व से पूर्ण साहसी तथा मन में उत्साही होता है। ऐसा व्यक्ति लंबे तन का अंडाकार मुखमंडल वाला, लंबे काले बालों से परिपूर्ण होता है और मेरे अशुभ होने पर 13वें 29वें वर्ष कष्ट भोगता है और पूरे 100 वर्षों तक जीवित रहता है। यदि मैं उच्च आयु का दाता बना तो 120 वर्ष की आयु देता हूं। मैं सारे जगत को प्रेरणा देता हूँ कि वे कर्म करें और शतायु प्राप्त कर सुख भोगें। इसीलिए मेरी तीसरी साढ़ेसाती का द्वितीय, तृतीय चरण व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है। कोई भी व्यक्ति अपने संपूर्ण जीवन में तीसरी साढ़ेसाती को भोगकर आगे की आयु प्राप्त नहीं कर सकता। भले ही वह देव हो या दानव। मेरे वार शनिवार के दिन गृहप्रवेश, नौकर-चाकर रखना, लौह धातु, मशीनरी तथा कलपुर्जों के साथ तिल, तेल का व्यापार करना शुभ रहता है। बुरे कार्य करना, तेल लगाना, तेल घर पर लाना, लोहा लाना, बीज बोना तथा कोई भी कृषि कार्य कराना अशुभ रहता है। मेरी दो राशियां मकर और कुंभ है। उच्च राशि तुला है नीच राशि मेष है। कलियुग में मेरा महत्व सबसे अधिक है इसीलिए मैं सारे ग्रहों से महत्वपूर्ण और बड़ा हूँ।

हम हैं राहु और केतु

सातों ग्रहों की बातें सुनकर राहु और केतु कैसे शांत रह सकते थे। राहु ने उठकर गरजते हुए कहा – 'तुम सब इन देवराज की सभा में बढ़-चढ़कर बोल रहे हो, लेकिन यह भूल जाते हो कि मेरा नाम राहु है और केतु मेरे शरीर का ही एक अंश है। और मैं एक होते हुए भी दो हूं। हम दोनों सूर्य और चंद्रमा को बारी-बारी से ग्रसित करते रहते हैं। इनके प्रकाश को मंद कर देते हैं।

इन्हें ग्रहण लगाकर हम सारी पृथ्वी पर आतंक पैदा कर देते हैं। कलियुग में सबसे अधिक मेरा ही महत्व होगा। हम दोनों कूटनीति, राजनीति, गुप्तचरी और रहस्यमय कार्यों को शुभत्व देते हैं। हमारी शक्ति का अंदाजा तो बड़े से बड़ा विद्वान, ज्योतिषी तथा देवता भी नहीं लगा पाते। कलियुगी राजनीति में मेरा महत्व सबसे अधिक है। मेरे शुभत्व से व्यक्ति छोटे से छोटा व्यक्ति भी कल्पनातीत बढ़ता है और उच्च शिखर पर पहुंच जाता है किन्तु बिना हमारा रहस्य जाने देवज्ञयों ने भी

यह कह दिया कि शनिव्रत राहु, मंगलव्रत केतु-अर्थात शनि के समान राहु का फल जाने और मंगल के समान केतु का फल जानें, परन्तु यह सत्य नहीं है।

कलियुग तो हमारा युग है क्योंकि रहस्य विद्याओं के साथ इलेक्ट्रानिक्स का सबसे बड़ा महत्व इसी युग में होगा। हमारी शुभता से ही लोग अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर सफल होंगे। हम जीवन और मरण का संघर्ष कराते हैं। हमारी रहस्यात्मकता न कोई समझ पाया है न समझ पाएगा। अत: हम दोनों राहु और केतु जिसे छाया ग्रह कहकर लोगों ने टाल दिया है, वही हम सबसे बड़े और महान हैं।

हमारे राहुकाल में कोई शुभ काम करना व्यक्ति के लिए असफलता सूचक होता है। कुंडली में हम दोनों मिलकर कालसर्प योग बनाते हैं। जिसकी कुंडली में हमारा कालसर्प योग पड़ जाता है वह राजा से रंक और रंक से राजा बन जाता है। बड़े-बड़े विद्वान हमारे इस योग पर चकित होते हैं। अत: यह सभी, देवों की सभा हमें महत्व दे या न दे, परन्तु हम स्वयं घोषणा करते हैं कि हम दोनों ही सारे ग्रहों से बड़े और महान हैं।

देवसभा और देवेन्द्र ने नौ ग्रहों की बातें सुनीं तो वे असमंजस में पड़ गए। उन्होंने इन ग्रहों से कहा - 'आप सबका महत्व अपनी-अपनी जगह महान है, किन्तु कौन कितना महान और महत्वपूर्ण है, इसका निर्णय मैं अपने गुणी मंत्रियों और देवलोक के योग्य देवताओं से परामर्श करके एक सप्ताह बाद बताऊंगा। आप सब एक सप्ताह बाद पधारें। आज आप सब विदा लें।'

देवेन्द्र की बात सुनकर राहु भड़क उठा। वह अपने आसन से उठकर तेज स्वर से बोला वाह! अच्छा निर्णय सुनाया - 'देवों की सभा में हमें कभी न्याय मिला है जो आज मिलेगा। यह शक्तिहीन, कर्महीन, यज्ञ भाग का सुख भोगने वाले देवताओं ने हमेशा हमारे साथ छल किया है। मैं सागर मंथन की घटना को भूला नहीं हूँ।

इतना कहकर क्रोधावेश में राहु-केतु सभा से बाहर चले गए। उनके जाने के बाद अन्य सातों ग्रह एक सप्ताह बाद आने का कहकर विदा हो गए।

इन्द्र चिंतित हो गए। उन्होंने अपने मंत्रियों से परामर्श किया तो उन्होंने राय दी कि इस विषय में धर्मराज से परामर्श किया जाए। इन्द्र को यह सुझाव अच्छा लगा।

अंततः धर्मराज से परामर्श किया गया। धर्मराज ने जो सुझाव दिया वह देवेन्द्र की समझ में आ गया। धर्मराज के परामर्श के अनुसार देवेन्द्र ने अपनी सभा में नौ ग्रहों के स्वागत की तैयारी प्रारंभ कर दी।

एक सप्ताह बाद नौ ग्रह आए और देवेन्द्र से अपना निर्णय सुनाने को कहा। देवेन्द्र ने उनसे विनम्र निवेदन किया - 'आप लोगों के लिए हमने नौ आसन बनवाए हैं। कृपया अपनी-अपनी पसंद के आसनों पर विराजमान हो जाएं। नवग्रहों ने सभा कक्ष में नौ दिव्य आसन देखे और अपने-अपने मनपसंद आसन पर स्वेच्छा से विराजमान हो गए।

सूर्यदेव सोने से बने माणिक्य और लाल जड़े, रक्तवर्ण के मखमली गद्दियों वाले आसन पर विराजमान हो गए। वह आसन ऊंचा भी था। चंद्रमा चांदी के बने मोतियों जड़े, सफेद गद्दी वाले आसन पर बैठे।

मंगलदेव मूंगे से जड़े सोने के और सिंदूरी गद्दी वाले आसन पर बैठे। बुधदेव सोने की धातु से बने हरे-हरे पन्ने जड़े, हरे रंग की मखमली गद्दी वाले आसन पर स्वयं विराजमान हो गए।

बृहस्पतिदेव सोने से बने पुखराज, पीलिया, सुनहरा जैसे श्रेष्ठ रत्नों से जड़े आसन पर विराजमान हो गए। शुक्रदेव हीरे से जड़े प्लेटिनम से बने सुंदर आसन पर बैठे, शनिदेव लोहे के बने नीलकांत मणि से जड़े आसन पर विराजमान हुए। राहुदेव गोमेद जड़े अष्ट धातु के आसन पर बैठे तथा केतुदेव लहसुनिया जड़े पंचधातु के आसन पर बैठे।

समस्त नौ ग्रहों के आसन ग्रहण करने के बाद इन्द्र की व्यवस्था के अनुसार उन्हें खाने-पीने की सामग्री ग्रहों के मनोकूल दी गई। स्वागत से सभी ग्रह प्रसन्न हो गए। फिर भी उन्होंने इंद्र से पूछा - 'देवेन्द्र! आप यह निर्णय दें कि हममें कौन सबसे बड़ा है, महान है?'

देवेन्द्र ने मुस्कुराकर कहा - 'निर्णय मुझे नहीं देना है, निर्णय तो आप सबने अपने आप कर लिया। कृपया अपने-अपने आसन देखिए।'

सबने अपने-अपने आसन देखे। फिर अन्य के आसन देखे। निर्णय हो चुका था कि - सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु व केतु क्रम से बड़े हैं। सबसे महान सूर्य ग्रह थे इसलिए उनका आसन भी ऊंचा था।

राहु यह कहते हुए सभा छोड़कर चला गया कि - मैं तो जानता ही था कि यह देवेन्द्र हमेशा की तरह इस बार भी हमारे साथ छल करेगा।' केतु भी उसी के साथ पैर पटकता हुआ

देव सभा से बाहर चला गया।

शनि देव अपने लिए लोहे का आसन देखकर कुपित हो गए। वे क्रोध से आंखें लाल करके बोले – 'हे इन्द्र! तुमने इन आसनों के माध्यम से हमें बड़ा-छोटा दर्शाया है। मैं तुम्हें शाप देता हूँ कि तुम सदैव अपने आसन के लिए चिंतित रहोगे और छोटी-छोटी बात पर तुम्हें तुम्हारा आसन डोलता नजर आएगा।'

कहते हैं तभी से इन्द्र का आसन डोलता रहता है। जब भी कोई मानव, देव-दानव पूजा या तप करता है तब इन्द्र उसकी पूजा और तप का फल चुराने के लिए पहुंच जाते हैं। इसलिए पूजन से उठने से पूर्व अपने आसन को प्रणाम करके उठना चाहिए और आसन उठा लेना चाहिए या मोड़ देना चाहिए।

विशेष

आजकल प्रचलन में रत्नों द्वारा ग्रह शांति के संबंध में प्राचीन ज्योतिष धर्म ग्रन्थों में कहीं पर भी कोई एक श्लोक द्वारा उल्लेख नहीं है। इस विषय में हम सभी का दायित्व है कि ज्योतिष से हटकर विषय रत्न, आभूषण आदि का प्रचार-प्रसार करने से बचें। इसी में ज्योतिष शास्त्र एवं हम सभी की भलाई है।

विंसोतरी दशा में नवग्रहों के दशाफल

सूर्य दशा 6 वर्ष

उद्विग्न चित्त परिखेदित वित्तहासम, क्लेश प्रवासगद पीडमहभिघातम।
संक्षोभिता स्वजन बन्धु वियोग मेति, सौरी दशा राजकुलाभिघातम।।

सूर्य की दशा मे परदेश गमन, राज्य कार्य मे पदोन्नति, धन लाभ, व्यापार से आमदनी मे वृद्धि, ख्याति लाभ, धर्म मे अभिरुचि होती है। यदि सूर्य नीच राशि गत हो या पापयुत या पापदृष्ट हो, ऋण, पीड़ा, प्रियजनों का वियोग, कष्ट, राज्य से भय, कलह, रोगादि (मष्तिष्क पीड़ा, शूल, उदर पीड़ा, नेत्र रोग) अशुभ फल होते है।

यदि सूर्य बलवान और अनुकूल हो, तो आत्मा का विकास, आध्यात्म प्राप्ति, शानदार जीवन, लम्बी दूरी की यात्रा, अच्छा लाभांश उत्पन्न करने वाले संघर्ष या विरोध, प्रतिष्ठा और पद मे उन्नति, व्यापार से लाभ, पिता से लाभ या पिता को लाभ होता है।

यदि सूर्य बलहीन अथवा पीड़ित हो, तो आतंरिक विकृति, मानसिक और शारीरिक कौशल मे पतन, शारीरिक कष्ट, प्रतिष्ठा और पद मे अवनति, सरकार की नाराजी, पिता से पीड़ित या पिता को रोग या पिता की मृत्यु होती है।

बृहद्पाराशर होरा शास्त्र अनुसार यदि सूर्य स्वगृही, उच्च, केंद्र स्थान, लाभ भाव, नवमेश (धर्मेश) या दशमेश (कर्मेश) के साथ, वर्ग मे बलवान हो, तो धनार्जन, सरकार से महान सौहार्द्र और सम्मान होता है। जातक को पंचम भाव के स्वामी

(पुत्रेश) के साथ होने पर पुत्र की प्राप्ति होती है। धनेश से युत होने पर सम्पत्ति की प्राप्ति, बंधु भाव के स्वामी (चतुर्थ स्थान) से युत होने पर वाहन सुख और आनन्द होता है। सूर्य की दशा मे जातक को सेनाध्यक्ष, राजा से सभी प्रकार की खुशी का आनंद प्राप्त होता है। इस प्रकार बलवान और अनुकूल सूर्य की दशा मे वस्त्राभूषण, सम्पत्ति, वाहन, सभी प्रकार की कृषि उपज, सम्मान प्राप्त होता है।

यदि सूर्य नीच राशि, शत्रु राशि, अरि या रन्ध्र या व्यय स्थान, अशुभ ग्रह से युत या दृष्ट, अरि या रन्ध्र या व्यय के स्वामी ग्रह से युत हो, तो चिंताऐ, धन हानि, सरकार से दंड, अपमान, स्वजनो से कष्ट, घर मे अशुभ घटनाऐ, पिता को कष्ट, पैतृक और मातृक चाचाओ को कष्ट, अकारण ही दूसरो से तनाव और शत्रुता के सम्बन्ध होते है।

(बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अनुसार भावो के नाम : 1 प्रथम = तनु, 2 द्वितीय = धन, 3 तृतीय = सहज, 4 चतुर्थ = बंधु, 5 पंचम = पुत्र, 6 षष्ठ = अरि, 7 सप्तम = युवती, 8 अष्टम = रन्ध्र, 9 नवम = धर्म, 10 दशम = कर्म, 11 एकादश = लाभ, 12 द्वादश = व्यय।)

फलदीपिका (मंत्रेश्वर) अनुसार यदि सूर्य शुभ हो, तो सूर्य की दशा मे क्रूर कर्मो के माध्यम से धन अर्जन, यात्रा और झगड़े, पहाड़ो पर घूमना, उद्योगो का रखरखाव, उद्यम मे सफलता, स्वभाव और प्रकृति (मनोवृत्ति) मे कठोरता, वास्तविकता, कर्तव्य भक्ति, खुशी होती है।

यदि सूर्य अशुभ हो, तो लड़ाई-झगडे, राजा का अचानक कोप, रिश्तेदारो मे रोग, जातक व्यर्थ घूमने वाला, तीव्र पीड़ा,

छुपे धन से खतरा, आग लगने का भय, स्त्री–पुत्र को कष्ट होता है।

सूर्य मेष राशि मे हो, तो नेत्र रोग, धन हानि. राजभय, नाना प्रकार के कष्ट; वृषभ मे हो, तो स्त्री पुत्र के सुख से हीन, हृदय और नेत्र रोगी, मित्रो से विरोध; मिथुन मे हो, तो अन्न–धन युक्त, शास्त्र – काव्य से आनंद, विलास ; कर्क मे हो, तो राज सम्मान, धन प्राप्ति, माता–पिता व बन्धुवर्ग से पृथकता, वातजन्य रोग; सिंह मे हो, तो राजमान्य, उच्च पदासीन, प्रसन्न; कन्या मे हो, तो कन्या रत्न की प्राप्ति, धन लाभ, धर्म मे अभिरुचि होती है।

सूर्य तुला राशि मे हो, तो स्त्री–पुत्र चिंता, परदेश यात्राऐ, प्रदेश के अनेक प्रसंग; वृश्चिक मे हो, तो प्रताप मे वृद्धि, ख्याति, विष अग्नि से पीड़ा; धनु मे हो, तो राज्य से प्रतिष्ठा, विद्या प्राप्ति; मकर मे हो, तो स्त्री–पुत्र की चिंता, धन आदि की चिंता, चिंतातुर, त्रिदोष विकार, पर कार्यो से प्रेम; कुंभ मे हो, तो पिशुनता, हृदय रोग, अल्प धन, कुटुम्बियों से विरोध और मीन मे हो, तो वाहन लाभ, प्रतिष्ठा मे वृद्धि, धनमान की प्राप्ति, विषम ज्वर होते है।

चंद्र दशा फल - 10 वर्ष

सम्यग्विविभूति वरवाहन क्षत्रयानम, क्षेमग्र ताप बल वीर सुखानी तस्य।
मिष्ठान पान शयनाशन भोजनानी, चंद्रो ददाति धन कंचन भूमि लाभम।

चंद्र की दशा साधारणतया सौभाग्य सूचक रहती है। पूर्ण, उच्च, शुभ ग्रह से युत चन्द्रमा हो, तो उसकी दशा मे अनेक सम्मान, धारासभा (विधानसभा, राजयसभा, लोकसभा, विधान परिषद्) का सदस्य, चुनाव मे विजयी, विद्या धन आदि प्राप्त

करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा नीच, शत्रु राशि, पापमध्य मे हो, तो कलह, क्रूरता, क्रूर कार्यो से प्रसन्नता, शूल, सिरदर्द, धननाश, मानसिक आघात, रोग, शोक, चिंता आदि होते है।

यदि चन्द्रमा बलवान और अनुकूल स्थति मे हो. तो प्रसन्न हृदय, सुखी और तेज दिमाग, सूक्ष्म–खुशी और सुविधा का आनंद लेने वाला होता है। यदि चन्द्रमा बलहीन और पीड़ित हो, तो ख़राब स्वास्थ्य, आलस्य, निष्क्रियता, नौकरी खोना या पदावनति, स्त्री से झगड़ा, माता को रोग या माता की मृत्यु होती है।

बृहत्पाराशर होरा शाश्त्र अनुसार चन्द्रमा की दशा प्रारम्भ से अंत तक यदि चंद्र उच्च, स्वराशि, केंद्र या लाभ या धर्म या पुत्र भाव मे हो, शुभग्रह से युत या दृष्ट, बलवान, धर्म या कर्म या बंधु भाव के स्वामी से युत हो, तो समृद्धि और प्रताप, सौभाग्य, धनागम, घर मे मांगलिक उत्सव, भाग्योदय, सरकार मे उच्चपद, वाहन, वस्त्र, शिशु जन्म, पशु होते है। यदि ऐसा चंद्र धन भाव मे हो तो असाधारण विपुल धन और विलासता होती है।

यदि चन्द्रमा क्षीण, नीच हो तो उसकी दशा मे धन हानि होती है। यदि चंद्र सहज भाव मे हो, तो खुशिया आती–जाती रहती है। यदि चंद्र अशुभ ग्रहो से युत हो, तो मूर्खता, मानसिक तनाव, कर्मचारियो और माता से परेशानी, धन की हानि होती है। यदि क्षीण चंद्र अरि या रंध्र या व्यय भाव मे हो या अशुभ ग्रहो से युत हो, तो सरकार से शत्रुता पूर्ण सम्बन्ध, धन हानि माँ को इसी तरह के दुष्प्रभाव से परेशानी होती है। यदि बलवान चंद्र अरि या रंध्र या व्यय भाव मे हो, तो क्लेश और अच्छाइया आती जाती रहती है।

फलदीपिका (मन्त्रेश्वर) अनुसार यदि चन्द्रमा पूर्ण बलवान

हो, तो मानसिक शांति, सभी उद्यमो मे सफलता, संपत्ति का अधिग्रहण, अच्छा भोजन, पत्नी–पुत्र की प्राप्ति, वस्त्राभूषण, कृषि भूमि की प्राप्ति और ब्राह्मणों की भक्ति चंद्र दशा के प्रभाव होते है। शुक्ल पक्ष की एकम से दशमी तक चन्द्रमा मध्यम बली होता है, इस अवधि वाले चंद्र की दशा के प्रभाव भी मध्यम होगे। शुक्ल पक्ष की एकादशी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा पूर्ण बलि होता है, इस अवधि वाले चंद्र की दशा के प्रभाव भी प्रबल व अच्छे होगे। कृष्ण पक्ष की षष्ठी से अमावस्या तक चन्द्रमा निरंतर बलहीन होता जाता है, इस अवधि वाले चंद्र की दशा के प्रभाव भी कमजोर होगे।

चंद्र मेष राशि मे हो, तो स्त्री सुख, विदेश से प्रीति, कलह, सिर रोग; वृषभ मे हो, तो धन और वाहन लाभ, स्त्री से सुख, माता की मृत्यु, पिता को कष्ट; मिथुन मे हो, तो देशांतर गमन, संपत्ति लाभ; कर्क मे हो, तो गुप्त रोग, योन रोग, धन धान्य मे वृद्धि, कला प्रेम; सिंह मे हो, तो बुद्धिमान, सम्मान, प्रतिष्ठा, धन लाभ; कन्या राशि मे हो, तो विदेश गमन, महिला प्रेम, स्त्री प्राप्ति, काव्य प्रेम, धनागम होता है।

चंद्र तुला राशि मे हो, तो विरोध, चिंता, अपमान, व्यापार से धन लाभ, मर्म स्थान मे रोग; वृश्चिक मे हो, तो मानसिक चिंता, रोग, साधारण धनलाभ या धनहानि, धर्म हानि; धनु राशि मे हो, तो धन नाश, आर्थिक हानि, वाहन लाभ; मकर राशि मे हो, तो स्त्री–पुत्र–धन प्राप्ति, उन्माद या वायु रोग से कष्ट; कुम्भ मे हो, तो व्यसन, ऋण, नाभि के ऊपर और नीचे पीड़ा, नेत्र–दन्त रोग और मीन राशि मे चंद्र हो, तो अर्थागम, धन संग्रह, पुत्र लाभ और शत्रु नाश आदि होता है।

शास्त्राभिघातो नृप्तेश्य पीड़ा चोरयाग्नि रोगाश्च धनष्यहानि,
कार्याभिघातस्य नरस्य दैन्यं भवेत दशायाम धरणि सुतस्य।।

मंगल की दशा धन योग बनाती है, परन्तु यह शुभकार्यो की अपेक्षा क्रूरकार्यो से ही धनागम योग बनाती है। इसकी दशा मे गृह-भूमि सम्बन्धी मामले, शस्त्र-चोर भय, शस्त्र-शत्रु तथा झगडे विवाद से अर्थ लाभ होता है।

यदि मंगल उच्च या स्वग्रही या मूलत्रिकोणगत या केन्द्रगत या त्रिकोणस्थ हो, तो उसकी दशा मे यश लाभ, स्त्री-पुत्र का सुख, साहस, धन लाभ, गृह-भूमि की प्राप्ति, कृषि से लाभ, मानसिक शांति, आय के अनेक स्त्रोत होते है। यदि मंगल वक्री, अस्त, नीच, का हो तो पित्त प्रकोप, रुधिर रोग, पक्षाघात, मूर्च्छा रोग होते रहते है। पत्नी से कलह, भाइयो से वैमनस्य, अधिकारियो से उग्र मतभेद, नई-नई चिन्ता होती है।

यदि मंगल बलवान और अनुकूल स्थिति मे हो, तो भाइयो से या भाइयो के द्वारा लाभ, सेना मे प्रवेश या पदोन्नति, भूमि लाभ, अच्छा स्वास्थ्य, आशावादी, साहसी, दृढ़, पारा मिलटरी या पुलिस मे सेवारत होता है। यदि मंगल बलहीन और पीड़ित हो, तो गिरना, घाव, रक्तल्पता, दण्डित, झगड़ालू, कटुभाषी, शत्रु बनाने वाला, नफ़रत करने वाला, मुकदमेबाज होता है।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अनुसार मंगल की दशा मे यदि मंगल उच्च, मूलत्रिकोण, स्वगृही, केंद्र या धन या लाभ भाव मे बलवान हो या शुभ नवांश मे या शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो, तो राज्य की प्राप्ति (उच्च प्रशासनिक पद या सरकार मे सुदृढ़

राजनैतिक स्थति, धन व कृषि भूमि का अर्जन, सरकार द्वारा मान्यता) विदेशो से धन, वस्त्राभूषण, वाहन होते है। भाइयो से सुख व मधुर सम्बन्ध होते है। यदि बलवान मंगल केंद्र या सहज (तृतीय) भाव में हो, तो वीरता से धनार्जन, शत्रु पराजय, पत्नी और बच्चो से खुशी होती है। हलाकि दशा के अंत में कुछ प्रतिकूल प्रभावो की सम्भावना रहती है। यदि मंगल नीच, बलहीन या अशुभ भाव या अशुभ ग्रहो से युत या दृष्ट हो, तो धननाश, संकट और उपरोक्त प्रभाव प्रतिकूल होते है।

फलदीपिका (मंत्रेश्वर) अनुसार आग और झगडे आदि से धनाजर्न, मिथ्या प्रशासन से धन लाभ, धोखाधड़ी और क्रूर कार्य, हमेशा पित्त विकारो से ग्रस्त, ताप, रक्त अशुद्धता, निम्न वर्ग की महिलाओ के साथ साजिश, अपनी पत्नी, बच्चो, रिश्तेदारो और बुजर्गो से झगड़ा और इसके कारण दु:ख, दूसरो के भाग्य का आनंद जैसे प्रभाव अनुभव मे मंगल की दशा मे आते है।

मंगल मेष राशि मे हो, तो उसकी दशा मे धन लाभ, ख्याति, अग्नि पीड़ा, गृह-भूमि प्राप्ति; वृषभ मे हो, तो रोग, अन्य से धन लाभ, परोपकारी; मिथुन मे हो, तो विदेश वासी, कुटिल, खर्चीला, पित्त और वायु विकार, कर्ण रोग; कर्क में हो, तो धनयुक्त, स्त्री-पुत्र से दूर निवास, क्लेश; सिंह मे हो, तो शासन से लाभ, राज्य से धनागम, शस्त्राग्नि पीड़ा, धन व्यय और कन्या मे हो, तो पुत्र, भूमि, धन-धान्य से भरपूर होता है।

तुला राशि मे मंगल हो, तो स्त्री हीन, उत्सव हीन, अधिक झंझट, क्लेश; वृश्चिक मे हो, तो धन-धान्य से परिपूर्ण, अग्नि व शस्त्र से पीड़ा; धनु मे हो, तो विजय लाभ, धनागम, राजमान; मकर मे हो, तो अधिकार प्राप्त, स्वर्ण-रत्न लाभ, कार्यसिद्धि;

कुम्भ मे हो तो आचार हीन, दरिद्र, रोग, चिंताए और मीन राशि मे हो, तो ऋण, विसूचिका रोग, चिंता, हानि, खुजली आदि रोग होते है।

राहु दशा फल - 18 वर्ष

बुद्धिं विहीन मतिविभ्रम सर्व शून्यम, विश्वं भयाति विषमा पद कार्य तुल्यम।
व्याधिं वियोग धन हानि विषाणि चैव, राहोर्दशा जीवित संशयं च।।

राहु की दशा सामान्यतया कष्ट दायक मानते है। कुछ मत तो 18 वर्षो मे छठा, आठवा वर्ष अनिष्टकारी मानते है।उच्च का राहु हो, तो धन-संपत्ति का लाभ, विजय, उच्चपद आदि की प्राप्ति होती है। लघु पाराशरी अनुसार राहु-केतु छाया ग्रह होने से भाव अनुसार व अन्य ग्रह से युति अनुसार फल देते है। लघु पाराशरी अनुसार ही राहु-केतु केंद्र या त्रिकोण मे हो या केंद्र, त्रिकोण के स्वामियो से युत हो, तो योगकारक होने से अपनी दशा, अन्तर्दशा मे अत्यंत शुभ फल देते है।

यदि राहु अनुकूल हो, तो सत्तारूढ़ शक्तियो की प्राप्ति या झूठ के सहारे शासकीय पक्षो मे वृद्धि, चालाक, बेईमानी से धन लाभ ज्यादा अर्जित करना, रहवास बदलना होता है। यदि राहु प्रतिकूल हो, तो अनेक प्रकार की हानिया, सर्पदंश, दिमागी विघटन, भ्रम, दृष्टिभ्रम, अस्थमा और एक्जिमा आदि होते है। यह शिक्षा और तरक्की के लिये सबसे ख़राब दशा है जिसमे व्यवधान आते है या शिक्षा खंडित होती है।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अनुसार राहु की उच्च राशि वृषभ और केतु की उच्च राशि वृश्चिक, राहु-केतु की मूलत्रिकोण राशि मिथुन व धनु, राहु-केतु की स्वराशि कुम्भ व वृश्चिक,

(कुछ महर्षि अनुसार कन्या और मीन) होती है। यदि राहु उच्च, मूलत्रिकोण या स्वगृही (कुम्भ या कन्या) हो, तो धनार्जन व कृषि उपज से महा खुशी, मित्रो और सरकार की सहायता से वाहन की प्राप्ति, नये भवन (घर) का निर्माण, पुत्र जन्म, धार्मिक झुकाव, विदेशी सरकार से मान्यता, धनार्जन, वस्त्राभूषण आदि होते है। राहु शुभ ग्रह से दृष्ट, युत, या शुभ राशि या तनु या बंधु या युवती या कर्म या लाभ या सहज भाव मे हो, तो उसकी दशा मे सरकार के उपकार से सभी प्रकार के आराम, विदेशी सरकार या सम्प्रभु और घर के सौहार्द्र के माध्यम से संपत्ति की प्राप्ति होती है।

यदि राहु रन्ध्र या व्यय भाव मे हो, तो राहु दशा मे विपत्ति और परेशानिया होती है। यदि राहु अशुभ ग्रह या मारक ग्रह या नीच राशि मे हो, तो राहु की दशा मे प्रतिष्ठा की हानि, आवासीय घर का विनास, मानसिक संताप, पत्नी और बच्चो को कष्ट, दुर्भाग्यवश ख़राब भोजन आदि फल होते है। राहु की दशा के प्रारम्भ मे धनहानि, स्वदेश मे कुछ आर्थिक लाभ व राहत और दशा के अंत मे परेशानी व चिंताए होती है।

फलदीपिका (मन्त्रेश्वर) अनुसार राहु की दशा मे राजा, चोर, अग्नि, शस्त्र, जहर का खतरा, बच्चो से मानसिक तनाव, भाइयो की हानि, नीचजाति के लोगो से अपमान, बेइज्जती, सभी उद्यमो मे हानि और असफलता, पदावनति होती है। यदि राहु शुभ ग्रह से युत या शुभ स्थान (भाव) मे हो, तो राजा की तरह वैभवशाली, उद्यमो में सफल, सुखी जीवन, अतुल सम्पदा, विश्व प्रसिद्ध होता है। यदि राहु कन्या, मीन, वृश्चिक में हो तो अपने दशा काल मे खुशी, प्रतिष्ठा, जमीन का स्वामित्व वाहन, सेवक

देता है परन्तु यह सब दशा समाप्त होने पर नष्ट हो जाता है। प्रभाव जैसे शत्रु से खतरा, चोरी, राजा का क्रोध, शस्त्र आघात का भय, गर्मी के रोग, पारिवारिक कलंक, अग्नि भय, गंभीर अपराधो के कारण मूल स्थान से निर्वासन फल भी होते है।

मन्त्रेश्वर ने उपरोक्त फल ग्रहो के सामान्य क्रम अनुसार बताये है। विंशोत्तरी ग्रह क्रम अनुसार राहु दशा काल मे स्वभाव मे दुष्ट बनना, गंभीर रोग से पीड़ित होना, जातक की पत्नी और संतान का नष्ट होना, विष का भय या खतरा, शत्रु से कष्ट या परेशानी, नेत्र और हृदय रोग, मित्र, कृषि कर्मी, राजा से वैर अनुभव मे आते है।

मेष राशि मे राहु हो, तो उसकी दशा मे अर्थलाभ, साधारण सफलता, घरेलू झगडे, भाइयो से विरोध; वृषभ मे हो, तो राज्य से लाभ, कष्ट, अधिकार प्राप्ति, सहिष्णुता, सफलता; मिथुन मे हो. तो दशा प्रारम्भ मे कष्ट, मध्य मे सुख; कर्क मे हो, तो अर्थलाभ, पुत्रलाभ, कार्य प्रारम्भ करना, धन संचित करना; सिंह मे हो, तो प्रेम, ईर्ष्या, रोग, सम्मान, कार्यो मे सफलता और कन्या राशि मे हो, तो मध्यम वर्ग के लोगो से लाभ, व्यापार से लाभ, नीच कार्यो से प्रेम, संतोष होता है।

तुला राशि मे राहु हो, तो झंझट, अचानक कष्ट, बंधु-बांधवो से क्लेश, धन लाभ, यश और प्रतिष्ठा मे वृद्धि; वृश्चिक मे हो, तो नीच कार्यो में रत, शत्रुओ से हानि, आर्थिक कष्ट; धनु मे हो, तो यश लाभ, धारा सभाओ मे प्रतिष्ठा, उच्चपद की प्राप्ति; मकर मे हो, तो सिर रोग, वात रोग आर्थिक संकट; कुम्भ मे हो तो धन लाभ, व्यापार मे साधारण लाभ, विजय और मीन राशि मे राहु हो, तो विरोध, झगड़ा, रोग, अल्पलाभ आदि फल होते है।

गुरु दशा फल - 16 वर्ष

नृपप्रसादं धन-धान्य सौख्यं कलत्रमंत्रादि सुरत्न लाभाम्।
नैरोग्यता शत्रुजयं च सौख्यं गुरोर्दशा वांछित मातनोति।।

गुरु की दशा जीवन में श्रेष्ट ही रहती है। गुरु दशा काल मे ज्ञान लाभ, धन-अस्त्र-वाहन लाभ, परीक्षा-साक्षात्कार मे सफलता, राजयकार्य मे लाभ, देवार्चना मे सलग्नता, भोग, समाज मे सम्मान, राज्य से पुरस्कार, अधिकारियो से संपर्क, धार्मिक यज्ञादि कर्म आदि फल होते है। यदि गुरु नीच, अस्त, वक्री हो, तो कण्ठरोग, गुल्मरोग, पिल्हारोग, असफलता आदि फल होते है।

यदि गुरु बलवान, शुभ भाव और योग कारक हो, तो अध्ययन के प्रति झुकाव, ज्ञान मे वृद्धि होती है। यदि गुरु की दशा आयु की मध्य अवस्था मे आती है, तो धनागम, पुत्र की प्राप्ति, तीर्थ यात्रा, शुभ उत्सव होते है। यदि गुरु की दशा आयु की अंतिम अवस्था मे आती है, तो बेहतर आय और वित्त होता है। यदि गुरु प्रतिकूल या पीड़ित हो, तो अधुरी शिक्षा, असफलता, प्रतिष्ठा गिरने से दुर्गति, ख़राब स्वास्थ्य, दरिद्रता, बुरे कर्म, निराशा, पुत्र या पोते को पीड़ा होती है।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अनुसार गुरु महा शुभ और देवताओ का शिक्षक यदि उच्च, स्वगृही, मूलत्रिकोण, कर्म या पुत्र या धर्म भाव या स्वनवांश या उच्च नवांश मे हो, तो अपने दशा काल मे साम्राज्य अभिग्रहण, अत्यंत सुविधा, शासन से मान्यता, वस्त्राभूषण और वाहन प्राप्ति, देव-ब्राह्मण की भक्ति, पत्नी और संतान से खुशी, धार्मिक बलिदान (यज्ञ, चढ़ावा) के प्रदर्शन मे सफलता होती है।

यदि गुरु नीच, अस्त, अशुभ ग्रहो से युत या अरि या रंध्र भाव मे हो, तो उसकी दशा मे रहवास परिसर का नाश, तनाव, संतान को पीड़ा, पशु हानि, तीर्थ हानि होती है। दशा प्रारम्भ मे कुछ प्रतिकूल प्रभाव देती है बाद मे अनुकूल प्रभाव अर्थ लाभ, सरकार से मान्यता और पुरस्कार आदि फल होते है।

फलदीपिका (मंत्रेश्वर) अनुसार गुरु की दशा मे धर्मिक मामलो मे भागीदारी, शिशु जन्म या शिशु से खुशी, राजा द्वारा सम्मान, प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा प्रशंसा, हाथी-घोड़े व अन्य वाहन की प्राप्ति, इच्छाओ की पूर्ति, पत्नी और बच्चो से स्नेहपूर्ण आत्मीय सम्बन्ध, मित्रो से मिलन आदि फल अनुभव मे आते है।

मेष राशि मे गुरु हो, तो उसकी दशा मे अफसरी अर्थात अधिकार पद, विद्या, स्त्री, पुत्र, धन, सम्मान आदि का लाभ; वृषभ राशि मे हो, तो रोग, विदेश मे निवास, धनहानि; मिथुन मे हो, तो क्लेश, विरोध, धननाश; कर्क मे हो, तो राज्य से लाभ, ऐश्वर्यलाभ, ख्यातिलाभ, मित्रता, उचपद, सेवावृत्ति; सिंह मे हो, तो राजा से मान, स्त्री-पुत्र-बंधु लाभ, हर्ष, धन-धान्य पूर्ण; कन्या मे हो, तो स्त्री के आश्रय से धनलाभ, शासन मे योगदान, भ्रमण या देशाटन, विवाद, कलह आदि फल होते है।

तुला राशि मे गुरु हो, तो फोड़ा-फुंशी, विवेक हीनता, अपमान, शत्रुता; वृश्चिक मे हो, तो पुत्रलाभ, निरोगता, धनलाभ, पूर्ण ऋण अदा होना; धनु राशि मे हो, तो मंत्री, धारासभा सदस्य (लोकसभा, विधानसभा, राज्यसभा) उच्च पदासीन, अल्पलाभ; मकर मे हो, तो आर्थिक कष्ट, गुह्य स्थानो मे रोग; कुम्भ मे हो, तो राज्य से सम्मान, धारासभा सदस्य, विद्यालाभ, साधारण धनागम तथा साधारण आर्थिक सुख और मीन राशि मे

हो, तो विद्या, धन, स्त्री-पुत्र अदि से संपन्न, प्रसन्नता, सुख आदि फल होते है।

शनि दशा फल 19 वर्ष

मिथ्यापवाद वधबन्धु निराशयंचा मित्राति बैर, धन-धान्य कलत्र चिंताम्।
आशा निराशकृत निष्फल सर्व शून्यं कुर्यात शनैश्चर्दशा शततं नराणाम।।

राजनैतिक कार्यो मे शनि की दशा सहायक होती है। बलवान शनि की दशा मे जातक को धन, जन, सवारी, भ्रमण, प्रताप, कीर्ति, रोग, क्रय-विक्रय से लाभ, भाग्योदय आदि फल होते है। नीच, अस्त या वक्री शनि की दशा मे आलस्य, निद्रा, त्रिदोष के रोग, व्यभिचार, स्त्री प्रसंग से विरक्ति, चर्म रोग, अनैतिकता, बेईमानी आदि होते है।

यदि शनि अनुकूल है, तो अपने सख्त प्रायसो और कठिन मेहनत से सेवा मे उन्नति करता है, शनि द्वारा संकेतित चीजो से लाभ प्राप्त करता है और विरासत पाता है। किन्तु शनि प्रतिकूल हो, तो कुपोषण आदि के कारण रोग ग्रस्त, गरीबी, मुकदमा, झगड़ा, वृद्धो से अनबन, परिवार या निकट सम्बन्ध मे मृत्यु, प्रगति की राह मे रूकावट और बाधा, जीवन मे चारो ओर संकट होता है।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अनुसार शनि जो सब ग्रहो मे सबसे कमजोर और निचला माना जाता है यदि उच्च, स्वगृही, मूलत्रिकोण, मित्र राशि, स्वनवांश या उच्च नवांश या सहज या लाभ भाव मे हो, तो शनि दशा काल मे शासन से मान्यता, समृद्धि और महिमा, नाम और प्रसिद्धि, शिक्षा के क्षेत्र मे सफलता, आभूषण और वाहनादि का अर्जन, धन लाभ, सम्पत्ति

की प्राप्ति, सरकार से समर्थन, सेना अध्यक्ष जैसा उच्च पद, देवी लक्ष्मी की उदारता, राज्य की प्राप्ति, शिशु जन्म होता है।

यदि शनि अरि या रंध्र या व्यय भाव मे हो, नीच या अस्त हो, तो उसकी दशा मे जहर से दुष्प्रभाव, शस्त्राघात, पिता से विछोह, पत्नी और बच्चो को कष्ट, सरकार की नाराजी से आपदा, जेल इत्यादि होते है। यदि शनि शुभ ग्रह से युत या दृष्ट, केंद्र या त्रिकोण, धनु या मीन मे हो, तो राज्य, वाहन, वस्त्र का अर्जन (अधिग्रहण) होता है ।

फलदीपिका (मंत्रेश्वर) अनुसार शनि की दशा मे पत्नी और बच्चो को रूमेटिस्म या गाउट रोग की पीड़ा, कृषि मे नुकसान, ख़राब बात, दुष्ट महिलाओ के साथ सम्भोग, नौकरो द्वारा नौकरी छोड़ना, धन का नाश होना फल जातक को अनुभव मे आते है।

मेष मे शनि हो, तो दशा मे स्वतंत्रता, मर्म स्थान मे रोग, चर्म रोग, प्रवास, बंधु-बांधव से वियोग; वृषभ मे हो, तो निरुद्यम, वायु पीड़ा, कलह, वमन, आंत के रोग, राज्य से सम्मान, विजय लाभ; मिथुन मे हो, तो कष्ट, ऋण, चिंता, परतंत्रता; कर्क मे हो, तो नेत्र-कर्ण रोग, बंधु वियोग, विपत्ति, दरिद्रता; सिंह मे हो, तो रोग, आर्थिक कष्ट; कन्या राशी मे हो, तो गृह निर्मण, भूमि लाभ, सुखी होना आदि फल होते है।

तुला राशि मे हो, तो धन-धान्य का लाभ, विलास, भोगोपभोग की वस्तुओ की प्राप्ति, विजय; वृश्चिक मे हो, तो भ्रमण, कृपणता, साधारण आर्थिक कष्ट, नीच का संग; धनु मे हो, तो राजा के समान, जनता मे ख्याति, आनन्द, प्रसन्ता, यश लाभ; मकर मे हो, तो आर्थिक संकट, विश्वासघात, बुरे व्यक्तियो का साथ; कुम्भ मे हो, तो पुत्र-धन और स्त्री का लाभ, विजय

और मीन मे हो, तो अधिकार प्राप्ति, सुख, सम्मान, उन्नति आदि फल होते है।

बुध दशा फल - 17 वर्ष

दिव्यांगना वर-बदन पंकज षड पदस्या लीला विलास, वरभोग समन्वितस्या।
नाना प्रकार विभवागम कोष वृद्धिं क्षिप्रम पुनर्बुध दशाभि मनाभि सिद्धम्।

बुध की दशा मे व्यापर मे वृद्धि, व्यवसाय मे विस्तारीकरण, गृह मे उत्सव, शुभ समाचारो की प्राप्ति, दुत्कारी मे वृद्धि, आजीविका की प्राप्ति, धार्मिक कृत्य होते है। बुध उच्च, स्वगृही, बलवान हो, तो विद्या, विज्ञान, व्यापार-व्यवसाय, शिल्पकर्म मे उन्नति, धन लाभ, स्त्री पुत्र को सुख होता है। यदि बुध नीच, अस्त, वक्री हो अथवा त्रिक 6, 8 12 भाव मे हो, तो त्रिदोष (वात-पित्त-कफ) विकार, संचित पूंजी का नाश, हानि होते है।

यदि बुघ बलवान और अनुकूल हो, तो अध्ययन और लेखन आदि मे समर्पित, सक्रीय, वाणिज्य या राजनीति या कूटनीति मे संलग्न, व्यापार और दूसरो से लेनदेन मे लाभ, मित्रो की संगती का आनंद, तनाव रहित शांत वातावरण मे रहने वाला होता है। यदि बुध बलहीन और पीड़ित हो, तो तंत्रिका (स्नायु) रोग से पीड़ित, यकृत रोग, मित्रो और रिश्तेदारो से हानि, अपनो के कारण दूसरे बईमान, मानहानि, नापसन्दी होती है।

बृहत्पराशर होरा शास्त्र अनुसार यदि बुध उच्च, स्वगृही, मित्र राशि या लाभ या पुत्र या धर्म भाव मे हो तो बुध दशा मे धन संचय, प्रतिष्ठा मे वृद्धि, ज्ञान वृद्धि, सरकार से हितकारिता, घर मे मांगलिक कार्य (उत्सव) पत्नी और बच्चो से खुशी, अच्छा स्वास्थ्य, मिष्ठानो की उपलब्धता, व्यापार मे लाभ इत्यादि होते

है। यदि बुध पर धर्मेश और कर्मेश की दृष्टि हो, तो उपरोक्त फायदेमंद परिणाम पूर्ण अनुभव मे आते है और पूरे दशा काल मे हर प्रकार की सुविधा रहती है।

यदि बुध अशुभ ग्रहो से दृष्ट हो, तो सरकार द्वारा सजा, भाइयो से वैर, विदेश यात्रा, दूसरो पर निर्भरता, संभवतया मूत्र कष्ट होते है। यदि बुध अरि या रंध्र या व्यय भाव मे हो, तो स्वास्थ्य हानि, कामुक गतिविधियो मे आसक्ति होने से धन हानि, संधिशोथ, पीलिया रोग की संभावना, चोरी का खतरा और सरकार से अपमान इत्यादि होते है। बुध की दशा के प्रारम्भ मे संपत्ति मे वृद्धि, शैक्षणिक क्षेत्र मे सुधार, शिशु जन्म और खुशी, मध्य दशा मे सरकार से मान्यता और अंतिम दशा काल रंजीदा (शोकाकुल) होती है।

फलदीपिका (मंत्रेश्वर) अनुसार दोस्तो से मिलन, खुशी, विद्वानो से प्रशंसा, प्रसिद्धि की प्राप्ति, गुरु से लाभ, भाषण मे विशिष्टता या वाक्पटुता , दूसरो की सहायता, पत्नी बच्चो रिश्तेदारो को सुख बुध की दशा मे होते है।

बुध मेष राशि मे हो, तो धन हानि, छल कपट युक्त व्यवहार के लिए प्रवृत्ति; वृषभ मे हो, तो धनागम, यश लाभ, स्त्री-पुत्र की चिंता, विष से कष्ट: मिथुन में हो, तो अल्प लाभ, कष्ट, माता को सुख; कर्क मे हो, तो धनार्जन, काव्य सृजन, विदेश गमन, योग्य प्रतिभा की जागृति; सिंह मे हो, तो ज्ञान, यश, धननाश; कन्या राशि मे हो, तो ग्रंथो की रचना, प्रतिभा का विकास, धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

बुध तुला राशि मे हो, तो स्त्री से कलह या पीड़ा, दान या भेट देना, धार्मिक कृत्य; वृश्चिक मे हो, तो कामपीड़ा व अधिक

अनाचार, व्यय; धनु मे हो, तो केंद्र या राज्य मे मंत्री, शासन की प्राप्ति, नेतागिरी, नेतृत्व; मकर मे हो, तो नीचो से मित्रता, अल्प लाभ, धनहानि; कुम्भ मे हो, तो बंधुओ को कष्ट, रोग, दरिद्रता, दुर्बलता और मीन मे हो, तो दमा-खांसी से कष्ट, क्षय रोग, विष-अग्नि-शस्त्र से पीड़ा, नाना प्रकार की झंझटें, व्याधि आदि फल होते है।

केतु दशा फल - 7 वर्ष

विषाद कर्ती धन धान्य हन्त्री, सर्वापदं मूल मनार्थदात्रि।
भयंकरी रोग विपद विधात्री, केतुर्दशास्या किलजीव हन्त्री।।

राहु की दशा की अपेक्षा केतु की दशा शुभ होती है फिर भी जातक इस दशा मे अपने कार्यो पर पछताता रहता है। योजनाओ मे असफलता, शारारिक कष्ट, मित्रो से बिगाड़, राजयकार्य मे बाधा, व्यर्थ का व्यय, धन हानि, व्याधि आदि फल होते है। शुभ दृष्टि हो, तो केतु की दशा मे अर्थ प्राप्ति, शान्ति, उन्नति आदि फल होते है।

यदि केतु अनुकूल हो, तो दर्शन ग्रंथो का अध्ययन और पूजा मे सलग्न, दवाइयो से अत्यधिक आमदनी, धरेलू आराम और विलासता, सौभाग्य और रोगो से मुक्ति होती है। यदि केतु प्रतिकूल हो, तो शरीर मे तीव्र दर्द, दिमागी पीड़ा, दुर्घटना, धाव, बुखार, नीच लोगो की संगती और उनसे बुरे परिणाम होते है।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अनुसार यदि केतु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ भाव, शुभ ग्रह की राशि या स्वराशि मे हो, तो राजा से मधुर सम्बन्ध, देश या गांव प्रमुख बनने की इच्छा, वाहन सुख, बच्चो से खुशी, विदेशो से लाभ, पत्नी से सुख, पशु धन की

प्राप्ति होती है। यदि केतु सहज या अरि या लाभ भाव मे हो, तो राज्य अधिग्रहण, मित्रो से मधुर सम्बन्ध होते है। केतु की दशा प्रारम्भ मे राज योग, मध्य मे भयानकता और दशा अंत मे बीमारियो और दूर देश की यात्राओ से कष्ट होता है। यदि केतु धन या रंध्र या व्यय मे हो, या अशुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो जेल, भाइयो और रहवास का नाश, तनाव, भृत्य लोगो की संगति होती है।

फलदीपिका (मंत्रेश्वर) अनुसार केतु की दशा मे स्त्रियो से दु:ख और भ्रम, अमीरो से कष्ट, सम्पत्ति का नाश होता है। व्यक्ति दूसरो के साथ अन्याय करेगा, देश या मूल स्थान से निर्वासित होगा। दांतो मे परेशानी, पैरो मे दर्द और कट्टरपंथी परेशानिया होती है। केतु यदि मेष राशि मे हो, तो धन लाभ, यश, स्वास्थ्य; वृषभ मे हो, तो कष्ट, हानि, पीड़ा, चिंता, अल्पलाभ; मिथुन मे हो, तो कीर्ति, बंधुओ से विरोध, रोग, पीड़ा; कर्क मे हो, तो सुख, कल्याण, मित्रता, स्त्री-पुत्र लाभ; सिंह मे हो, तो अल्प सुख, धन लाभ और कन्या राशि मे हो, तो निरोग, प्रसिद्ध, सत्कार्य प्रेम आदि फल होते है।

यदि केतु तुला राशि मे हो, तो व्यसनों मे रूचि, कार्य हानि, अल्प लाभ; वृश्चिक मे हो, तो धन-सम्मान- स्त्री-पुत्र लाभ, कफ, बंधन जन्य (कारावास) कष्ट; धनु मे हो तो सिर मे रोग, नेत्र पीड़ा, भय; मकर मे हो, तो आर्थिक संकट, पीड़ा, चिंता, बंधु-बांधवो का वियोग और मीन राशि मे हो तो साधारण लाभ, अकस्मात धन प्राप्ति, लोक मे ख्याति, विद्या लाभ कीर्ति लाभ आदि फल होते है।

शुक्र दशा फल - 20 वर्ष

राजंपदाभिलाभं विभवं विशालं, यानं महत्पुण्य कारयाणि लक्ष।
देशं-विदेश सुख गामिनी स्वावरं शुक्रमदशा शुभतयति शुभकार्य लाभम्।।

शुक्र की दशा मे भोग विलास की इछाओ की पूर्ति, रत्न, आभूषण, सम्मान, नवीन कार्य, मदन पीड़ा, वाहन सुख, आकस्मिक द्रव्य लाभ, ललित कला से सम्मान होते है। निर्बल शुक्र की दशा मे चित्त संताप, कलह, विरोध, धन हानि, गुप्तांगो के रोग आदि होते है। शुक्र की दशा मे कलात्मक वस्तु और आनंद की प्राप्ति, दूसरो के साथ सामंजस्य पूर्ण तरीके लाभ मे पारस्परिक रूप से सहसञ्चालन, प्रेम मे पड़ना, विवाह होना, पत्नी से प्रेम और स्नेह मे वृद्धि, कन्या जन्म, कुछ महिला या शुभचिंतको के पक्ष के कारण उन्नति होती है।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अनुसार यदि शुक्र उच्च, स्वराशि, केंद्र या त्रिकोण मे हो तो उसकी दशा मे वस्त्राभूषण, वाहन, जमीन, पशु, प्रतिदिन मिष्ठान की उपलब्धता, संप्रभु से मान्यता, नाट्य संगीत के विलासता पूर्ण उत्सव, देवी लक्ष्मी की उदारता (आशीर्वाद) होती है। यदि शुक्र मूल त्रिकोण मे हो, तो निश्चित ही राज्य व धर की प्राप्ति, पुत्र या पोते का जन्म, परिवार मे विवाह का जश्न, मित्रो से मिलन, उच्च पद, खोई संपत्ति, राज्य, जमीन–जायदाद वापस प्राप्त होती है।

यदि शुक्र अरि या रंध्र या व्यय भाव मे हो, तो भाइयो से रिश्तेदारी मे कटुता, पत्नी को कष्ट, व्यापार मे घाटा, पशुओ का नष्ट होना रिश्तेदारी मे अलगाव होता है। यदि शुक्र धर्मेश या कर्मेश होकर बंधु स्थान मे स्थित हो, तो उसकी दशा काल मे देश या गावं का शासन प्रमुख, पवित्र कर्म करने वाला, जलाशय

और मंदिर निर्माण कराने वाला, अनाज दान करने वाला, हर रोज मिष्ठान प्राप्त वाला, कठोर परिश्रमी, नामी और प्रसिद्ध, पत्नी बच्चो से सुखी होता है। यदि शुक्र धन या युवती स्थान का स्वामी हो, तो उसकी दशा मे दर्द, कष्ट होता है।

फलदीपिका (मंत्रेश्वर) अनुसार अपने मनोरंजन और खुशी अनुसार साम्रग्री और सुविधा, श्रेष्ट वाहन, गाय, रत्न, आभूषण, खजाना की प्राप्ति, युवती के साथ सम्भोग (आनंद) बौद्धिक गतिविधिया, समुद्री यात्राएं, राजा द्वारा सम्मान और घर मे शुभ कार्य का उत्सव शुक्र की दशा मे होते है।

मेष राशि मे शुक्र हो, तो उसकी दशा मे चंचलता, विदेश भ्रमण, उद्वेग प्रेम, धन हानि; वृषभ मे हो, तो विद्या लाभ, कन्या रत्न की प्राप्ति, धन; मिथुन मे हो, तो काव्य प्रेम, प्रसन्नता, धन लाभ, प्रदेश गमन, व्यवसाय मे उन्नति; कर्क मे हो, तो उद्यम से धन लाभ, आभूषण लाभ, स्त्रियो से विशेष प्रेम; सिंह मे हो, तो साधारण आर्थिक कष्ट, स्त्रियो से धन लाभ, पुत्र हानि, पशुओ से लाभ और कन्या राशि मे हो, तो आर्थिक कष्ट, दुखी, प्रदेश गमन, स्त्री पुत्र से विरोध होता है।

कन्या राशि मे शुक्र हो, तो ख्याति लाभ, भ्रमण, अपमान; वृश्चिक मे हो, तो प्रताप, क्लेश, धन लाभ, सुख, चिंता; धनु राशि मे हो, तो काव्य प्रेम, प्रतिभा का विकास; मकर राशि मे हो, तो चिंता, कष्ट, वात रोग; कुम्भ राशि हो, तो व्यसन, कष्ट, धन हानि, दुर्घटना और मीन राशि मे हो, तो राजा से धन लाभ, व्यापार मे लाभ, कारोबार मे वृद्धि, नेतागिरी आदि फल होते है।

नवग्रहों के कल्याणकारक मंत्र

ग्रह विशेष के निम्नांकित वर्णित मंत्रों का प्रतिदिन ध्यान, पूजा, आराधना, जाप आदि करने से उक्त ग्रह से संबंधित सभी प्रकार के कष्ट दूर हो जाते हैं।

सूर्यदेव

सूर्य का ध्यान मंत्र

प्रत्यक्षदेवं विशदं सहस्त्रमरीचिभिः शोभितभूमिदेशम्।
सप्ताश्वगं सद्ध्वजहस्तमाद्यं देवं भजेऽहं मिहिरं हृदब्जे।।

सूर्य की उपासना का मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।

सूर्य गायत्री मंत्र

ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात।

अनिष्ट निवारक सूर्य मंत्र

ॐ ह्रौं श्रीं आं ग्रहधिराजाय आदित्याय स्वाहा।

दरिद्रता निवारक सूर्य मंत्र

ॐ ह्रीं घृणि सूर्य आदित्य श्री ॐ।

सिद्धि कारक सूर्य मंत्र

ॐ ह्रीं हंस सूर्याय नमः स्वाहा।

सूर्य अर्घ्य मंत्र

ॐ ऐहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पये।

अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्घ्यं दिवाकरः ॐ सूर्य नारायणाय नमः। कृपा करो ममोऽपरि।

चंन्द्रदेव

चन्द्र ध्यान मंत्र

शंख प्रभं वेणुप्रियं शशांकमीशान मौलि स्थित मीड्यरूपम्।
तमोवती चामृतसिक्तग्रात्तम् ध्याये हृदब्जे शशिभं ग्रहेशम्।।

चन्द्र उपासना मंत्र

ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

कष्ट निवारक चंद्र का मंत्र

ॐ श्रीं क्रीं चं चन्द्राय नमः।

चन्द्र नमस्कार मंत्र

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।

मंगलदेव

मंगल का ध्यान मंत्र

प्रतात गांगेयनिभं ग्रहेशं सिंहासनस्थं कमलसिंहस्तम्।
सुरासुरेर्पूजितः पादयुग्मं, भौमं, दयालुं हृदये स्मरामि।।

मंगल गायत्री मंत्र

ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय
धीमहि तन्नौ भौमः प्रचोदयात्।

मंगल उपासना मंत्र

ॐ हुं श्री मंगलाय नमः।

मनोरथ पूरक मंत्र

ॐ ऐं ह्रौं श्री पां कं ग्रहाधिपतये भोमाय स्वाहा।

बुधदेव

बुध ध्यान मंत्र

सोमात्मजं हंसगतं द्विबाहुं शंखेन्दुरूपं ह्यसिपाशहस्तम्।
दयानिधिं भूषणभूषितांग बुधं स्मरे मानक पंकजेऽहम्।।

बुध उपासना मंत्र

ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

बुध गायत्री मंत्र

ॐ त्र्यलौक्य मोहनाय विद्महे स्मरजनकाय धीमहि तन्नौ बुध प्रचोदयात्।

अरिष्ट निवारक बुध मंत्र

ॐ ह्रां क्रो डं ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा।

बृहस्पतिदेव

बुध ध्यान मंत्र

तेजोमयं शक्ति त्रिशूलहस्तं सुरेंद्र ससेवित पादपद्मम्।
मेघानिधि जानुगतद्विबाहु गुरु स्मरे मानस पंकजेऽहम्।।

बृहस्पति उपासना मंत्र

ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

बृहस्पति गायत्री मंत्र

ॐ गुरुदेवाय विद्महे महादेवाय
धीमहि तन्नो गुरु प्रचोदयात्।।

अरिष्ट निवारक बृहस्पति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ग्लौं ग्रहाधिपतये
बृहस्पतये वी ठः श्रीं ठः ऐं ठः स्वाहा।

शुक्रदेव

शुक्र ध्यान मंत्र

संतप्त कांचन निभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं धृतसरोरुहद्वन्द्वंशूलम्।
क्रौंचासनं च सुर सेव्यपागं शुक्र स्मरे त्रिनयनं हृदयाम्बुजेहम्।।

शुक्र उपासना मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

अरिष्ट निवारक शुक्र मंत्र

ॐ ऐं जं गीं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः।

शनिदेव

शनि ध्यान मंत्र

नीलांजनाभ मिहिरेष्ट पुत्रं ग्रहेश्वरं पाश भुजंग पाणिम्।
सुरासुराणां भयदं द्विबाहु स्मरे शनि मानसपंकजेऽहम्।।

शनि अरिष्ट निवारक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्चराय क्लीं ऐं सः स्वाहा।

शनि उपासना मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

राहुदेव

राहु ध्यान मंत्र

शीता सुमित्रान्त कमीड्यरूपं घोरं च वैडूर्य निभं विबाहुम्।
त्र्यलोक्य रक्षा परमिष्टदं तं राहु ग्रहेन्द्रं हृदये भजेहम्।।

राहु कष्ट निवारक मंत्र

ॐ क्रां क्रीं हूँ हुं टं टंकधारिणे राहवे रं ह्रीं श्रीं में स्वाहा।

राहु उपासना मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।

केतुदेव

केतु ध्यान मंत्र

लांगूल युक्तं भयहं जनानां कृष्णाम्बु भृत्सनिभमेक वीरम्।
कृष्णाम्बर शक्ति त्रिशूल हस्तं केतु भजे मानस पंकजेहम्।।

अरिष्ट निवारक केतु मंत्र

ॐ ह्रीं क्रूं क्रूर रूपिणे केतबे ऐं सौ स्वाहा।

केतु उपासना मंत्र

ॐ ह्रीं केतवे नमः।

श्री नवग्रह स्तोत्र

नवग्रह पीड़ा निवारण के लिए प्रतिदिन नवग्रह स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। श्रद्धा और विश्वास से किया गया नवग्रह स्तोत्र पाठ नवग्रह पीड़ा से मुक्ति दिलाता है तथा सुख-सम्पन्नता लाता है।

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।। सूर्य।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्।। चंद्र।।
धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।। मंगल।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतियं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।। बुध।।
देवानां च ऋषीनां च गुरुं कांचन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।। गुरु।।
हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।। शुक्र।।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तंड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।। शनि।।
अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।। राहु।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम्।
रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।। केतु।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुममाहितः।

दिवावा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भूविष्यति।।
नरनारी नृपाणां च भवेददुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषमारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीड़ास्तकराग्नि समुद्रभवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

श्री नवग्रह चालीसा

(दोहा)

श्री गणपति गुरुपद कमल, प्रेम सहित सिरनाय।
नवग्रह चालीसा कहत, शारद होव सहाय।।
जय जय रवि शशि भौम बुध, जय गुरु भृगु शनि राज।
जयति राहु अरु केतु ग्रह, करहुं अनुग्रह आज।।

प्रथमंहि रवि कहं नावौ माथा। करहुं कृपा जन जानि अनाथा।।
हे आदित्य दिवाकर भानू। मैं मति मन्द महा अज्ञानू।।
अब निज जन कहं हरहु कलेशा। दिनकर द्वादश रूप दिनेशा।।
नमो भास्कर सूर्य प्रभाकर। अर्क मित्र अघ ओघ क्षमाकर।।1।।

शशि, तुम, रजनीपति हो स्वामी। चन्द्र कलानिधि नमो नमामी।।
राकापति, हिमांशु, राकेशा। प्रणवत जन नित हरहुं कलेशा।।
सोम, इन्दु, विधु, शान्ति सुधाकर। शीत रश्मि औषधि निशाकर।।
तुमहीं शोभित भाल महेशा। शरण-शरण जन हरहुं कलेशा।।2।।

जय जय जय मंगल सुखदाता। लोहित भौमादिक विख्याता।।
अंगारक कुज रुज ऋणहारी। दया करहुं यहि विनय हमारी।।

हे महिसुत छितिसुत सुखरासी। लोहितांग जग जन अघनासी।।
अगम अमंगल मम हर लीजै। सकल मनोरथ पूरण कीजै।।3।।

जय शशिनंदन बुध महाराजा। करहु सकल जन कहं शुभ काजा।।
दीजै बुद्धि सुमति बल ज्ञाना। कठिन कष्ट हरि करि कल्याना।।
हे तारासुत रोहिणी नन्दन। चन्द्रसुवन दुःख दूरि निकन्दन।।
पूजहुं आसदास कहुं स्वामी। प्रणत पाल प्रभु नमो नमामी।।4।।

जयति जयति जय श्री गुरुदेवा। करौं सदा तुम्हारो प्रभु सेवा।।
देवाचार्य तुम ऋषि गुरु ज्ञानी। इन्द्र पुरोहित विद्या दानी।।
वाचस्पति वागीश उदारा, जीव बृहस्पति नाम तुम्हारा।।
विद्या सिन्धु अंगिरा नामा। करहुं सकल विधि पूरण कामा।।5।।

शुक्रदेव तव पद जल जाता। दास निरन्तर ध्यान लगाता।।
हे उशना भार्गव भृगुनन्दन। दैत्य पुरोहित दुष्ट निकन्दन।।
भृगुकुल भूषण दूषण हारी, हरहु नेष्ट ग्रह करहुं सुखारी।।
तुहि पंडित जोशी द्विजराजा, तुम्हरे रहत सहज सब काजा।।6।।

जय श्री शनिदेव रवि नन्दन। जय कृष्णे सौरी जगवन्दन।।
पिंगल मन्द रौद्र यम नामा। बभ्रु आदि कोणस्था लामा।।
वक्र दृष्टि पिप्पल तन साजा। क्षण महं करत रंक क्षण राजा।।
ललत स्वर्ण पद करत निहाला। करहुं विजय छाया के लाला।।7।।

जय जय राहु गगन प्रविसइया। तुमही चन्द्रादित्य ग्रसइया।।
रवि शशि अरि स्वर्भानू धारा। शिखी आदि बहु नाम तुम्हारा।।

सैहिंकेय निशाचर राजा। अर्धकाय जग राखहु लाजा।।
शुभ ग्रह समय पाय कहुं आवहु। सदा शान्ति रहि सुख उपजावहु।।8।।

जय जय केतु कठिन दुखहारी। निज जन हेतु सुमंगलकारी।।
ध्वजयुत रुण्ड रूप विकराला। घोर रौद्रतन अधमन काला।।
शिखी तारिका ग्रह बलवाना। महा प्रताप न तेज ठिकाना।।
वान मीन महा शुभकारी। दीजै शान्ति दया उर धारी।।9।।

विशेष

उपरोक्त नवग्रह चालीसा के पठन-पाठन एवं श्रवण करने से नवग्रह पीड़ा से मुक्ति मिलती है। जन्म पत्रिका में ग्रहजनित दोष जैसे- नवग्रह श्राप, ग्रहकृत पीड़ा, पितृदोष, चंडाल दोष, कालसर्प दोष, ग्रहणदोष आदि नवग्रहों द्वारा निर्मित अनिष्ठ दोषों से छुटकारा प्राप्त होता है। नवग्रह चालीसा का प्रारंभ रविवार के दिन से करना चाहिए। इसके लिए नवग्रह चालीसा का पाठ ऊषाकाल , अभिजितकाल, गौधूलिकाल एवं महानिशाकाल में करने से उत्तम फल, ऊर्जा प्राप्त होती है।

नवग्रह स्तोत्र

देवऋषि व्यासकृत यह नवग्रह स्तोत्र मानव की सभी बाधाओं से रक्षा करता है। लोक कल्याण हेतु वेद व्यासजी ने स्वयं अपने मुख से यह स्तोत्र कहा है। आज के युग में भी जो इस स्तोत्र का दैनिक पाठ करता है उस पर सभी ग्रह प्रसन्न रहते हैं तथा जीवन सुख-शांतिपूर्वक व्यतीत होता है। मन चेतन में सकारात्मक सोच का संचार होता है।

एक श्लोकीय नवग्रह मंत्र

ब्रह्मामुरारी त्रिपुरांतकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवा सर्वे ग्रहाशांतिकराभवतुं।।

हे ब्रह्मा, विष्णु, महेश हे सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु तथा केतु अपने कुप्रभाव को शांत करें।

ग्रह शांति के उक्त श्लोक का नित्य पाठ करते रहने से आराधक की सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं तथा सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है।

नवग्रह स्तोत्र

सुख समृद्धि की प्राप्ति के लिए दैनिक पाठ हेतु अरिष्ठ नाशक व्यासकृत नवग्रह स्तोत्र -

जपाकुसुमसंङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मिदिवाकरम्।।

अर्थात-जपा (अढौल) के फूल की लाल रंग के समान जिनकी कान्ति है, कश्यप से जो उत्पन्न हुए हैं, जो अंधकार के शत्रु हैं तथा जो सब पापों को नष्ट कर देते हैं उन सूर्य भगवान

को मैं नमस्कार करता हूँ।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवतम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

दही, शंख अथवा पाले के समान जिनकी शांत और सफेद दीप्ति है, जिनकी उत्पत्ति समुद्र से है, जो शिवजी के मुकुट के भी आभूषण हैं, उन चन्द्रदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

पृथ्वी के उदर से जिनकी उत्पत्ति हुई है, बिजली के समान जिनकी प्रभा है, जो हाथों में शक्ति धारण किए रहते हैं, सर्वदा कुमार अवस्था वाले उन मंगलदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगु की कली की तरह जिनका हरित मिश्रित श्याम वर्ण है, जिनके रूप की कोई उपमा ही नहीं है, उन सौम्य और अनेक गुणों से परिपूर्ण, बुधदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

जो देवताओं और ऋषियों के गुरु, कंचन के समान प्रभाव वाले बुद्धि के अखंड भण्डार और तीनों लोकों के प्रभु हैं, ऐसे बृहस्पति देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

तुषार (बर्फ), कुन्द अथवा मृणाल के समान जिनकी आभा है, जो दैत्यों के परम पूज्य गुरु हैं, ऐसे शास्त्रों के अद्वितीय वक्ता

शुक्राचार्य जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

नीलां जन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

नीलीमायुक्त काले अंजन के समान जिनकी दीप्ति है, जो सूर्य भगवान के पुत्र तथा यमराज के बड़े भाई हैं, सूर्य की पत्नी छाया से जिनकी उत्पत्ति हुई, उन शनि महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

जिनका केवल आधा शरीर है, जिनमें महान साहस है, जो चन्द्र और सूर्य को त्रस्त कर देते हैं, सिंहिका के गर्भ से जो पैदा हुए हैं, उन राहु देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाश के फूल की तरह जिनकी लाल दीप्ति है, जो समस्त तारकाओं से श्रेष्ठ गिने जाते हैं, जो स्वयं रौद्र रूप (महाभयंकर) और रौद्रात्मक हैं, ऐसे घोर रूपधारी केतु को मैं प्रणाम करता हूँ।

इति व्यासमुखोद् गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवावा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।

व्यासदेव के मुख से कहे हुए हुए इस स्तोत्र का जो सावधानीपूर्वक दिन या रात्रि के समय श्रद्धा के साथ पाठ करता है, उसकी सारी विघ्न बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं।

नर नारी नृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषमारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम्।।

संसार के साधारण स्त्री पुरुष और राजाओं के भी दु:स्वप्न दूर हो जाते हैं। इसका पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य तथा आरोग्य प्राप्त होता है और सुख समृद्धि में वृद्धि होती है।

ग्रहनक्षत्रजाः पीड़ास्तकराग्नि समुद्रभवाः।
ताः सर्वाः प्रशमंयान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

किसी भी ग्रह-नक्षत्र, चोर और अग्नि से उत्पन्न पीड़ाएं (कष्ट, विघ्न आदि) इस स्तोत्र का पाठ करने से शांत हो जाते हैं। ऐसा स्वयं व्यासजी ने कहा हैं। इसलिए इसमें कोई संशय नहीं है।

श्री नवग्रह की आरती

आरती श्री नवग्रहों की कीजै।
बाधा, कष्ट, रोग, हर लीजै।।
सूर्य तेज व्यापे जीवन भर।
जाकी कृपा कबहु नहिं छीजै।।1।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै...॥

रूप चंद्र शीतलता लाये।
शांति-स्नेह सरस रसु भीजै।।2।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै... ॥

मंगल हरे अमंगल सारा।
सौम्य सुधा रस अमृत पीजै ।।3।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै...॥

बुद्ध सदा वैभव-यश लाये।
सुख-सम्पति लक्ष्मी पसीजै।।4।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै... ॥

विद्या-बुद्धि ज्ञान गुरु से ले लो।
प्रगति सदा मानव पै रीझे।।5।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै... ॥

शुक्र तर्क विज्ञान बढावै।
देश धर्म सेवा यश लीजे।।6।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै... ॥

न्यायधीश शनि है अति न्यारे।
जप तप श्रद्धा शनि को दीजै।।7।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै... ॥

राहु मन का भरम हरावे।
साथ न कबहु कुकर्म का दीजै।।8।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै... ॥

स्वास्थ्य को उत्तम केतु राखै।
पराधीनता मनहित खीजै।।9।।
आरती श्री नवग्रहों की कीजै... ॥

नवग्रह गुणधर्म विषयक सर्वोपयोगी चक्रम्

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
प्लेनेट	सन्	मून	मार्स	मक्यूरी	जुपिटर	वीनस	सेटर्न	ड्रगॉस	ड्रगॉस
सितारा	आफताब	माहताब	मिरीख	उतारूद	मुस्तरी	झाहार	झाहल	रास	जनब
एक पाद दृष्टि	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९
त्रिपाद दृष्टि	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
पूर्ण दृष्टि	७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७
ग्रहों के उदय वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२
रत्न	माणिक	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लसुणि
मित्र	चं.मं. गु.	र.बु.	र.चं. गु.	र.रा. शु.	र.चं. मं.	बु.रा. श.	बु.शु. रा.	बु.श. शु.	बु.शु. श.
सम	बु.	मं.शु. गु.श.	शु.श. रा.	मं.श. गु.	श. रा.	मं.गु.	गु.	गु.	गु.
शत्रु	श.शु. रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं. मं.	र.चं. मं.	र.चं. मं.
एक राशि भ्रमण	१ माह	२। दिन	१।। माह	१ माह	१३ माह	१ माह	३० माह	१८ माह	१८ माह
उच्च राशि	मेष	वृषभ	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु
उच्चांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
नीच राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन
नीचांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
स्वराशि	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृषभ तुला	मकर कुंभ	कन्या	मीन
मूल त्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुंभ	कुंभ	सिंह
पुरुष-स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री	पुरुष	पुरुष
आकार	चतुरस्त	स्थूल	चतुरस्त	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ

नवग्रह गुणधर्म विषयक सर्वोपयोगी चक्रम्

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
समय	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न
दिशा	पूर्व	वाय.	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
धातु	सुवर्ण	रजत	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रजत	लोह	लोह	लोह
पाद	चतुष्पाद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंग अपद	अपद	अपद
गुण	सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम
चरादि	स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी स्थिर	चर	पक्षी
अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
रस	तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अमल	कषाय	कषाय	कषाय
स्थिर कारक	आत्म	मन	बल	वचः	ज्ञान.सु.	स्त्री	दुख	-	-
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रि	शुद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद
भूमि	पशुप्राय	जल	दग्ध	श्मशान	वाणी सुराल	जल	उत्कर	उषर	उषर
पित्तादि	पित्त	श्लेष्म	पित्त	सम धातु	सम धातु	कफ शुक्र	वायु	वायु	वायु
रंग	पाटल	गौरश्वे.	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
सौम्यादि	उग्र	सौम्य	पाप	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	क्रूर	पाप
फल समय	आदौ	अन्त्ये	आदौ	सर्वदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	अन्त्ये
नेष्ट ग्रह समयदान शांति उपाय	हरिवंश पु. श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या	गौरक्षा	मृत्युंजय जाप	भुजंग दान	ध्वजा दान

नवग्रह परिचय

समस्त व्यक्तियों को ग्रहों के प्रभाव का सामना अवश्य करना पड़ता है। ग्रह अपना प्रभाव अवश्य देते हैं और इसमें किसी प्रकार से छोटे-बड़े अथवा अमीर-गरीब का भेद नहीं किया जाता। मानव जीवन ग्रहों द्वारा ही संचालित होता है। प्रत्येक मानव के पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्मों का लेखा जोखा इन्हीं ग्रहों के द्वारा जाना जा सकता है।

सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख अवश्य आता है, परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिन्हें मृत्युपर्यन्त दुखों का सामना करना पड़ता है। ऐसा ग्रहों की अशुभता के कारण होता है। क्योंकि प्रत्येक ग्रह मानव जीवन को अलग-अलग तरह से प्रभावित करता है। 9 ग्रह, 12 राशियां एवं 27 नक्षत्रों के प्रभाव से व्यक्ति का पूरा जीवन प्रभावित होता है। सभी 9 ग्रह अपनी-अपनी दशा-अंतर्दशा एवं युति दृष्टि के अनुसार शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। कुंडली के 12 भावों में ग्रहों की जो स्थिति होगी उसी के अनुसार फल की प्राप्ति होगी।

प्रत्येक ग्रह की अपनी-अपनी अलग विशेषता होती है और प्रत्येक ग्रह अपनी-अपनी दशा के अनुसार जातक को फल प्रदान करते हैं। इसलिए जातक को सभी ग्रहों के बारे में जानकारी होना आवश्यक है।

ग्रहराज सूर्यदेव का परिचय

सूर्य ग्रहों के राजा हैं। यह कश्यपगोत्र के तथा क्षत्रीय वर्ण के कलिंग देश के स्वामी हैं। कुसुम के समान इनका रक्त वर्ण है। दोनों हाथों में कमल लिए हुए हैं। सिंदूर के समान वस्त्र, आभूषण और माला धारण किए हुए है। ये जगमगाते हुए हीरे के समान चंद्रमा और अग्नि को प्रकाशित करने वाले त्रिलोक का अंधकार दूर करने वाले प्रकाश से संपन्न हैं। सात घोड़ों के एक चक्र रथ पर सवार होकर सुमेरू की परिक्रमा करते हुए प्रकाश के समुद्र भगवान सूर्य का ध्यान करना चाहिए। इनके अधि देवता शिव हैं और प्रत्यधि देवता अग्नि है।

नवग्रहों में सूर्य ग्रह का विशेष महत्व है। सूर्य को ग्रहों का राजा एवं जीवनदाता माना गया है। सूर्य के अभाव में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। सूर्य का प्रभाव व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष पर पड़ता है। इनमें विवाह, दाम्पत्य सुख, संतान, व्यवसाय आदि प्रमुख हैं। सूर्यकृत उपाय करने से इन क्षेत्रों में आने वाली बाधाएं कम हो जाती हैं। सूर्य उपासना से सूर्य जनित कष्टों से मुक्ति होती है। इन्हीं उपायों से सूर्यकृत रोगों का शमन भी होता है।

सूर्य हमारी पृथ्वी से 15 करोड़ 70 लाख किलोमीटर दूर स्थित है। इसका व्यास 13 लाख 52 हजार 800 किलोमीटर अर्थात पृथ्वी के व्यास से 100 गुणा से भी अधिक है। सभी ग्रह सूर्य को केंद्र मानकर अंडाकार कक्षा में उसके चारों ओर चक्कर लगाते हैं। सूर्य की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण ही सभी ग्रह

अपनी कक्षाओं में भ्रमण करते हैं। सूर्य में इतना तेज है कि अन्य ग्रह इससे निश्चित अंशात्मक दूरी पर आते ही अपना प्रभाव खो देते हैं। वेदों में सूर्य को जगत की आत्मा कहा गया है।

सूर्य को अनेक नामों से पुकारा जाता है। सूर्य ही महेंद्र काल, यम और वरुण है। नक्षत्र, ग्रह व तारों के अधिपति, वायु, अग्नि, धनाध्यक्ष, भूतों के सृष्टिकर्ता, देवों के देव, विधाता, बीज, क्षेत्र और प्रजापति हैं। कालरूप, सर्वभूतात्मा, वेदात्म, विश्वतोमुख, जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि और संसार के भय का नाश करने वाले हैं।

सूर्य की दो पत्नियां संज्ञा एवं छाया (निक्षुभा) हैं। संज्ञा के सुरेणु, राज्ञी, द्यो, त्वाष्ट्री एवं प्रभा आदि अनेक नाम हैं। संज्ञा से अश्विनी कुमार, यम, यमुना, वैवस्वतमनु और रेवन्त की उत्पत्ति हुई है। छाया का दूसरा नाम निक्षुभा है। छाया से शनि, तपती, विशिष्ट और सावर्णिमनु आदि संतानों की उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार सूर्य की ये 10 संतानें मानी गई हैं।

सूर्य देव की दो भुजाएं हैं वे कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं, उनके दोनों हाथों में कमल सुशोभित रहते हैं। उनकी कांति कमल के भीतरी भाग सी है। वे सात घोड़ों पर सात रस्सियों से जुड़े रथ पर विराजमान रहते हैं। सूर्य के वाहन रथ में एक पहिया व बारह डंडे हैं। जिन्हें संवत्सर एवं मास माना जा सकता है। सात घोड़ों की सप्तकिरणें कही जाती हैं। ये सात रंग की किरणें ही सृष्टि का संचालन करती हैं।

सूर्य थोड़े घुंघराले बाल, उत्तम बुद्धि, रूप, गंभीर वाणी, अधिक ऊंचाई नहीं, शहद के समान लाल नेत्र, शूर, प्रचण्ड, स्थिर, रक्त श्यामवर्ण शरीर, छिपे हुए पैर, पित्त स्वभाव, अस्थि

बल से युक्त, बड़ा, गंभीर, समर्थ शरीर, विशाल किरणों वाला, केसर के रंग के समान वस्त्र वाला है।

सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार हेलि, भानुमान, दीप्तरश्मि, चंडशु, भास्कर, अहस्कर, तपन, दिनकर, पूषा, भानु, अरुण व अर्क ये सूर्य के 12 नाम हैं। ग्रहों के सूर्य राजा, पाप ग्रह, ताम्रवर्ण वाला, पुरुष अधिपति, क्षत्रिय, कड़वा रस, देवालय स्थान, स्थूल वस्त्र, अयन स्वामी, पितृलोक का स्वामी, चंद्र, मंगल व बृहस्पति का मित्र, सूर्य के शत्रु शुक्र व शनि, बुध सम, अधिष्ठित राशि से सप्तम पर पूर्ण दृष्टि, दशम भाव में बली, दिवाबली, उजर अयन में बलवान, दिन के द्वितीय प्रहर में बली, सिंह राशि में 1 अंश से 20 अंश तक मूल त्रिकोणी व 21 से 30 अंश तक स्वगृही, प्रथम वार का स्वामी, कलिंग देश एवं सर्व, ऊन, पर्वत, स्वर्ण शास्त्र, विष, अग्नि, औषधि, राजा, म्लेच्छ, समुद्र, तार, वन, काष्ठ एवं मत्र के स्वामी सूर्य ही हैं।

श्री सूर्यशांति हेतु मंत्र, अनुष्ठान, दानोपाय

1. परिचय : मध्ये वर्तुलमण्डल अंगुल 12 कलिंगदेशां द्भवकाश्यप गोत्रे रक्तवर्ण। दान पदार्थ : माणिक्य, गेहूँ, सवत्साधेनु, रक्तवस्त्र, केसर, गुड़, स्वर्ण, ताम्र, रक्तचन्दन, रक्तकमल।

2. जपनीय एकाक्षरी मंत्र – **ॐ घृणिः सूर्याय नमः।**
3. जपनीय बीज मंत्र – **ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।**
4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र – **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।**
5. जपनीय वैदिक मंत्र –

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनदेवो याति भुवनानि पश्यन्।

6. गायत्री मंत्र –

ॐ भास्कर विद्महे महद्युतिमराय धीमहि
तन्नोः आदित्यः प्रचोदयात।

7. जप संख्या – 7000 सूर्योकाल
8. समिधः/औषधयं: – अर्क / बिल्वमूलं
9. अन्य उपाय – हरिवंश श्रवण
10. रत्न/उपरत्न दान– माणिक्य/लालड़ी मूल, सूर्यमणि
11. धातु/न्यूनतम वजन – स्वर्ण या ताम्र / 3 रत्ती
12. सूर्य की उंगली – अनामिका
13 जाप करने के नक्षत्र – पुष्य, कृति., उफा., उषा.,
14. व्रत पूजा का वार/समय – रविवार/प्रथम प्रहर
15. पुराणोक्त स्तवन–

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
नमोऽरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

श्री सूर्य नामावली

ॐ अरुणाय नमः	ॐ करुणारससिन्धवे नमः
ॐ आर्तरक्षकाय नमः	ॐ आदिभूताय नमः
ॐ अच्युताय नमः	ॐ अनन्ताय नमः
ॐ विश्वरूपाय नमः	ॐ इन्द्राय नमः
ॐ इन्दिरामन्दिराप्ताय नमः	ॐ ईशाय नमः
ॐ सुशीलाय नमः	ॐ वसुप्रदाय नमः
ॐ वासुदेवाय नमः	ॐ उग्ररूपाय नमः

ॐ विवस्वते नमः
ॐ वीराय नमः
ॐ नित्यानन्दाय नमः
ॐ ऋतुस्वभाववित्ताय नमः
ॐ ऋक्षाधिनायमित्राय नमः
ॐ कान्तिदास नमः
ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
ॐ असमानबलांय नमः
ॐ अखिलागमवेदिने नमः
ॐ इज्याय नमः
ॐ वन्दनीयाय नमः
ॐ सुवर्चसे नमः
ॐ उज्जवलाय नमः
ॐ उद्यत्किरणजालाय नमः
ॐ निर्जराय नमः
ॐ हृषिकेशाय नमः
ॐ जयाय नमः
ॐ रुग्घन्त्रे नमः
ॐ ऋकारमातृफवर्णरूपाय नमः
ॐ लुप्तदन्ताय नमः
ॐ कनत्कनक भूषणाय नमः
ॐ शरण्याय नमः
ॐ आदित्याय नमः
ॐ इनाय नमः
ॐ भानवे नमः
ॐ सुप्रसन्नाय नमः
ॐ वसवे नमः
ॐ ऊर्ध्वगाय नमः
ॐ ऊर्जस्वलाय नमः
ॐ अखिलज्ञाय नमः
ॐ अरुद्वयविनिर्मुक्त निजसार ऋषिवन्द्याय नमः
ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः
ॐ नित्यस्तुत्याय नमः
ॐ उज्ज्वलतेजसे नमः
ॐ शान्ताम नमः
ॐ लूनिताखिलदैत्याय नमः
ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः
ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ शौरये नमः
ॐ जामिने नमः
ॐ औन्नत्यपदसंचाररथस्थाय नमः
ॐ खद्योताय नमः
ॐ पुष्कराक्षाय नमः
ॐ घनाय नमः
ॐ एकाकिने नमः
ॐ घृणभूते नमः
ॐ शर्वाय नमः
ॐ भक्तवश्याय नमः
ॐ जनममृत्युजराव्याधिवर्जिताय नमः
ॐ असुरारयो नमः

ॐ अब्जवल्लाभाय नमः
ॐ अच्युताय नमः
ॐ खये नमः
ॐ वरेण्याय नमः
ॐ सौख्यप्रदाय नमः
ॐ नारायणाय नमः
ॐ ह्रीं संपत्कराय नमः
ॐ श्रेयसे नमः
ॐ सत्यानन्द स्वरूपिणे नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ गुणात्मने नमः
ॐ ऐश्वर्यदाय नमः
ॐ अमरेशाय नमः
ॐ दश दिक्संप्रकाशाय नमः
ॐ जगदानन्दहेतवे नमः
ॐ अन्तर्वहिः प्रकाशाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ ग्रहाणां पतये नमः
ॐ सकलजगतापतये नमः
ॐ परेशाय नमः
ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः
ॐ सौख्यदायिने नमः
ॐ ओं अचिन्ताय नमः
ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
ॐ परमात्मे नमः
ॐ भास्कराय नमः
ॐ सूर्याय नमः
ॐ तेजोरूपाय नमः
ॐ अं सुप्रसन्नाय नमः
ॐ दीप्तमूर्तये नमः
ॐ आर्तशरण्याय नमः
ॐ निखिलागमवेद्या नमः
ॐ बृहते नमः
ॐ हरिदश्वाय नमः
ॐ अहस्कराय नमः
ॐ ओजस्कराय नमः
ॐ कमनीयकराम नमः
ॐ आत्मरूपिणे नमः
ॐ तरुणाय नमः
ॐ आदिमध्यांतरिहिताय नमः
ॐ कवये नमः
ॐ श्री हिरण्यगर्भाय नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ दिवाकरामे नमः

श्री सूर्य पूजन विधि

जातक का जब सूर्य ग्रह खराब हो तो वह सबसे पहले सूर्य ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और यह मंत्र पढ़ें –

विनियोग ॐ आकृष्णेति हिरण्यस्तूप ऋषि त्रिष्टुष छन्दः सूर्य्यो देवता सूर्यआवाहने विनियोग

यह कहकर हाथ में लिया हुआ जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

तत्पश्चात – हाथ में लाल फूल या रोली के रंगे चावल लेकर सूर्य का ध्यान निम्नांकित मंत्र से करें –

श्री सूर्य का ध्यान

पद्मासनम पद्म करो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्त तुरंग वाहनः।
दिवाकरो लोकगुरु किरीटी मयि प्रसाद विदधातु देवः।।
अथ ध्यानं समर्थयामि।।

यह मंत्र पढ़कर फूल पूजास्थल पर चढ़ा दें।

अर्घ्य प्रदान करें – 'आचमनी' या चम्मच में जल, रोली चावल, फूल डालकर सूर्य नारायण को जल चढ़ाएं (अर्घ्य प्रदान करें)।

ॐ ऐहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पये।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्घ्य दिवाकरः।।
अर्घ्य समर्पयामि।।

तत्पश्चात– हाथ में रोली या लाल चन्दन लेकर भगवान सूर्य नारायण को अर्पित करें निम्नांकित मंत्र से –

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

ॐ सूर्याय नमः।

तत्पश्चात- सूर्य को लाल रंग का अक्षत (चावल) चढ़ाएं।

ॐ सूर्य नारायणाय नमः अक्षतं समर्पयामि।

तत्पश्चात- फूल चढ़ाएं - **पुष्पं समर्पयामि।**

फिर हाथ में नैवेद्य, फूल, चावल लेकर सूर्य नारायण को हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

प्रणाम मंत्र

ॐ जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।

तमोऽरि सर्वपापाघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिंग देशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य। इहागच्छ इहातिष्ठा सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

श्री सूर्य के व्रत का शास्त्र वर्णित विधान

1. सूर्य ग्रह का उपवास रविवार को रखें।
2. यह व्रत शुक्ल पक्ष के किसी भी प्रथम रविवार से प्रारंभ किया जा सकता है।
3. व्रत कब तक करें अर्थात व्रत संख्या 12, 30 या एक वर्ष पर्यन्त रखें।
4. इस व्रत में नमक पूर्णतः वर्जित है, किसी भी रूप में नमक का सेवन इस दिन न करें।
5. शुद्धता का विशेष ख्याल रखें।
6. व्रत के दिन गेहूं का दलिया गुड़ में बनाकर या गुड़ और

घी से गेहूँ की रोटी या हलवा बनाकर सूर्यास्त से पूर्व भोजन करें।

7. दान देने के पश्चात ही भोजन का सेवन करें। सूर्य संबंधी वस्तुओं का ही दान करें।
8. भोजन से पूर्व सूर्य देव को केसर, लाल चंदन और लाल पुष्प से अर्घ्य दें।
9. व्रत के दिन सूर्य मंत्र का 7000 (सात हजार) बार जप करें। यदि इतना भी नहीं कर सकते तो कम से कम एक या दस माला (108 या 1080) अवश्य करें।
10. मस्तक पर लाल चंदन का तिलक करें और पहनने वाले कपड़ों में भी नारंगी, लाल रंग के वस्त्रों का ही प्रयोग करें।
11. जब व्रत का अंतिम रविवार हो तो या व्रत का उद्यापन हो तो सूर्य मंत्र से 1000 हवन कर या यथाशक्ति हवन करके ब्राह्मण को भोजन कराएं।

श्री सूर्य व्रत करने से अनेकों लाभ होते हैं

सूर्य ग्रह का व्रत करने से सूर्य की अशुभता दूर हो जाती है। नेत्र रोग, चर्म रोग एवं अन्य सभी प्रकार के शारीरिक रोग शांत होते हैं। तेजस्विता बढ़ती है सूर्य का ध्यान मन में शांति की प्राप्ति होती तथा निरोगता के साथ आयुवर्धक है। राज्य प्राप्ति एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने हेतु सूर्य उपासना का शास्त्रों में बड़ा चमत्कारी वर्णन है। यश वृद्धि के साथ-साथ राज्य लाभ भी होता है।

श्री सूर्य व्रत विधि

सूर्य ग्रह का व्रत रविवार के दिन किया जाता है। सूर्य ग्रह के लिए रविवार का व्रत आयु की वृद्धि, आत्मबल की प्रबलता व सूर्य की शांति के लिए किया जाता है। हीनभावना से ग्रसित रोगियों व नेत्र रोगी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है।

रविवार के व्रत की विधि

सूर्य का व्रत रविवार के दिन करें। चंद्रबल देखकर शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारंभ करें। इसके वर्ष पर्यन्त कम से कम 12 व्रत किए जाने चाहिए। अधिक करें तो और भी अच्छा है। सर्वप्रथम दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर प्रात:काल सूर्योदय के समय भगवान सूर्यदेव को अर्घ्य देवें। तांबे के पात्र में रक्तचंदन से अष्टदल कमल लिखकर उस पर सूर्य भगवान की पूजा करें। तत्पश्चात सूर्य के तांत्रि मंत्र की 11 या 21 माला जपें। सूर्यास्त के पहले ही भोजन करें। नमक, तेल का त्याग करें क्योंकि व्रत के दिन नमक का निषेध है। गेहूँ की रोटी, घी, गुड़ या गेहूँ का कोई भी सामान सेवन करें। स्नान करने के पश्चात भोजन के पूर्व लाल वस्त्र पहन कर लाल आसन पर बैठकर बीज मंत्र से जाप करें।

उद्यापन

व्रत की समाप्ति पर अंतिम रविवार को उद्यापन करें। उक्त दिन 12 दलों का लाल चावलों का या मसूर गोधूम का कमल बनावें तथा प्रत्येक पर सूर्य भगवान के 12 नामों से पूजन करें।

निष्ठान से 12 ब्राह्मणों को भोजन करावें तथा दान-दक्षिणा देवें।

भगवान श्री सूर्यदेव के द्वादश नाम स्मरण

मित्रो विष्णु, सवरुणः सूर्यो भानुस्तथैव या
तपनेन्द्रो रविः पूज्यो गभास्तिः शमजुस्तथा।
हिरण्येता दिनकृत्पूज्या एते प्रयत्नतः।

सूर्य शांति के शास्त्र वर्णित सरल उपाय

1. दैनिक सुबह-शाम तांबे के पात्र में पानी पीएं।
2. दैनिक सुबह-शाम इलायची का सेवन करें।
3. रविवार को लाल रुमाल या वस्त्र शरीर पर धारण करें।
4. अनामिका अंगुला में तांबे की अंगूठी पहनें।
5. दैनिक गायत्री सूर्य मंत्र का 108 बार जप करें।
6. प्राणायाम व भावातीत ध्यान अवश्य करें।
7. दैनिक सुबह-शाम माता पिता के चरण स्पर्श करें।

सूर्य दान की वस्तुएं

सोना, तांबा, माणिक्य, गेहूँ, गाय, लाल वस्त्र, गुड़, हेम, रक्तचन्दन, रक्तकमल।

बीज मंत्र - ॐ घृणिः सूर्याय नमः।

तांत्रिक मंत्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

वैदिक मंत्र -

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेयन्नमृतंमर्त्येयं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवापति भुवनानि पश्यन्।।

सूर्य ग्रह व्रत कथा

प्राचीन समय की बात है। आज से हजारों वर्ष पूर्व किसी राज्य में अबोध नाम का एक ब्राह्मण अपनी पतिव्रता पत्नी के साथ रहता था। ब्राह्मण की पत्नी का नाम मेघना था। उस राज्य के राजा थे सूर्य देव और उनके राज्य का नाम था सूर्य नगर।

राजा सूर्यदेव के राज्य में चारों ओर खुशहाली और सम्पन्नता व्याप्त थी। उनके राज्य में कोई भी भूखे पेट नहीं सोता था। राजा स्वयं अपनी प्रजा के हितों के लिए लगातार प्रयत्नशील रहते थे। राजा प्रतिदिन भेष बदल-बदल कर अपनी प्रजा में घूमते और पापियों, दुराचारियों, कुकर्मियों का पता लगाकर उन्हें कठोर दंड देते थे। इस प्रकार से उनके राज्य में अपराध प्रवृत्ति के लोग बहुत कम रह गए थे। जो बच गए थे वे भी धीरे-धीरे राज्य छोड़कर जा रहे थे।

राजा सूर्यदेव न केवल भेष बदल कर गरीब, दीन-दुखियों की खबर ही लेते थे अपितु उन जरुरतमंद लोगों की गुप्त रूप से मदद भी किया करते थे। इस तरह से उनके राज्य सूर्य नगर में उनकी जय-जयकार चारों तरफ गूंजती थी। सूर्य नगर में चारों तरफ हरियाली और प्रसन्नता का वातावरण व्याप्त था।

ऐसे ही खुशहाल राज्य का निवासी था अबोध नाम का ब्राह्मण। वह एक अच्छा और महान पंडित था। ज्योतिष विद्या में उसको महारथ हासिल थी। परन्तु वह अपनी विद्या को बेचता नहीं था। वह सेवा भाव से सभी लोगों को ज्योतिष विद्या का ज्ञान नि:शुल्क देता था। वह सदैव जो मिल जाता उसी में संतोष कर सुखी जीवन व्यतीत करता था।

परन्तु पिछले दो दिन से पंडित अबोध नारायण बेहद चिंतित नजर आ रहा था। पंडित अबोध नारायण की पत्नी मेघना अपने पति की चिंता देख दुखी और परेशान थी। उसने कई बार अपने पति से उसकी चिंता का कारण जानना चाहा, परन्तु ब्राह्मण पं. अबोध नारायण ने जैसे चुप्पी साध ली थी। पत्नी के बार-बार पूछने पर भी उसकी किसी भी बात का उसने कोई जवाब नहीं दिया।

मेघना इस बात को अच्छी तरह से जानती थी कि उसका पति अबोध नारायण बहुत ही जिद्दी है और जब तक कुछ बताने का मन न होगा वह नहीं बताएगा। अत: वह खामोशी से पति को चिंतित देखने के अलावा और विकल्प नहीं खोज पा रही थी।

एक रात 12 बजे का समय था। चारों ओर शांति और घोर अंधेरा छाया हुआ था। राजा सूर्य देव भेष बदलकर चुपचाप महल के गुप्त रास्ते से बाहर निकले। बाहर दूसरे छोर पर उनके मंत्री विभूति घोड़ा लिए हुए तैयार खड़े थे।

राजा सूर्यदेव ने मंत्री विभूति चंद्र के नजदीक जाकर फुसफुसाते हुए पूछा- 'चंद्र! सब तैयार है न?' मंत्री ने कहा - 'जी महाराज'। राजा सूर्यदेव ने कहा - 'चलें।' मंत्री विभूति चंद्र ने कहा - 'जी महराज।'

यह कहकर राजा सूर्यदेव अपने घोड़े पर सवार होकर मंत्री विभूति चंद्र के साथ अपनी सुखी और खुशहाल प्रजा की खैर-खबर लेने के लिए निकल पड़े। राज्य में चारों तरफ अंधकार छाया हुआ था। रात गहराती जा रही थी। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। दूर-दूर तक देखने पर भी कोई नजर नहीं आ रहा था।

ऐसे में भी ब्राह्मण अबोध नारायण के घर में रोशनी हो रही थी। ब्राह्मण की पत्नी मेघना ने दो दिनों से कुछ भी नहीं खाया-पीया था। अत: भूखी-प्यासी होने के कारण उसे नींद नहीं आ रही थी। ऐसा ही कुछ हाल पंडित अबोध नारायण का भी था।

अचानक अबोध नारायण ने चुप्पी तोड़ते हुए पत्नी मेघना से दुखी लहजे में कहा - 'तुम कुछ खाती-पीती क्यों नहीं ? मैं देख रहा हूँ कि पिछले दो दिनों से तुम निर्जल और निराहार हो। यदि कुछ खाओगी-पियोगी नहीं तो बीमार हो जाओगी, इसलिए कुछ खा लो।'

यह सुनकर मेघना बोली - 'स्वामी! यही बात मैं आपके विषय में भी कहती हूँ, मेरा तो धर्म आपके साथ ही है, जब आप ही कुछ नहीं खा रहे हो तो मैं कैसे खा सकती हूँ। एक पतिव्रता स्त्री बिना पति के खाए कैसे अन्न-जल ग्रहण कर सकती है। इतना ही नहीं, मैंने आपसे कई बार आपकी चिंता का कारण पूछना चाहा किन्तु आपने नहीं बताया। यदि आप मुझे बताते तो मैं आपको कुछ न कुछ राय तो अवश्य दे सकती थी।'

तब पंडित अबोध नारायण ने कहा - 'प्रिय! मैं सोच रहा हूँ कि तुम्हें सब कुछ बता ही दूं।' पति के मुंह से यह सुनकर मेघना की आंखों चमक आ गई। वह तुरन्त बोली 'स्वामी! बात यदि दिल से लगा ली जाए और किसी को न बताई जाए तो वह स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती है। इसलिए बात को बता देना ही हितकर होता है, इससे सुनने वाला भी अपनी राय दे सकता है।'

पत्नी के मुंह से ऐसी ज्ञान भरी बातें सुनकर पं. अबोध नारायण ने कहा - 'सुनो मेघना! मैं अपने राजा की तरफ से

चिंतित हूँ।' मेघना ने पूछा – 'महाराज की तरफ से, भला वह कैसे?' पंडित ने कहा – 'कुछ दिनों पहले मैं राज्य की ग्रहों की चाल देख रहा था। तभी मुझे ज्ञात हुआ कि हमारे महाराज पर सूर्य ग्रह का प्रकोप आने वाला है यह प्रकोप इतना अधिक तीव्र होगा कि इससे न केवल हमारे महाराज पीड़ित होंगे, बल्कि सारी प्रजा पर भी संकट आ जाएगा। बस यही मेरी चिंता का कारण है।'

यह जानकर मेघना बोली – 'स्वामी! आपकी चिंता उचित है।' फिर एक क्षण रुककर मेघना पुनः बोली – 'स्वामी! आपने जब ग्रह की चाल देखी है तो यह भी तो देखा होगा कि ग्रह के इस प्रकोप से बचने का उपाय क्या है?'

ब्राह्मण ने कहा –'हाँ! मैंने देखा है।' मेघना ने पूछा – 'स्वामी! फिर बताइए न, उपाय क्या है?' ब्राह्मण बोला – 'महाराज को ग्यारह दिन का उपवास करना होगा। और रविवार के पांच व्रत करने होंगे।'

मेघना ने पति के मुंह से उपाय सुनकर कहा – 'स्वामी! फिर कल यह बात महराज को बता दीजिए, इसमें सोचने या चिंतित होने की क्या बात है? हमारे महाराज तो बड़े दयालु और परोपकारी हैं। वह आपकी बात मानकर व्रत-उपवास जरूर करेगे।'

यह सुनकर पं. अबोध नारायण ने कहा – 'मेघना! यही सब सोचकर तो मेरी चिंता समाप्त हुई है। अब तुमने खाने में कुछ बनाया हो तो शीघ्र ले आओ, ताकि मैं भी कुछ खा-पी लूं और तुम भी अपने खाने के लिए साथ में ही ले आओ।' मेघना ने कहा – 'जी स्वामी मैं अभी लेकर आती हूँ।' यह कहकर मेघना

बिस्तर से उठकर रसोई में चली गई। अबोध नारायण उसके लौटने की प्रतीक्षा करने लगा।

आपस में बातें करते हुए पति-पत्नी दोनों ही इस बात से पूरी तरह बेखबर थे कि उनके घर के पीछे की तरफ खुलने वाली खिड़की के पास राजा सूर्यदेव अपने मंत्री विभूति चंद्र के साथ खड़े हुए हैं और उन दोनों के बीच हुई बातचीत का एक-एक शब्द उन लोगों ने सुन लिया है। अपनी प्रजा को अपने विषय मे चिंतित होते देख राजा सूर्यदेव की आंखों में आंसू आ गए।

अगले दिन भोर होते ही राजा सूर्यदेव ने एक रथ पंडित अबोध नारायण को लिवा लाने के लिए घर पर भेजा। रथ के साथ स्वयं मंत्री विभूति चंद्र पंडितजी को लिवाने के लिए आए थे।

रथ को देखकर अबोध नारायण और उसकी पत्नी मन ही मन सोचने लगे कि - 'हमसे ऐसी क्या भूल हो गई, जो राजा के महामंत्री रथ लेकर आए हैं।' इससे पहले कि वे अभी कुछ और सोच पाते, मंत्री विभूति चंद्र ने विनयपूर्वक अपने दोनों हाथ जोड़कर उन दोनों पति-पत्नी को प्रणाम किया और फिर नम्रतापूर्वक बोले - 'पंडितजी! महामंत्री विभूति चंद्र का प्रणाम स्वीकार कीजिए।'

पं. अबोध नारायण ने जवाब दिया - ' प्रणाम! आज्ञा कीजिए महामंत्रीजी, कोई काम था तो मुझ गरीब को बुला लिया होता, आपने क्यों कष्ट किया।' महामंत्री बोले - 'पंडितजी! प्यासा ही कुएं के पास आता है। कुआं प्यासे के पास कभी नहीं जाता। इसलिए महाराज ने मुझे आपको बुलाने के लिए यहां आपके पास भेजा है।'

पंडितजी ने कहा – 'मंत्रीजी! क्या महाराज को मुझसे कोई काम है?' मंत्री ने कहा – 'जी हां, पंडितजी।' पंडित ने फिर पूछा – 'मगर क्या? मैं तो आज स्वयं ही महाराज से मिलने आने वाला था।'

प्रत्युत्तर में महामंत्री ने रात की घटना के विषय में जैसा सुना था, सारा वृतांत कह सुनाया। सारी बात सुनकर पंडित अबोध नारायण ने कहा – 'ओह! तो यह बात है।' और फिर वह महामंत्री के साथ राजा सूर्यदेव से मिलने के लिए प्रस्थान किया।

उधर राजमहल में पहुंचने पर राजा सूर्यदेव ने पंडितजी का खूब स्वागत-सत्कार किया। उन्हें बैठने के लिए सुन्दर आसन दिया और फिर पूछा – 'हां तो पंडितजी! आप हमें बताएं कि ग्यारह उपवास और पांच रविवार के व्रत के विधि-विधान क्या हैं?'

पंडित ने कहा – 'महाराज! ग्रह के प्रकोप को शांत करने के लिए आपको ग्यारह दिन तक दिन में एक समय सिर्फ मिष्ठान खाने होंगे। सूर्य ग्रह के लिए मन में प्रार्थना करनी होगी कि – 'हे रवि (सूर्य) ग्रह! हमारे राज्य में चारों तरफ खुशहाली रहे, हम अपनी प्रजा का पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं, आप हमसे नाराज न होकर हमसे प्रसन्न हों।' ऐसा प्रति उपवास में पांच बार कहना है।' राजा सूर्यदेव ने कहा – 'हम ऐसा ही कहेंगे पंडितजी! हम ऐसा ही करेंगे।'

तब पंडित अबोध नारायण ने आगे कहा – 'महाराज! आपको पांच रविवार के व्रत और रखने होंगे। वैसे तो व्रत और उपवास में कोई अंतर नहीं होता, लेकिन उपवास लगातार होंगे और व्रत सप्ताह में एक दिन अर्थात रविवार के रविवार रखना

है।' राजा सूर्यदेव ने कहा - जी पंडितजी।'

इसके बाद पंडितजी ने कहा - 'महाराज! इसके पश्चात उद्यापन के लिए पांच ब्राह्मणों को भोजन कराना होगा। उन्हें वस्त्र आदि का दान भी देना होगा।' राजा सूर्यदेव ने कहा - 'ऐसा हो जाएगा, पंडितजी।' तब पंडितजी बोले - 'फिर आप निश्चिंत रहें महाराज। इस प्रकार से सूर्य ग्रह का कष्ट निवारण हो जाएगा और आपका यश बना रहेगा।'

फिर क्या था जैसा पंडित अबोध नारायण ने बताया था राजा सूर्यदेव ने वैसा ही किया। उन्होंने ग्यारह उपवास एक समय मिष्ठान और फलों का सेवन करते हुए पूरे किए। इसके बाद उन्होंने पांच रविवार व्रत रखे। कथा को पढ़कर सभी को सुनाया और अंत में उद्यापन कर, पांच ब्राह्मणों को भोजन कराया और विधिवत बताए अनुसार और दान दक्षिणा दी। और फिर उसी रात-राजा सूर्यदेव को रविग्रह ने स्वप्न में दर्शन दिए और कहा - राजन! मैं तुम्हारे द्वारा किए गए उपवास और व्रतों से बहुत प्रसन्न हूँ, पंडित अबोध नारायण ने बिल्कुल ठीक कहा था। मेरी दृष्टि का प्रकोप तुम पर और तुम्हारे राज्य पर होने वाला था, लेकिन तुमने पहले ही मुझे प्रसन्न कर, संकट को टाल दिया। अब हम कभी तुमसे रुष्ट नहीं होंगे। राजा सूर्यदेव यह सुनकर बोले - 'आपकी जय हो ग्रह देवता।'

फिर सूर्यदेव बोले - एक बात और राजन-जिस प्रकार तुमने मेरे व्रत किए, उसी प्रकार जिन प्राणियों से मैं नाराज होऊंगा, वह भी ऐसा यत्न करेंगे तो मैं उन पर भी प्रसन्न रहूँगा।'

रविग्रह की बात सुनकर राजा सूर्यदेव ने कहा- 'किन्तु ग्रह देवता प्रजा में सभी तो सम्पन्न नहीं होते-बहुत से ऐसे भी होते

हैं जो सिर्फ पेट ही भर पाते हैं। फिर वे इस प्रकार सविधि दान-दक्षिणा कहां से देंगे? फल, मिष्ठान कहां से खाएंगे? हे देव! कृपा करके कुछ ऐसा बताइए, जिससे कि आपके व्रत करने से प्रजा का मार्ग सुगम बन जाए।'

यह सुनकर रवि ग्रह ने जवाब दिया - 'राजन! आप ठीक कहते हैं। चूंकि हम आप से प्रसन्न हैं और आपने हमसे उचित प्रश्न किया है, तो हे राजन! ऐसा मनुष्य हमारे व्रत में एक समय मिष्ठान के बदले कोई भी अन्न ग्रहण कर सकता है। उद्यापन के लिए एक ही ब्राह्मण को भोजन कराने तथा दक्षिणा देने से भी मैं प्रसन्न होऊंगा। एक वस्तु के दान को भी मैं स्वीकार कर लूंगा। दो उपवास रखने से भी मैं प्रसन्न रहूँगा।'

रविग्रह की यह बात सुनकर, राजा सूर्यदेव बोले - 'देव! आपने हमारी बहुत बड़ी समस्या का निवारण किया है। आपकी जय हो ग्रह देव - आपको हमारा बारम्बार नमस्कार।' और तभी रवि ग्रह अर्थात भगवान सूर्यदेव अन्तर्धान हो गए।

राजा का स्वप्न टूट गया। फिर राजा सूर्यदेव ने अपने राज्य में रविग्रह की शांति के लिए, रविग्रह द्वारा बताई गई बातों का अपनी प्रजा में प्रचार करवाया और पंडित अबोध नारायण को बहुत सारा धन देकर विदा किया। इस प्रकार रवि ग्रह का प्रकोप पहले ही शांत हो गया।

चन्द्रदेव का परिचय

भगवान चंद्रदेव अत्रि गोत्र के हैं। यवन देश के स्वामी हैं, इनका शरीर अमृतमय है। एक हाथ में वर मुद्रा में रहते हैं तथा दूसरे हाथ में गदा धारण किए हुए हैं। दूध के समान श्वेत शरीर पर श्वेत वस्त्र माला और श्वेत अनुलेपन किए हुए हैं। गले में मोती का हार है, जिससे सुधामयी किरणों का संचार होता है। चित्रक रथ पर विराजमान हैं इस राथ को दस घोड़े खींचकर सुमेरू की प्रदक्षिणा कर रहे हैं। इनके अधिदेवता उमादेवी एवं प्रत्यति देवता वरुणदेव हैं।

चन्द्रमा सूर्य के समान स्वयं प्रकाशित न होकर अन्य ग्रहों के समान ही सूर्य से प्राप्त प्रकाश से प्रकाशित होता है। यह पृथ्वी का एक अकेला उपग्रह है। चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह होकर पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है।

चन्द्रमा की पृथ्वी से दूरी लगभग 2,37,840 मील है। इसकी त्रिज्या 1738 किलोमीटर है। पृथ्वी के साथ-साथ सूर्य संचारण के मार्ग को एक माह में तय कर लेता है, जबकि सूर्य इसी मार्ग को तय करने में एक वर्ष का समय लगाता है। अर्थात चंद्रमा इस सौर मंडल का सर्वाधिक तीव्र गामी ग्रह होकर लगभग 2180 मील प्रति घंटे की चाल से गति करता है और अपनी कक्षा में घूमते हुए पृथ्वी की अंडाकार कक्षा में 27 दिन 7 घंटे 43 मिनट तथा 12 सेकंड में एक चक्कर लगाता है। इस समय को चन्द्रमास कहते हैं। इसका आकार पृथ्वी की तुलना में सामान्यत: पृथ्वी का एक चौथाई है, किन्तु यह आकार पृथ्वी

और सूर्य के सापेक्ष घटता-बढ़ता रहता है। पृथ्वी से काफी छोटा होने के कारण इसका गुरुत्वाकर्षण बल पृथ्वी की तुलना में 1/6 है। कम गुरुत्वाकर्षण के कारण चंद्रमा पर वायुमंडल नहीं है। पृथ्वी पर इसका प्रकाश 1.3 सेकंड में आ जाता है। इसके उदय और अस्त होने का कोई निश्चित समय नहीं होता है। पृथ्वी पर अन्य ग्रहों की अपेक्षा चंद्रमा का प्रभाव सर्वाधिक देखा जा सकता है, उसी के गुरुत्वाकर्षण के कारण समुद्र में ज्वार-भाटा आता है।

अन्य ग्रहों की अपेक्षा पृथ्वी के समीप होने के कारण पृथ्वी पर अपना व्यापक चुंबकीय प्रभाव छोड़ता है। इसके कारण चंद्रमा हमारे मन, देह तथा पृथ्वी के परिवर्तनों का उत्तरदायी है। पौराणिक मतानुसार चंद्र की स्थिति सूर्य राशियों में एक लाख योजन की ऊंचाई पर है।

यह अत्यन्त तीव्रगामी होकर मात्र सवा दो दिनों में एक राशि को तथा 27 दिनों में संपूर्ण राशि को पार कर लेता है। सूर्य और चंद्रमा जब परस्पर 6 राशियों के अंतर पर होते हैं तब पूर्णिमा और दोनों जब एक साथ होते हैं तब अमावस्या होती है। जन्म कुंडली में जब चंद्रमा क्षीण होता है तो उसके अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत पूर्ण और बली चंद्रमा शुभ फल देने में समर्थ होता है। कृष्ण पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक चंद्रमा को दुर्बल माना जाता है तथा इसका प्रभाव भी हानिकारक होता है जबकि शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक चंद्रमा पूर्ण बलवान और ज्योतिवान होता है, जो शुभ फल देने में समर्थ होता है। सर्वाधिक तीव्रगामी होने के कारण गोचर भ्रमण के दौरान यह जातक के जीवन पर

महत्वपूर्ण प्रभाव रखता है।

सौम्यता, शीतलता और सौन्दर्यता का प्रतीक होने के कारण इसे स्त्री ग्रह, स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, जलीय, उत्तर-पश्चिम दिशा का स्वामी माना गया है। स्वभाव से यह चित्त वृत्ति, शारीरिक स्वास्थ्य, संपत्ति, राज्य कृपा तथा माता का कारण ग्रह है। चंद्रमा के प्रभाव से पांडू रोग, कफ, जलीय, रोग, मानसिक विकृतियां, स्त्रीजन्य रोग, व्यर्थ, भ्रमण, मस्तिष्क आदि का विचार किया जाता है।

ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा गोल, मांसल, गौरवर्ण, स्थूल शरीर, सुन्दर नेत्र, काले और घुंघराले बाल तथा मधुर वाणी का सौम्य एवं शीतल ग्रह है। यह शत्रु राशि और शत्रु ग्रह नहीं रखता।

यह स्त्री, माता, यश, धन, संपत्ति, बुद्धि, राज्य कृपा, मृदु और सौम्य स्वभाव, मन और मस्तिष्क की स्थिति, प्रेम, राग, द्वेष, विचार, निर्णय, प्रसन्नता, उदासीनता कामना, भावना, वेदना, मनोबल, उत्साह, उमंग, विदेश यात्रा, तीव्रगति, मध्यम और छोटा कद, कांति, मुख लावण्य, सुंदरता, वाहन, वासना और अन्य सांसारिक सुख, श्वेत वस्तुएं-मोती, सीपी, गाय, गन्ना, गेहूँ, चांदी-चीनी, चावल, पनीर, खोया, श्वेत वस्त्र, कांच, दवाई, कैमिकल्स, द्रव्य-पदार्थ-घी, तेल, दूध, जल, शराब, वर्षा, तालाब, समुद्र का कारक है। चंद्र प्रधान व्यक्ति इन वस्तुओं से संबंधित कार्य जीविकोपार्जन हेतु अपनाकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। तथा चंद्र की प्रबलतानुसार उच्चाधिकार प्राप्त करते हैं।

यह एक सामान्य नियम है कि किसी भी कार्य की सिद्धि हेतु ऐसे समय का चयन करें कि जिसमें लग्न, चंद्रमा लग्न, नवांश

एवं विषय से संबंधित भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हों। सभी मंगल, कार्य करते समय चंद्रमा बली अवस्था में हो इसलिए ऐसे लग्न में कार्य आरंभ करें।

श्री चन्द्र शांति हेतु मंत्र, जाप अनुष्ठान, दानोपाय की विधि

1. परिचय/दान पदार्थ : आग्नेयां चतुरस्त्रमण्डल आंगुल 24, जमुना तीर देशोद्भव आत्रेयसगोत्र, श्वेत वर्ण/वंश पात्र, चावल, कपूर, मोती, श्वेत वस्त्र, वृषभ, चांदी, घृतकुंभ, शंख।

2. जपनीय एकाक्षरी मंत्र – ॐ सों सोमाय नमः

3. जपनीय बीज मंत्र – ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र – ॐ श्रां श्रीं, श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

5. जपनीय वैदिक मंत्र –

ॐ इमंदेवांऽऽसपत्नꣳसुबध्व महतेक्षत्रायमहते ज्येष्ठयायमहतेज्ञान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इममुष्यैपुत्रममुष्यै पुत्रमष्ये विशऽऽएषवोमी राजासोमोऽऽस्माकं ब्राह्मणनां राजा।।

6. गायत्री मंत्र–

ॐ अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

7. जप संख्या / समय – 11,000 / संध्याकाल

8. समिधः / औषध्य – पलाश / क्षीरिका मूलं

9. अन्य उपाय – रुद्रार्चन (रुद्राभिषेक)

10. रत्न / उपरत्न दान – मोती/चंद्रमणि, श्वेत पुखराज

11. धातु/न्यूनतम वजन – रजत, प्लेटीनम /4 से 6 रत्ती
12. चंद्र प्रभाव वाली उंगली – तर्जनी / कनिष्ठा
13. पूजा–पाठ करने के नक्षत्र – पुष्य रोहिणी, हस्त, श्रवण
14. पुराणोक्त स्तवन –

दधि शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवतम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।।

श्री चन्द्र का संपूर्ण विवरण

चंद्रमा को काल पुरुष का मन माना गया है। इसके संबंध में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं –

रत्न दान	मोती
राशि संचार समय	$2^1/_4$ दिन
समय	अपराह्न
स्वभाव	शुभ, चर (चंचल)
समिधा	पलाश
पुष्प	सफेद फूल
गुण	सत्व
वर्ण	श्वेत
जाति	वैश्य
आकृति	स्थूल
दिशा	वायव्य
धातु	चांदी
लिंग	स्त्री
तत्व	जल

उपरत्न दान	चंद्रमणि
अंग्रेजी नाम	मून
स्वामित्व	कर्क
मूल त्रिकोण	वृषभ
उच्च राशि	वृषभ
नीच राशि	वृश्चिक
काल पुरुष के शरीर में स्थिति	मुख
भाव का कारकत्व	चतुर्थ
ऋतु	वर्षा
पशु	सफेद बैल
दृष्टि	सप्तम
मित्र ग्रह	सूर्य, बुध
शत्रु ग्रह	राहु
सम ग्रह	मंगल, गुरु, शुक्र शनि
स्वरूप	सुंदर
प्रकृति	कफ
गोत्र	अत्रि
वाहन	हरिण
राज्याधिकार	रानी
पराभव	बुध से पराजित
रुचि	ज्योतिष शास्त्र
भाग्योदय काल	24–25 वर्ष तक
जड़ी	खिरनी की जड़
अवस्था	युवा, तारुणी
स्वाद	नमकीन

वार	सोमवार
कद	दीर्घ (लंबा)
निसर्गबल	शुक्र से अधिक बली
बली	रात्रि में
संज्ञा	पूर्णबली चंद्र हो तो शुभ जबकि क्षीणबली चंद्र हो तो अशुभ
बली	रात्रि में
संज्ञा	पूर्णबली चंद्र हो तो शुभ जबकि क्षीणबली चंद्र हो तो अशुभ
क्रीड़ा स्थल	जलाशय
स्थान	गीली भूमि व जलाश
दान का समय	संध्याकाल
दोष शमन	राहु, बुध, शनि, मंगल, शुक्र और गुरु का
दान पदार्थ	बांस के पात्र में चावल, मोती, कपूर, सफेद गाय या बैल, श्वेत वस्त्र, चांदी, घी से भरा घड़ा।
भाग	उभय
विद्या	ज्योतिष
दीप्तांश	12 अंश
दृष्टि	सम
शरीर में कारक रक्तकाल समय	मुहूर्त

मंडल	चतुरत्न या त्रिकोणाकार
देश	यमुनातटवर्ती
देवता	वरुण
शुष्कता	जलीय
रोग	रक्तविकार, रक्तचाप, रक्ताभाव, जलोदर, शीत ज्वर, उन्माद एवं कफ विकार।
विचारणीय विषय	मन, माता, प्रसन्नता, धन, बुद्धि एवं उन्नति।

चन्द्र शांति के चमत्कारी उपाय

1. चंद्रमा को मजबूत करना हो तथा धन प्राप्ति की इच्छा हो तो मोती युक्त चंद्र यंत्र गले में धारण करें।
2. अनिष्ट चंद्रमा की शांति के लिए पूर्णिमा व्रत सहित चंद्र मंत्र का विधिवत अनुष्ठान करना चाहिए।
3. दूध का बर्तन रात को सिरहाने रखकर सुबह कीकर या यज्ञीवृक्ष में डालना।
4. चारपाई के पायों में चांदी की कील गाड़ना।
5. बहते पानी (गंगा) में स्नान करें।
6. घर की छत के नीचे कुआं या हैंडपंप न लगाना।
7. चंद्र नीच का हो तो चंद्र की चीजों का दान करें। यह उपाय 5, 11, या 43 दिन या सप्ताह या एक माह लगातार करें।
8. केतु के साथ चंद्र होने पर गणपति की उपासना करें।

9. चंद्र निर्बलता में कैल्शियम की विशेष कमी हो जाती है। अत: हल्दी व दही से बने पदाथों का सेवन (विशेषकर बच्चों को) बहुत हितकर है।
10. कर्क या वृष के निर्बल चंद्र के लिए भगवती गौरी अथवा परांव ललिता की आराधना करें।
11. चावल, चांदी, दूध आदि का दान करें।
12. चंद्र पीड़ा की विशेष शांति हेतु चांदी, मोती, शंख, सीप, कमल और पंचगव्य मिलाकर सात सोमवार तक स्नान करें।
13. चंद्र पीड़ित जातक प्रदोष तथा श्रावण-सोमवार का व्रत अवश्य करें।
14. शिवचालीसा का नियमित पाठ करें।
15. दक्षिणावर्ती शंख की पूजा करें।
16. हर सोमवार को बबूल के झाड़ में दूध चढ़ाएं।
17. रजत पात्र में जल पिएं।
18. नवरत्न जड़ित पावरफुल श्रीयंत्र गले में धारण करें।
19. हरिवंश पुराण के अनुसार जातक को शिव की उपासना करनी चाहिए।
20. दुर्गासप्शती का पाठ, चंद्र सहित सभी ग्रहों की अनुकूलता दायक एवं सर्वसिद्धिप्रद होता है।
21. बलारिष्ट से बचने हेतु बच्चे के गले में चांदी का चंद्रमा अभिमंत्रित करके पहनावें।
22. छत पर पानी की टंकी गोल न बनाएं। (चौकोर का डर नहीं)
23. सोमवार का व्रत 5, 11 अथवा 43 बार करें।

24. द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा व उनका पूजन करना चाहिए।
25. आसमानी बर्फ (ओले) शीशी में भरकर रखें या गंगाजल का प्रयोग पूजा में एक बूंद मिलाकर करें।
26. चंद्रमा उच्च का हो तो चंद्र की चीजों का दान नहीं देवें।
27. घर में सप्तधातु का श्रीयंत्र स्थापित करें एवं उसके सामने श्रीसूक्त के 15 मंत्रों का नियमित पाठ करें।
28. ॐ नमः शिवाय की नित्य एक माला का जाप करें।
29. एक अथवा पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजा स्थान पर स्थापित कर उसकी नियमित पूजा करें।
30. नित्य पारद शिवलिंग की पूजा उपासना करने तथा रुद्राभिषेक करने से समस्त कष्टों का निवारण होता है।

चन्द्र मन्त्र

चंद्र मंत्रों का जाप श्रद्धा, विश्वास और विधि के अनुसार करना चाहिए। चन्द्र के वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक मंत्र निम्नलिखित हैं –

वैदिक मंत्र

ॐ इमंदेवांऽऽसपत्न ँ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते ज्ञान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।।
इममुष्यपुत्र ममुष्यै पुत्रमष्येविशऽऽएषवो मीराजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानांराजा।।

तांत्रिक मंत्र – **ॐ श्रां श्रीं, श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।**

तांत्रिक मंत्र – **ॐ सों सोमाय नमः।**

उपरोक्त चंद्र मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नियमित रूप से

विधिवत जप करके चंद्र पीड़ा का निवारण कर सकते हैं। चंद्र मंत्र अल्पमत 11,000 जपें जबकि अधिकतम 44,000 जपने के बाद पूर्ण फलदायी होता है।

अथ चंद्रमन्त्र जप विधि

अस्य श्रीसोममंत्रस्य भृगुऋषिः पंक्तिश्छन्दः सोमो देवता स्वौं बीजं नमः शक्तिः सर्वाभीष्टसिद्ध जपे विनियोगः

ॐ भृगऋ षये नमः शिरसि। पंक्तिश्छंदसे नमः मुखे। सोमदेवाये। नमो हृदि। स्वौंबीजाय नमः गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयोः। (इति ऋष्यादिन्यास)

ॐ सां. अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ सः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः (एवं हृदयादिन्यासः)

अथध्यानम्। कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णन्दुबिंबाननं मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मुलयंतं तमः। हत्याभ्यां मुकुदं वरं व दधातं नीलीलकोभ्दासितं स्वीयांकस्यमृगोविदता श्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।।2।।

चन्द्र अष्टोत्तर शत नामा स्मरण नमस्कार वली

ॐ श्रीमते नमः	ॐ चन्द्राय नमः
ॐ निशाकाराय नमः	ॐ सदाराध्याय नमः
ॐ जयोद्योगाय नमः	ॐ साधुपूजिताय नमः
ॐ विकर्तनानुजाय नमः	ॐ विश्वेशाय नमः
ॐ दोषाकराय नमः	ॐ पुष्टिमते नमः

ॐ अष्टमूर्तिप्रियाय नमः
ॐ प्रकाशत्मने नमः
ॐ कालहेतवे नमः
ॐ अमर्त्याय नमः
ॐ क्षयवृद्धिसमन्विताय नमः
ॐ जपिने नमः
ॐ भक्तानामिष्टदायकाय नमः
ॐ सामनानप्रियाय नमः
ॐ मुक्तिदाय नमः
ॐ ताराधीशाय नमः
ॐ सत्पतये नमः
ॐ ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकाय नमः
ॐ विदुषां पतये नमः
ॐ शिष्टपालकाय नमः
ॐ स्वप्रकाशाय नमः
ॐ कलाधराय नमः
ॐ मृत्युसंहारकाय नमः
ॐ क्षीणपापाय नमः
ॐ शुभ्राय नमः
ॐ सुरस्वामिने नमः
ॐ भक्तदारिद्य भंजनाय नमः
ॐ भवबन्धविमोचकाय नमः
ॐ जगत्प्रकाशकिरणाय नमः
ॐ निर्विकाराय नमः
ॐ भुवनप्रतिपालकाय नमः
ॐ कष्टदारुकुठारकाय नमः
ॐ देवभोजनाय नमः
ॐ कामदायकाय नमः
ॐ क्षपाकराय नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ सुधामयाय नमः
ॐ भद्राय नमः
ॐ सागरोभ्भवाय नमः
ॐ शशिधराय नमः
ॐ सुधानिधये नमः
ॐ जितेन्द्रियाय नमः
ॐ वीराय नमः
ॐ दुष्टदूराय नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ द्युचराय नमः
ॐ कामकृते नमः
ॐ नित्यानुष्ठानदायकाय नमः
ॐ जैवातृकाय नमः
ॐ जयफलप्रदाय नमः
ॐ भुक्तिदाय नमः
ॐ सर्वरक्षकाय नमः
ॐ भयान्तकृते नमः
ॐ निस्सपत्नाय नमः
ॐ भूच्छयाऽच्छादिताय नमः
ॐ सौम्यजनकाय नमः

ॐ सनकादिमुनिस्तुयाम नमः
ॐ सितांगाय नमः
ॐ दशाश्वरथसंरूढाय नमः
ॐ नयानाब्जसमुद्भवाय नमः
ॐ प्रियदायकाय नमः
ॐ चतुरश्रासनारूढाय नमः
ॐ वसुसमृद्धिदाय नमः
ॐ ग्रहमण्डलमध्यस्थाय नमः
ॐ द्युतिलकाय नमः
ॐ उदाराय नमः
ॐ नित्यानन्दफलप्रदाय नमः
ॐ निराहाराय नमः
ॐ भव्याय नमः
ॐ साधुवन्दिताय नमः
ॐ सितच्छत्रध्वजोपेताय नमः
ॐ श्वेतगन्धानुलेपनाय नमः
ॐ भक्तिगम्याय नमः
ॐ करुणारससंपूर्णाय नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ महेश्वरप्रियाय नमः
ॐ ग्रसितार्काय नमः
ॐ द्विभुजाय नमः
ॐ रोहिणीपतये नमः
ॐ सकलाधदनकराय नमः
ॐ सर्वांगमज्ञाय नमः
ॐ श्वेतमाल्याम्बरधराय नमः
ॐ कुन्दपुष्पोज्ज्वलाकाराय नमः
ॐ आत्रेयगोत्रजाय नमः
ॐ कर्कटप्रभवे नमः
ॐ दिव्यवाहनाय नमः
ॐ दान्ताय नमः
ॐ ग्रहाधिपाय नमः
ॐ द्विजपूजिताय नमः
ॐ नित्योदयाय नमः
ॐ जगदानन्दकारणाय नमः
ॐ निरामयाय नमः
ॐ सकलार्तिहराय नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सितभूषणाय नमः
ॐ धनुर्धराय नमः
ॐ अत्यन्तविनयाय नमः
ॐ चतुराय नमः
ॐ विवस्वंमंडलाज्ञेयवासाय नमः
ॐ मेरुगोत्रप्रदक्षिणाय नमः
ॐ द्विजराजाय नमः
ॐ औदुंबरनगावासाय नमः
ॐ मुनिस्तुत्याय नमः
ॐ पलाशेध्माप्रियाय नमः

चन्द्र पूजन विधि

जातक का जब चन्द्र ग्रह खराब हो तो वह सबसे पहले चन्द्र ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और यह मंत्र पढ़ें –

विनियोग – इमं देवेति गौतम ऋषिः द्विपदा विराट छन्दः सोमोदेवता सोमावाहने विनियोगः

हाथ में सफेद पुष्प अथवा सफेद चावल लेकर चन्द्रमा का ध्यान कीजिए –

ध्यान मन्त्र

श्वेताम्बर श्वेत विभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहु चन्द्रोमृताकर वरदः किरोटी मयि प्रसाद विद्धातु देवः।

ध्यानं समर्पयामि

कहकर फूल छोड़ दें। तत्पश्चात – चन्द्रमा को जल चढ़ाएं।

ॐ शुद्धोदक जलं समानीतं स्नानं प्रतिगृहताम्।

रोली या चन्दन निम्नलिखित मंत्र से चढ़ाएं –

ॐ इमं देवाऽअसपत्नꣳसुवद्ध्वं महते क्षत्रय महते ज्यैष्ठइयाय महते ज्ञानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानांꣳ राजा। ॐ चन्द्रमसे नमः चन्दनं समर्पयामि।

तत्पश्चात – चंद्र को चावल (अक्षत) चढ़ाएं–

ॐ अक्षतं समर्पयामि।

तत्पश्चात – सफेद फूल चढ़ाएं–

ॐ पुष्पं समर्पयामि।

तत्पश्चात – दूध मलाई, मिठाई चढ़ाएं–

ॐ नैवेद्यं निवेदयामि।

चन्द्र ग्रह व्रत कथा

प्राचीन समय में मिथलेश पुरी नाम का एक राज्य हुआ करता था। उस राज्य में केदारनाथ नाम का एक वैश्य अपने परिवार के साथ रहता था। उसके परिवार में सात कन्याएं थीं। उसकी सातों पुत्रियां बहुत सुन्दर और गुणों से भरपूर थीं। उनका रूप-सौन्दर्य ऐसा था कि देखते ही मन को मोहित कर लेता था। जब केदारनाथ की पुत्रियां उम्र में छोटी थीं तब उसका व्यापार बहुत फल-फूल रहा था। उसका कपड़े का व्यापार था। व्यापार में उसको निरंतर लाभ हो रहा था। उसकी पत्नी आरती भी बहुत खुश थी। केदारनाथ अपना पत्नी और सातों पुत्रियों को बहुत स्नेह करते थे।

परन्तु जैसे-जैसे उसकी पुत्रियां यौवन की दहलीज पर आईं, केदारनाथ के व्यापार में घाटा होने लगा। वह अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए जितना प्रयत्न करते, उतना ही अधिक घाटा होता जाता था। पहले जब व्यापार अच्छा चल रहा था तब उन्हें पुत्रियों के विवाह की कोई चिंता नहीं थी, लेकिन लगातार होने वाले घाटे के कारण वे चिंतित रहने लगे।

मन ही मन सोचते कि - 'व्यापार में घाटा क्यों हो रहा है ? उन्होंने तो कभी किसी का दिल भी नहीं दुखाया ? दान आदि भी वे देते रहते थे ? फिर सोचते मेरे साथ ऐसा घाटा क्यों हो रहा है ?' इस विषय पर वह जितना अधिक सोचते, उतना ही घाटा और हो जाता।

केदारनाथ की सातों पुत्रियों में राजबाला सबसे अधिक गुणी थी। उसकी एक सहेली थी शीतला। शीतला एक ब्राह्मण कन्या थी। शीतला के पिता एक प्रकांड पंडित थे। ज्योतिष विद्या पर

उनकी पकड़ बहुत अच्छी थी। शीतला को भी ज्योतिष पर पूरा विश्वास था और वह भी अपने पिता के साथ ज्योतिष विद्या में निपुण हो गई थी। अपनी सहेली राजबाला की रुचि देखकर शीतला ने उसे भी ज्योतिष सिखा दी थी। राजबाला यह जानती थी कि उसके पिता को व्यापार में लगातार घाटा हो रहा है और इस कारण उनके पिता चिंतित रहते हैं।

अत: एक दिन राजबाला ने अपने पिता से कहा- 'पिताजी! मैं आपकी चिंता का कारण जानती हूँ। परन्तु इस तरह हाथ पर हाथ रखकर बैठने से कुछ नहीं होगा।' अपनी बेटी के मुंह से यह बात सुनकर केदारनाथ बोले-'मेरी समझदार, गुणी बेटी! मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा। तुम क्या कहना चाहती हो, खुलकर कहो?'

राजबाला ने कहा - 'पिताजी! आप यह तो जानते ही हैं कि मैं ज्योतिष विद्या में निपुण हूँ।' केदारनाथ बोले - 'हां बेटी! इसमें कोई शक ही नहीं है।' तब राजबाला ने कहा - 'पिताजी, फिर भी आपने मुझसे कभी भी अपने व्यापार के घाटे का कारण नहीं पूछा।'

यह सुनकर केदारनाथ ने पूछा - 'बेटी! क्या तुम जानती हो कि हमें व्यापार में घाटा क्यों हो रहा है?' राजबाला ने जबाव दिया - 'हां पिताजी! मैं जानती हूँ।' केदारनाथ ने कहा - 'फिर बताओ न बेटी। यह सब क्यों हो रहा है?'

राजबाला ने कहा - 'पिताजी! ज्योतिष विद्या की गणना कर मैंने आपके ग्रह देखे हैं। इस समय आपकी चंद्र ग्रह की दशा खराब चल रही है। चन्द्र ग्रह की कोप दृष्टि के कारण ही आपके व्यापार में इसी कारण से घाटा हो रहा है।' राजबाला के यह बताने पर केदारनाथ ने कहा -'बेटी! ऐसी बात है तो तब तो तुम चन्द्र

ग्रह को प्रसन्न करने के उपाय भी अवश्य जानती होगी?'

राजबाला ने उत्तर दिया – 'हां, मैं जानती हूँ पिताजी तभी तो मैंने आपसे इस विषय पर चर्चा की है।' केदारनाथ ने पूछा 'फिर बताओ बेटी, कि किसी प्रकार हम चंद्र ग्रह की कोप दृष्टि से बच सकते हैं?'

राजबाला ने जवाब दिया – 'पिताजी! चंद्र ग्रह की शांति का कोई मुश्किल उपाय नहीं है, बल्कि बहुत ही सरल उपाय है। इसके लिए आपको पांच सोमवार व्रत रखने होंगे। फिर उनका उद्यापन करना होगा, दान-दक्षिणा देनी होगी। इसी तरह के कुछ कार्यों के करने से ग्रह चाल ठीक होगी और आपका व्यापार पुनः फलने-फूलने लगेगा।'

अपनी पुत्र के द्वारा उपाय बताए जाने पर केदारनाथ अग्रवाल बोले – 'बेटी! यह तो बड़ा ही सरल उपाय है। कल ही तो सोमवार है। मैं कल से ही चंद्र ग्रह शांति व्रत शुरु कर दूंगा। परन्तु जब तुम्हें इतना सब पता है बेटी, तो मुझे इतना और बता दो कि इस व्रत को शुरु किस प्रकार किया जाए और उसका समापन किस प्रकार किया जाए? इसका उद्यापन किस प्रकार होगा तथा दान किन वस्तुओं का देना होगा?'

पिता की बात सुनकर राजबाला कुछ क्षण खामोश रही और फिर कुछ देर बाद सोचकर वह बोली – 'पिताजी- सबसे पहले चंद्र ग्रह को नमस्कार कर यह व्रत शुरु करना चाहिए। फिर मन ही मन में तीन बार इस प्रकार कहना चाहिए 'हे चंद्र ग्रह, आप हमसे क्यों नाराज हैं? हम तो आपके सेवक हैं। आपकी चाल से ही तो हम संपन्न रहते हैं। आज से हम आपका व्रत प्रारंभ कर रहे हैं, आपको हमारा नमस्कार है।' मन ही मन में इस प्रकार

कहकर व्रत शुरु करें। दिन अस्त होने से पूर्व ही व्रत खोल लें। व्रत खोलने के लिए केवल दूध का सेवन करें। यदि आवश्यकता हो तो कुछ फल भी ले सकते हैं।' यह कहकर राजबाला एक क्षण के लिए रुकी, फिर वह बोली – 'इस प्रकार पांच व्रत पूरे करने के पश्चात, छठे सोमवार को उद्यापन करें। उद्यापन में दूध से बने मिष्ठान, जितना मन करें, गरीबों में बांट दें। इससे चंद्र ग्रह प्रसन्न होंगे। दान-दक्षिणा में किसी योग्य ब्राह्मण को सफेद वस्त्र का दान दें, कुर्ता, धोती, कमीज, बनियान इत्यादि।' इतना बताने के बाद राजबाला बोली – 'बस पिताजी, चंद्र ग्रह की शांति का यही उपाय है। इसी उपाय के करने से ग्रह की चाल आपके विपरीत न जाकर आपके पक्ष में जाएगी और आपके सभी कार्य सिद्ध होंगे।'

तब केदारनाथ ने कहा – 'बेटी! आज तुमने मुझे इतना सब बताकर यह सिद्ध कर दिया, कि तुमने जो यह ज्योतिष विद्या सीखी है वह सीखना मानव कल्याण के लिए जरूरी ही नहीं अति आवश्यक है।

तभी अपने पिता की बात बीच में ही काटकर, राजबाला बोली – 'पिताजी! एक बात मुझे आपको और बतानी है।' केदारनाथ ने पूछा – 'वह क्या बेटी? तुम वह बात भी मुझे बता दो।' परन्तु राजबाला ने कहा – 'पिताजी! वह मैं आपको उद्यापन वाले दिन रात्रि में बताऊंगी।'

केदारनाथ बोले – 'बेटी! यदि अभी बता देती तो ज्यादा अच्छा रहता। वरना इतने दिन तक में यही सोच-सोचकर परेशान होता रहूंगा कि, न जाने तुम मुझे और क्या बताने वाली थी।'

पिता को परेशान और दुखी होते देख राजबाला ने उन्हें

समझाया-'पिताजी! प्रत्येक बात कहने और बताने का एक समय होता है और समय से पूर्व बताई गई बात निरर्थक सिद्ध हो जाती है। आप अपना कार्य मन लगाकर पूरा कीजिए, जब समय आएगा , मैं आपको वह बात स्वयं ही बता दूंगी।'

बेटी की बात सुनकर केदारनाथ खामोश हो गए। उसी रात्रि उन्होंने एक स्वप्न देखा। जो बात उनकी बेटी राजबाला उन्हें समय पर बताने की बात कर रही थी, वही बात वह उन्हें स्वप्न में बताते हुए कह रही थी- 'पिताजी! जिस दिन आप उद्यापन करें, उससे अगले दिन आपके द्वार पर सबसे पहले जो व्यक्ति आए, उसी से आप मेरा विवाह कर दीजिएगा। वह व्यक्ति चाहे जैसा भी क्यों न हो, उसी के साथ मेरा गठबंधन लिखा हुआ है। इस प्रकार आपको अपनी एक कन्या के विवाह से मुक्ति मिल जाएगी।' स्वप्न में ही केदारनाथ ने उत्तर दिया कि - 'बेटी! ठीक है, जैसा तुम कहती हो मैं वैसा ही करूंगा।' इसके पश्चात राजबाला स्वप्न से अदृश्य हो गई।

अगले दिन जिस प्रकार राजबाला ने अपने पिता को बताया था, उसी प्रकार केदारनाथ ने व्रत शुरु किए। समय बीतते हुए उनके पांचों व्रत पूर्ण हो गए, उद्यापन के दिन पूरे विधि-विधान से उन्होंने उद्यापन किया। बेटी के कहे अनुसार चंद्रदान हेतु बताई गई सफेद वस्तुएं और वस्त्रों ब्राह्मणों को दान किया। इतना सब करते हुए उन्हें मन में बहुत खुशी हो रही थी।

इधर कैलाश पर्वत पर भगवान शिव एक झटके से अपने आसन से उठकर खड़े हो गए। यह देखकर माता पार्वती ने पूछा 'प्रभु! क्या हुआ? आप अचानक ही क्यों उठ गए? क्या कहीं प्रस्थान करना है?'

भगवान भोलेनाथ बोले– 'हां देवी! हम पृथ्वी लोक जा रहे हैं। माता पार्वती ने पुनः पूछा–'पृथ्वीलोक! आज अचानक ही पृथ्वीलोक जाने का ख्याल कैसे आ गया प्रभु?' कैलाशपति बोले – 'देवी! लगता है तुम अपनी कोई बात भूल गई हो?'

यह सुनकर माता पार्वती थोड़ा चौंक गई, फिर मुस्कुराकर बोलीं – 'प्रभु! आप कहीं राजबाला की बात तो नहीं कर रहे हैं।' भगवान शिवजी ने कहा – 'हां देवी! हमारा आशय उसी तरफ है। पृथ्वी पर ग्रहों की पूजा करवाने के उद्देश्य से आपने अपनी छाया राजबाला के रूप में धरती पर छोड़ रखी है। वह उद्देश्य आज पूरा हो गया। अब वह समय आ गया है जब आपकी छाया को आपमें वापस आना है।'

माता पार्वती ने जवाब दिया – 'प्रभु! मुझे सब कुछ याद है, मैं कुछ भी नहीं भूली हूँ।' तब कैलाशपति बोले – 'तब चलिए देवी, हम प्रस्थान करें।' इस संवाद के बाद भगवान भोले शंकर और माता पार्वती पृथ्वी लोक के लिए प्रस्थान कर गए।

इधर पृथ्वी पर व्रत और उद्यापन पूर्ण होने के बाद केदारनाथ अग्रवाल को धैर्यपूर्वक बताते हुए राजबाला ने आगे कहा कि – 'और इस प्रकार आप मेरा विवाह उसी व्यक्ति से कर दीजिएगा।' केदारनाथ ने कहा – 'मगर बेटी।' राजबाला बोली – 'पिताजी मेरा ऐसा ही लेख लिखा है।' बेटी के मुंह से यह बात सुनकर केदारनाथ ने उसे अपने स्वप्न की बात भी बताई।

तब राजबाला ने कहा–'पिताजी! जो आपने मुझसे स्वप्न में सुना, वही यथार्थ में भी सुना। यही तो सच्चाई है जो कि आपको माननी है।'

उधर भोलेनाथ सुन्दर राजकुमार के भेष में थे। माता–पार्वती

उनके साथ अदृश्य रूप में थीं। पृथ्वी पर सुबह अभी हुई थी कि भोलेनाथ ने केदारनाथ के मकान का द्वार खटखटाया दिया। द्वार स्वयं केदारनाथ ने खोला।

सुबह-सुबह एक सुंदर युवक को दरवाजे पर खड़ा देख वे चौंक पड़े। उन्होंने पूछा-'श्रीमान आप कौन हैं?' सुंदर युवक ने कहा-'प्रणाम।' तब केदारनाथ ने जवाब में कहा-'प्रणाम।' तब वह सुंदर युवक बोला-'हमारा नाम शिव है। हम आपकी पुत्री राजबाला से विवाह करने आए हैं। 'केदारनाथ ने उस युवक से कहा-'आप।'

तब वह सुन्दर युवक बोला- 'श्रीमान! आप निश्चिंत रहें। आपकी पुत्री को हमारे साथ कोई दुख नहीं होगा। ऐसा हम आपको विश्वास दिलाते हैं।' तभी राजबाला वहां आ पहुंची। चूंकि राजबाला तो माता पार्वती की छाया थी। वह माता पार्वती में समा गई। पार्वती अब राजबाला के रूप में दिखाई दे रही थीं।

केदारनाथ ने राजबाला का हाथ शिवशंकर के हाथ में दे दिया। बेटी को विदा करते हुए उनकी आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे। मगर वह यह क्या जानते थे कि - 'जो उनकी बेटी के रूप में बचपन से रह रही है, वह तो माता पार्वती की छाया थी।' थोड़ी दूर तक तो शिव शंकर और माता पार्वती जाते हुए दिखाई देते रहे, फिर वे अदृश्य हो गए।

केदारनाथ का व्यापार उसी दिन से फिर चल पड़ा। उनका व्यापार खूब फलने-फूलने लगा। उन्होंने फिर सभी लोगों को चन्द्र ग्रह की विपरीत चाल से बचने के व्रत, कथा विधि के विषय में खूब प्रचार किया। इससे भी चन्द्र ग्रह ने और प्रसन्न होकर उनके व्यापार की खूब उन्नति की।

मंगलदेव का परिचय

मंगलदेव भारद्वाज गोत्र, क्षत्रीय वर्ण के हैं। मंगलदेव अवंतिका के स्वामी, इनका आकार अग्नि के समान रक्तवरण है। इनका वाहन मेष है, रक्त वस्त्र धारण किए हुए गले में मूंगे की माला सुशोभित है। हाथों में शक्ति अभय गदा एवं वरमुद्रा रहती है। इनके अंग प्रत्यंग में कांचनकांति की धारा छलकती है। मेष के रथ पर सुमेरू की प्रदक्षिणा करते हुए अपने अधिदेवता स्कंध एव प्रत्यदि देवता पृथ्वी के साथ सूर्य के अभिमुख चलते हैं।

सौर परिवार में बुध, शुक्र, पृथ्वी के बाद मंगल का स्थान आता है। मंगल प्रत्येक 15 वर्षों के बाद पृथ्वी के सर्वाधिक निकट आ जाता है तथा जब सूर्य के पास आता है तो उसकी गति तीव्र हो जाती है।

इसकी पृथ्वी से सामान्य दूरी लगभग 6,25,00,000 मील तथा सूर्य से 22.56 करोड़ किलोमीटर है। यह 6755 किलोमीटर व्यास का ठोस ग्रह है जो हल्के लाल रंग के प्रकाश से चमकता है। मंगल भी सूर्य की परिधि में घूमने वाला ग्रह है तथा जिस प्रकार पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर लगाने में 365 दिन और 6 घंटे का समय लगाती है ठीक उसी प्रकार मंगल सूर्य का एक चक्कर लगाने में 686 दिन और 6 घंटे का समय लगाता है। मंगल भी सूर्य के चारों ओर घूमने के दौरान कभी-कभी वक्री अर्थात विपरीत दिशा में लौटने लगता है। यह 15 मील प्रति सेकंड की चाल से भ्रमण करता है यानी 54000 किलोमटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलता है। इसका विषुवतीय व्यास लगभग 4200 मील

माना गया है।

पृथ्वी की भांति यह ठोस और पथरीले पदार्थों से बना है। इसकी मिट्टी हल्के गुलाबी रंग की है तथा इसके चारों ओर गैसों का मिश्रण (वायुमंडल) भी है। पृथ्वी से काफी समानता के कारण इस ग्रह पर जीवन की कल्पना की जाती रही है मगर ऑक्सीजन और पानी की कमी के कारण वहां जीवन असंभव है।

मंगल ग्रह को पापी ग्रह माना जाता है। यह पुरुष जाति, लाल रक्त वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी है, अग्नि तत्व तथा प्रकृति से पित्त प्रकृति रखने वाला ग्रह है। धैर्य, पराक्रम, पुरुषार्थ, उग्रता का स्वामी, भाइयों का कारक, संतान उत्पन्न करने की क्षमता उत्पन्न करने वाला, रक्त, मांस, मज्जा का नियामक ग्रह है। तृष्णा और किसी भी प्रकार की उत्तेजना को जन्म देता है। सामान्य अवस्था में दुखदायी बना रहता है।

ज्योतिष में मंगल ग्रह बली और दृढ़ देह, लघु कद, पतली कमर, पिंगल नेत्र, छोटे घुंघराले और चमकीले बाल, लाल वस्त्र धारण करने वाला, पुरुष, क्षत्रिय पृष्ठोदयी, चतुष्पाद, अग्नितत्व, पित्त प्रकृति, तमोगुणी, उग्र, उष्ण, क्रूर, क्रोधी एवं कामी स्वभाव, शूर, शौर्य और पराक्रम द्योतक, रात्रि, ग्रीष्म ऋतु, दक्षिणायन, दक्षिण दिशा, कुंडली के दशम भाव तथा शत्रु राशि में बली होता है। यह एक राशि में डेढ़ मास रहता है।

यह राशि के प्रथम द्रेषकाण में अपने फल देता है और अपनी युति या दृष्टि से बुध, शनि और राहु तीनों के दोष शांत करता है। इसकी दृष्टि अपने स्थान से 4, 7, 8 स्थानों पर होती है। इससे दृष्ट ग्रह और भाव अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त करते हैं और अपने शुभ

या अशुभ फलों में वृद्धि करते हैं।

यह कंठ, कर्ण, रक्त, मांस, मज्जा, मांसपेशियों, लाल रंग की वस्तुओं–ताबा, सोना, मिर्च, मक्का, मसूर, की दाल, गेहूँ, लाल कपड़ा, तीखा स्वाद, बल, यौवन, काम, साहस, शौर्य, पराक्रम, बाहुबल, देहबल, युद्धक्षेत्र, पुलिस, फौज, हथियार, अग्नि, अग्निस्थान, रसोई, भट्टी, इंजन, घर, जमीन–जायदाद, सूखा, भूकंप, प्रकोप का कारक है।

मंगल के समय में लिया गया ऋण जीवन भर नहीं उतरता है। मंगलवार के दिन (मंगल की होरा और मंगल के नक्षत्र (मार्गशीर्ष, चित्रा, धनिष्ठा) में ऋण प्राप्त न करें, बल्कि ऋण का भुगतान करें तो ऋण आसानी से और समय से पहले चुकता हो जाएगा।

लग्न कुंडली में 1, 2, 4, 7, 8 अथवा 12वें भाव में मंगल स्थित हो तो मांगलिक या कुज दोष होता है। यह दोष भंग न होने पर दाम्पत्य जीवन अनावश्यक समस्याओं और व्यवधानों से कष्ट भोगता है और किसी अन्य अशुभ प्रभाव के प्रबल होने पर एक–दूसरे के जीवन को अरिष्टकारी होता है। अत: कुज दोष के निवारण हेतु वर और वधु दोनों का मांगलिक होना आवश्यक है।

श्री मंगल ग्रह शांति हेतु मंत्र, जपानुष्ठान, दानोपाय की विधि

1. परिचय: दक्षिणे त्रिकोण मंडल अंगुल 3, अवंति देशोद्भव, भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण। दान पदार्थ : मूंगा, मसूर, गेहूँ, रक्तवृषभ, गुड़, स्वर्ण, रक्तवस्त्र, रक्तचन्दन, केसर, कनेर, पुष्प ताम्र।

2. जपनीय अकाक्षरी मंत्र – **ॐ अं अंगारकाय नमः।**

3. जपनीय बीज मंत्र – **ॐ हूँ श्रीं भौमाय नमः।**

4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र– **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।**

5. जपनीय वैदिक मंत्र :

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽऽअयम्।
अपाꣳरेतांꣳसिजिन्वति।।

6. गायत्री मंत्र :

ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि
तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

7. जप संख्या/समय: 10,000 / सूर्योदय से 2 घटी तक

8. समिधः / औषधि : खदिर /अनन्तमूलं

9. अन्य उपाय: रुजजप

10. रत्न/उपरत्न दान : मूंगा/विद्रुममणि, लाल अकीक

11. धातु/न्यूनतम वजन : स्वर्ण या तांबा / 6 रत्ती

12. मंगल ग्रह वाली उंगली : अनामिका

13. मंगल के नक्षत्र : मृग.,चित्रा, अनु., धनिष्ठा

14. जाप करने के वार/समय : मंगलवार, प्रथम प्रहर

15. पुराणोक्त स्तवन –

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

श्री मंगल ग्रह का संपूर्ण विवरण

मंगल को काल पुरुष का पराक्रम माना गया है। जो कि कर्म के फलस्वरूप ही प्राप्त होता है। इसके संबंध में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं –

रत्नदान	मूंगा
उपरत्नदान	लाल हकीक
संचार समय	$1^1/_2$ माह
समय	मध्याह्न
स्वभाव	क्रूर, उग्र व कामुक
समिधा	खादिर (खैर)
पुष्प	लाल कनेर
गुण	तमोगुण
अंग्रेजी नाम	मार्स
स्वामित्व	मेष, वृश्चिक राशि पर
मूल त्रिकोण	मेष
उच्च राशि	मकर
नीच राशि	कर्क
वर्ण	लाल
जाति	क्षत्रिय
आकृति	त्रिकोण
दृष्टि	4, 7, 8
मित्र ग्रह	4, 7, 10
शत्रु ग्रह	बुध, राहु
सम ग्रह	शुक्र, शनि
काल पुरुष के शरीर में स्थिति	कंठ, गला
भाव का कारकत्व	तृतीय, षष्ठ
विचारणीय विषय	भ्राता, स्वाभिमान, भूमि
कार्य	पराक्रम आदि

दिशा	दक्षिण
धातु	तांबा
लिंग	पुरुष
तत्व	अग्नि
ऋतु	ग्रीष्म
प्रतिनिधि पशु	रक्तवर्ण का बैल
अवस्था	युवा, तारुण
स्वरूप	कृशकाय
प्रकृति	पित्त
गोत्र	भरद्वाज
वाहन	मेढ़ा
राज्याधिकार	सेनापति
कद	छोटा
पराभव	शनि से पराजित
बली	रात्रि में
स्वाद	तीखा
वार	मंगलवार
शरीर में प्रभाव	पेट से पीठ तक
निसर्गबल	शुक्र से अधिक बली
संज्ञा	पापी, अशुभ
क्रीड़ा स्थल	दग्धा भूमि
स्थान	पर्वत या वन
शुष्कता	महांशुष्क
दोष शमन	राहु, बुध व शनि का
शुभाशुभ	अशुभ

देश	अवंति
देवता	कार्तिकेय
दान पदार्थ	मूंगा, मसूर, लाल बैल, गेहूँ, गुड़, तांबा, स्वर्ण, लाल वस्त्र व लाल कनेर के फूल
रोग	गुप्त रोग, पित्त विकार, सिरदर्द, जलना, गिराना, सूखा, रोग, उदर विकार, रक्त विकार, चोट, एपिपिंडसाइटिस, दुर्घटना आदि
रुचि	शस्त्र विद्या, विवाद
भाग्योदय काल	28–32 वर्ष तक
जड़ी	अनन्तमूल
दान का समय	प्रातः 48 मिनट तक (सूर्योदय के बाद से)
मंडल	त्रिकोण
भाग	उभय
विचारणीय विषय	पराक्रम, रोग, भाई, भूमि, शत्रु, तलाक, विद्रोह आदि
विद्या	युद्धशास्त्र, शस्त्र विज्ञान, विस्फोटक शस्त्र, सैन्य विज्ञान
दीप्तांश	8 अंश

दृष्टि	ऊर्ध्व
शरीर में कारक	मांस व मज्जा
काल समय	दिन

मंगल की शांति के चमत्कारी उपाय

1. मंगल को शक्तिशाली बनाने के लिए 'मंगलयंत्र' धारण करें।
2. मंगल पीड़ा की विशेष शांति हेतु बेलफल, जटामांसी, मूसली, बकुलचन्दन, बला, लाख पुष्प एवं हिंगलू इन आठ औषधियों को मिलाकर 8 मंगलवार तक स्नान करें।
3. ऋण निवृत्ति की इच्छा के साथ जिस जातक को धन संग्रह की कामना हो तो 'मंगल यंत्र' की उपासना के साथ मूंगा मोती की अंगूठी तांबे में धारण कर करें, लक्ष्मीजी की कृपा हो जाएगी।
4. हरिवंश पुराण के अनुसार जातक को महारुद्र या अतिरुद्र यज्ञ कराना चाहिए।
5. मंगल यंत्र की आराधना अवश्य करें। निर्दोष मूंगा की अंगूठी धारण करें एवं यथाशक्ति गुड़ का दान भी हितकारी सिद्ध होता है।
6. लक्ष्मी स्तोत्र, देवी कवच, गणपति स्तोत्र अथवा ऋण मोचन मंगल स्तोत्र में से किसी भी एक का नियमित वाचन करें।
7. देवी भगवती की सप्तशती का पाठन अथवा श्रवण करें।
8. महागायत्री का पाठ करना, हनुमानजी को सिन्दूर लगाना एवं खुद भी हनुमानजी के पैरों में रखे हुए सिन्दूर से

मंगल प्रसन्न होते हैं।

9. मंगल अशुभ हो तो रेवड़ियां (गुड़+तिल) जल में 108 मंगल प्रवाहित करें।
10. मंगलकृत अरिष्ट निवारणार्थ मंगलव्रत सहित मंगल मंत्र का विधिवत् अनुष्ठान करना चाहिए।
11. मंगल की दशांतर्दशा में आचार्य शंकरकृत सुब्रमण्यम् भुजंगस्तोत्र या कार्तिकेय स्तोत्र का पाठ एवं कुमार कार्तिकेय की पूजा लाभदायक रहती है। इसके साथ 11 प्रदोष तिथियों में रुद्राभिषेक करना चाहिए।
12. यदि वंश वृद्धि में मंगल अवरोध हो तो वंश वृद्धि के लिए 'मंगल यंत्र' प्राण-प्रतिष्ठित कर उसका विधिवत् जप और पूजन करें।
13. रक्त पुष्पों से मंगल की पूजा 'तब जनक पाए वशिष्ठ आयसु हंकारि के' के इस संपुट के साथ तुलसी रामायण के सुन्दरकांड का पाठ, गौरी पूजन सहित अभीष्टप्रद है। अथवा मंगल कवच का दैनिक एक वर्ष तक पाठ करें।

मंगल कवचम्

अस्य श्रीमंगलकवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः। अनुष्टुप छंदः।
अंगारकी देवता। भौमपीड़ापरिहारार्थ जपै आराधनो विनियोगः।।
रक्तांबारो रक्तवपुः किरीट चतुर्भुजो मेषगमो कदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा ममै स्याद्वरदः प्रशांत।।
अंगारकः शिरोरक्षेन्मुखं वै धरणीसुतः।
श्रवौ रक्तांबरः पातु नेत्रौ में रक्तलोचनः।।
नासां शक्तिधरः पातु मुखं में रक्तशोभनः।

भुजौ में रक्तमाली च हस्तौ शक्तिधरस्तथा।।
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं पातु लोहिताः।
कांति में ग्रहाराजश्च मुखं चैव धरासुतः।।
जानुजंघे कुजः पातु पादो भक्तप्रियः सदा।
सर्वाण्यन्यानि चांगनि रक्षेम्मे मेषवाहनः।।
य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम्।
भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदम्।।
सर्वरोगहरं चैव सर्वसंपत्प्रदं शुभम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं नूणां सर्वसौभाग्यवर्धनम्।।
रोगबंधविमोक्षं च सत्ययेनान्य संशयः।।

ॐ इति श्री मार्कण्डेय पुराणे महांमंगलाष्टके अरिष्ठबिनाशन मंगलकवचं संपूर्णम्।।

मंगल मंत्र

यह आवश्यक है कि आराधक को सदैव मंगल मंत्रों का जाप श्रद्धा, विश्वास और विधि के अनुसार करना चाहिए। मंगल के वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक मंत्र निम्नलिखित हैं -

वैदिक मंत्र -

ॐ अग्निमूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽऽअयम्।
अपाꣳरेताꣳसिजिन्नवति। ॐ भौमाय नमः।।

तांत्रिक मंत्र - **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।**

पौराणिक मंत्र - **ॐ अं अंगारकाय नमः।**

उपरोक्त मंगल मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नियमित रूप से विधिवत जप करके मंगल पीड़ा का निवारण कर सकते हैं। अशुभ मंगल फल को अनुकूल बना सकते हैं। मंगल मंत्र

अल्पमत 10000 जपें जबकि अधिकतम 40000 जपने से पूर्ण फलदायी होते हैं।

श्री मंगल अष्टोत्तर शत नमस्कार नामावली

ॐ महीसुताय नमः
ॐ महावीराय नमः
ॐ महाभद्राय नमः
ॐ अपवर्णाय नमः
ॐ सुताम्राक्षाय नमः
ॐ सुखप्रदाय नमः
ॐ क्षत्रपाय नमः
ॐ विचक्षणाय नमः
ॐ विज्वराय नमः
ॐ वन्दारुजनमान्दाराम नमः
ॐ कनत्कनकभूषणाय नमः
ॐ शत्रहन्ते नमः
ॐ सद्गुणाध्यक्षीय नमः
ॐ महाभागाय नमः
ॐ महाशूराय नमः
ॐ माननीयाय नमः
ॐ सुप्रतीपाय नमः
ॐ वक्रस्तंभादिगमनाय नमः
ॐ वीरभद्राय नमः
ॐ क्षमायुक्ताय नमः
ॐ क्षमाशीलाय नमः
ॐ मंगलाय नमः
ॐ महाबलपराक्रमाय नमः
ॐ दयाकराय नमः
ॐ तापत्रयविवर्जिताय नमः
ॐ विभावसवे नमः
ॐ वरेण्याय नमः
ॐ क्षयवृद्धिविनिर्मुक्ताय नमः
ॐ चतुर्वर्गफलप्रदाय नमः
ॐ नक्षत्रराशिसझराशय नमः
ॐ कमनीयाय नमः
ॐ भव्यफलदाय नमः
ॐ शरणागततोषणाय नमः
ॐ समरदुर्जयाय नमः
ॐ मंगलप्रदाय नमः
ॐ महारौद्राय नमः
ॐ क्रूराय नमः
ॐ सुब्रह्मण्याय नमः
ॐ वरदाय नमः
ॐ विदूरस्थाय नमः
ॐ नक्षत्रचक्रसंचारिणे नमः
ॐ अक्षीणफलदाय नमः

ॐ वक्राकुञ्चितमुर्द्धजाय नमः
ॐ विश्वकारणाय नमः
ॐ दयासाराय नमः
ॐ भक्ताभयवरप्रदाय नमः
ॐ साहसिने नमः
ॐ शिष्टपूजन्याय नमः
ॐ दुष्टावारकाय नमः
ॐ दुष्टागर्वविमोचनाय नमः
ॐ रक्तांबराय नमः
ॐ गदाधारिणे नमः
ॐ शक्ताय नमः
ॐ तपस्विने नमः
ॐ गोत्राऽधिदेवाय नमः
ॐ अंगारकाय नमः
ॐ थूने नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ शुभावहाय नमः
ॐ सुखप्रदाय नमः
ॐ वीतभमाय नमः
ॐ सर्वकष्टनिवारकाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ भरद्वाजकुलोभ्दूताय नमः
ॐ रक्तवपुषे नमः
ॐ मेषवाहाय नमः
ॐ शस्त्रविद्याविशारदास नमः
ॐ विश्वकारणाय नमः
ॐ नानाभयनिकृन्तनाय नमः
ॐ भयध्नाथ नमः
ॐ शमोपेताय नमः
ॐ साधवे नमः
ॐ दुर्धराय नमः
ॐ दुःस्वप्नहंत्रे नमः
ॐ भूसुताय नमः
ॐ भक्तपालनतत्पराय नमः
ॐ मिताशनाय नमः
ॐ कार्तिकाय नमः
ॐ तप्तकाञ्चनसंकाशाय नमः
ॐ गुणाविभूषणाय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ त्रिकोणमंडलगताय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ मेघाविने नमः
ॐ सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः
ॐ दुष्टदूराय नमः
ॐ दुखभजनाय नमः
ॐ दुर्घर्षाय नमः
ॐ भव्यभूषणाय नमः
ॐ चतुर्भुजाय नमः
ॐ शक्तिशूलधराय नमः
ॐ तामसाधाराय नमः

ॐ ताम्रलोचनाय नमः
ॐ रक्तकिंजल्कसन्निभाय नमः
ॐ गोमध्यचराय नमः
ॐ असृजे नमः
ॐ अवन्तीदेशाधीशाय नमः
ॐ सूर्ययाम्यप्रदेशस्थाय नमः
ॐ याम्यहरिन्मुखाय नमः
ॐ त्रिदशाधिपसन्नुताय नमः
ॐ शुचिकराय नमः
ॐ शुचिवश्याय नमः
ॐ मेषवृश्चि कराशीषाय नमः
ॐ मितभाषणाय नमः
ॐ सुरूपाक्षाय नमः
ॐ माननीयाय नमः

मंगल ग्रह पूजन विधि

जातक का जब मंगल ग्रह खराब हो तो वे सबसे पहले मंगल ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और यह मंत्र पढ़ें –

विनियोग – ॐ अग्नि मूर्धेति विरूपाक्ष ऋषि गायत्री छन्दों अंगारको देवता भौमाऽ वाहने विनियोगः।।

ध्यान – लाल फूल लेकर मंगल का ध्यान करें।

रक्ताम्बरो रक्तवपु किरीटी चतुर्भुजो मेष गामो गदाधर।
धरासुतः शक्ति धरश्च शूली सदाभय
स्याद्वरदः प्रशान्तः इतिध्यानं समर्पयामि।
श्री भौमाय नमः।

कहकर फूल छोड़ दें तत्पश्चात मंगल को जल चढ़ाएं।

ॐ शुद्धोदकं जलं स्नानीतं स्नानं प्रतिगृहताम्।

मंगल ग्रह के दान की वस्तुएं

मूंगा, सोना, तांबा, मसूर, गुड़, घी, लाल वस्त्र, लाल कनेर के फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, प्रवाल, गेहूँ।

बीज मंत्र - **ॐ अं अंगारकाय नमः।**

तांत्रिक मंत्र - **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।**

वैदिक मंत्र -

ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽऽअयम्।
अपाꣳऽꣳरेता ꣳसिजिन्वति।। ॐ भौमाय नमः।।

मंगल ग्रह व्रत कथा

तीव्र गति से दौड़ता हुआ एक रथ महर्षि गर्ग के आश्रम की ओर बढ़ रहा था। रथ आश्रम में बने विशाल वन में जाकर रुका। जहां पर महर्षि गर्ग समाधि में लीन बैठे हुए थे।

रथ में से उतरे राजा नीलेश्वर ने महर्षि गर्ग के सामने जाकर कहा - 'प्रणाम गुरुदेव। गुरुदेव ने आंखें खोलते हुए हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया और कहा - 'प्रणाम। बैठिए राजन, अपने आने का कारण बताइए।' राजा ने कहा - 'गुरुदेव-आप तो हमारे बारे में सब कुछ जानते ही हैं। हम अधर्म का नाश और धर्म को प्रोत्साहित करने वाले हैं, परन्तु कुछ समय से हमारे राज्य में कुछ अनहोनी घटनाएं जन्म ले रही हैं।'

राजा की बात सुनकर महर्षि गर्ग बोले - 'राजन! कृपया सब कुछ साफ-साफ बताएं कि आप कहना क्या चाहते हैं?' राजा ने कहा - 'जो आज्ञा गुरुदेव।' और राजा, महर्षि गर्गजी को विस्तार से बताने लगे। वे बोले - 'गुरुदेव! आज से चन्द रोज पहले गांव में एक साधु महाराज आए थे। उन्होंने गांववासियों को बताया कि गांव पर मंगल ग्रह का प्रकोप होने वाला है। ग्रामवासियों के पूछने पर साधु ने बताया था। महर्षि गर्ग ने पूछा - 'क्यों होने वाला है?'

राजा ने कहा – 'इसलिए गुरुदेव! कि वह गांव मेरे अधीन है और मेरे ग्रहों में से मंगल ग्रह का प्रकोप मुझ पर होने वाला है तथा मेरे सबसे ज्यादा नजदीक होने के कारण मंगल का प्रकोप ग्रामवासियों पर भी होगा।'

यह सुनकर महर्षि गर्ग बोले – 'राजन! तब साधु महाराज ने उपाय भी बताया होगा।' राजा ने उत्तर दिया – 'जी गुरुदेव! उन्होंने उपाय भी बताया था।' महर्षि गर्ग ने पूछा – 'राजन! उन्होंने क्या उपाय बताया था?

जवाब में राजा ने कहा कि – 'गुरुदेव! उन्होंने कहा कि मुझे सात दिन तक अपनी रानी से दूर रहकर, सात व्रत करने होंगे। सात दिन तक केवल फल ही ग्रहण करने होंगे। दिन में केवल एक समय ही अन्न ग्रहण कर सकता हूँ और साथ ही सात ब्राह्मणों को भोजन का दान भी देना होगा तथा गाय के दूध में तुलसी मिलाकर सारे राज्य में बंटवाना होगा।'

तब महर्षि गर्ग ने कहा –'हे राजन! इसमें रुकावट क्या है, ये सब उपाय तो आपके लिए साधारण से हैं। इन उपायों को शीघ्र पूर्ण कर, अपने राज्य पर आने वाली विपत्ति को दूर कर दीजिए।'

राजा ने जवाब में कहा – 'गुरुदेव! वह सब तो मैं करूंगा ही, परन्तु मेरी समस्या यह है कि मैं अपनी रानी को वचन दे चुका हूँ कि मैं एक पल के लिए भी उससे कभी दूर नहीं होऊंगा। अब आप ही कोई उपाय कीजिए, गुरुदेव।'

महर्षि गर्ग ने राजा की बात सुनकर कुछ देर सोच-विचार किया, फिर बोले – 'राजन! मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ। तुम उस कथा को ध्यानपूर्वक सुनकर, उसे अपनी रानी को सुनाना

और सात दिन तक इस कथा को अपनी रानी के साथ बैठकर इस पर मनन करना। इसके पश्चात साधु द्वारा बताई गई विधि-विधान से व्रत पूरे करना व दान करना। ऐसा करने से तुम्हें अपनी रानी से भी दूर नहीं रहना पड़ेगा और मंगल ग्रह का प्रकोप का भी निवारण हो जाएगा। अब आप कथा सुनें -

कथा उस समय से आरंभ होती है जब ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी, परन्तु पृथ्वी बांझ थी। अर्थात पृथ्वी के कोई संतान न थी। तब पृथ्वी ने भगवान त्रिलोकनाथ की पूजा-अर्चना प्रारंभ की, परन्तु उस पूजा का फल पृथ्वी को नहीं मिला। तब पृथ्वी ने भगवान शिव की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न करने का विचार किया और तपस्या में लीन हो गई। पृथ्वी की कठिन तपस्या के उपरांत, भगवान शिव प्रसन्न हुए और पृथ्वी को पुत्रवती होने का वरदान दिया।

तभी एक बिजली सी कड़की और भगवान शंकर की कृपा से पृथ्वी की गोद में एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ। पुत्र को देखकर पृथ्वी को असीम प्रसन्नता हुई, तभी भोलेनाथ अन्तर्धान हो गए।'

पृथ्वी ने अपने पुत्र का नाम मंगल रखा। मंगल की शिक्षा-दीक्षा का भार भी पृथ्वी के कंधों पर था। पृथ्वी पूरे मनोयोग से अपने शिशु की परवरिश कर रही थी और इधर मंगल, वह जब आठ वर्ष का हुआ तभी से भगवान भोलेनाथ की आराधना में लीन हो गया। अपनी तपस्या से भोलेशंकर को प्रसन्न कर वह (मंगल) उनके दर्शन करना चाहता था। पृथ्वी इसके पास खाना लेकर जाती और उसे दुलारती हुई, खाना खाने के लिए कहती, लेकिन मंगल तपस्या में लीन रहता। इससे पृथ्वी दुखी हो जाया

करती। बाद में जब मंगल तपस्या से उठता तो मां (पृथ्वी) से कहता - 'मां! बड़ी तेज भूख लगी है। जल्दी से मुझे खाना दे दो।' पृथ्वी खाना खिलाती और मंगल को लाड़ प्यार करती।

इसी प्रकार समय व्यतीत होता गया। मंगल रोजाना भगवान भोलेनाथ की आराधना करता रहा। मंगल जवान हो गया, मगर उसे भोलेनाथ के दर्शन नहीं हुए। इससे वह दुखी हो गया और फिर उसने (मंगल) काशी जाकर भोलेनाथ की आराधना में जुट जाने का निश्चय किया। पृथ्वी भी अपने पुत्र के साथ काशी पहुंची और दोनों भगवान शंकर की आराधना करने में लग गए।

वातावरण में 'ॐ नमः शिवाय' की ध्वनि गूंजने लगी।

इस प्रकार मंगल का कुछ समय आराधना करते बीता। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान भोलेनाथ ने मंगल को साक्षात दर्शन दिए और कहा, आंखें खोल वत्स।' मंगल ने आंखें खोलीं और सामने देखा। सामने भगवान भोलेनाथ को देखकर मंगल खुशी से दमक उठा और उसके मुंह से निकला - 'प्रभु।'

पृथ्वी की आंखों में हर्ष के आंसू झिलमिलाने लगे। फिर दोनों मां-बेटे ने उठकर भगवान भोलेनाथ के चरण स्पर्श किए और हाथों को मस्तक से लगाया।

भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर कहा, 'पुत्र मंगल! एवं पुत्री पृथ्वी! हम तुम दोनों की तपस्या से प्रसन्न हुए। हम तुम्हें कोई वरदान देना चाहते हैं। मांगों, क्या मांगना चाहते हो?'

मंगल ने कहा-'प्रभु। हमें तो आपके दर्शन हो गए, हम धन्य हुए। हमें और कुछ नहीं चाहिए।' मगर भोलेनाथ ने कहा- 'वत्स! फिर भी हम देना चाहते हैं। मंगल को हम नक्षत्र लोक में स्थान दे रहे हैं।'

यह सुनकर पृथ्वी बोले – 'प्रभु।' भगवान भोलेनाथ ने कहा – 'पृथ्वी! तुम्हें दुखी होने की जरूरत नहीं। तुम्हारा पुत्र मंगल ग्रह बनकर चमकेगा। समस्त मानव जाति इसकी पूजा करेगी।' पृथ्वी ने कहा – 'प्रभु! किन्तु मेरा पुत्र तो मुझसे दूर हो जाएगा।'

भगवान शंकर ने उत्तर दिया – 'तुम ऐसा क्यों सोचती हो पृथ्वी! पहले जरा यह देख तो लो कि तुम्हारे पुत्र मंगल को हमने कहां स्थान दिया है।' फिर भगवान भोलेनाथ ने मंगल से कहा – 'चलो मंगल, तुम अपना स्थान ग्रहण करो।' यह कहकर प्रभु ने दाहिना हाथ सीधा किया। दाहिने हाथ में से लाल रंग की अद्‌भुत किरणें निकलीं, जो मंगल को अपने घेरे में लेकर अंतरिक्ष में पहुंच गईं। थोड़ी देर बाद भोलेनाथ पुनः बोले – 'देखो पृथ्वी, मंगल ग्रह तुम्हारे चारों और चक्कर काट रहा है। अतः तुमसे दूर होते हुए भी वह दूर नहीं है। तुम जब चाहो उसे पुकार सकती हो। मंगल तुम्हें दिखाई देगा। इस प्रकार मां से बेटा दूर भी नहीं होगा और अपना कार्य करता रहेगा।

भोलेनाथ के मुख से यह सुनकर पृथ्वी बोली – प्रभु! मुझे क्षमा करें। ममता के आवेग में मैं दुखी हो गई थी। मेरा मंगल नक्षत्र लोक में ग्रह बनकर चमक रहा है। एक मां को इससे बड़ी और क्या खुशी हो सकती है। मेरे तो भाग्य खुल गए।' यह कहते हुए पृथ्वी का गला रुंध गया और उसकी आंखों में खुशी के आंसू दमकने लगे।

तभी भगवान भोलेनाथ अन्तर्धान हो गए। पृथ्वी ने अपने पुत्र मंगल को पुकारा, तो ग्रह लोक में मंगल उसे नजर आया। मंगल ने कहा – 'बोलो माते!' आपने मुझे कैसे याद किया।' पृथ्वी ने कहा – 'ऐसे ही बेटा! मैं देखना चाहती थी कि मेरे पुकारने पर

तुम आते भी हो अथवा नहीं।' मंगल ने उत्तर दिया – 'ऐसी बात कभी भी नहीं सोचना माते, पहले ही यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि मैं आपसे दूर नहीं हूँ।' इतना कहकर मंगल अतर्धान हो गया।

यह कथा सुनाकर महर्षि गर्ग बोले – 'हे राजन! यह कथा मैंने आपको इसलिए सुनाई है ताकि आप वचन का पालन करते हुए अपने व्रत पूरे कर सकें।' फिर महर्षि गर्ग ने कथा समाप्त करके कहा – 'राजन! यह कथा जाकर अपनी रानी को सुना देना, जब आपकी रानी इस कथा को सुन लेगी, तो उन्हें इस बात का ज्ञान हो जाएगा कि परोपकार की भावना से जो सहस्त्रों गुणा अधिक महत्व पुण्य कर्मों का होता है। हे राजन! जब आप अपनी रानी को यह सब बताएंगे तो रानी आपको स्वयं ही आपके दिए वचन से मुक्त कर देगी।'

महर्षि गर्ग के वचन सुनकर, राजा ने कहा – 'गुरुदेव! आपने हमारी एक बहुत बड़ी समस्या का निदान कर दिया। हम आपकी यह पावन बातें सदैव याद रखेंगे और जनता में भी इन्हें प्रचारित करेंगे।'

महर्षि गर्ग ने कहा – 'अब जाओ राजन! मंगल ग्रह को प्रसन्न करने के उपाय करो, शास्त्र कहते हैं राजन कि शुभ कार्यों में देरी नहीं करनी चाहिए।' और फिर इस प्रकार महर्षि गर्ग से अनमोल वचन प्राप्त कर राजा नीलेश्वर अपने रथ पर सवार होकर राजमहल वापस लौट आए।

राजमहल पहुंचकर, राजा नीलेश्वर ने, महर्षि गर्गजी ने सुनी कथा और मंगल ग्रह के प्रकोप की बात रानी को बताकर कहा– 'प्रिय! अब आप ही हमें बताएं कि, हमें ऐसी स्थिति में क्या

करना चाहिए?'

रानी रूपमती अत्यन्त गुणी थी। अत: अपने पति की समस्या को समझते हुए वह बोली - 'स्वामी! महर्षि गर्गजी ने तो सात दिन तक इस समस्या पर विचार करने के लिए कहा था, परन्तु मैंने तो अभी निर्णय ले लिया है।' राजा नीलेश्वर ने पूछा - 'आपने क्या निर्णय लिया?'

रानी रूपमती बोली - 'स्वामी! जिस प्रकार पृथ्वी अपने पुत्र मंगल से दूर होते हुए भी दूर नहीं है। उसी प्रकार सात दिन तक मैं आपकी यादों के सहारे, आपसे दूर नहीं रहूँगी, आपकी याद मुझे आपके पास रखेगी और मैं आपके दिए वचन से आपको प्रजा के हित का ध्यान रखते हुए आजाद करती हूँ।'

रानी के उक्त वचन सुनकर राजा नीलेश्वर ने कहा - 'तुम धन्य हो रानी! तुमने हमारी एक सबसे बड़ी समस्या का निवारण कर दिया। अब हम मंगल ग्रह को प्रसन्न करने के लिए आपसे विदा लेते हैं।' रानी बोली - 'जी महाराज।' और फिर इस प्रकार महाराज नीलेश्वर ने रानी रूपमती से विदा ली।

फिर चलते हुए राजा नीलेश्वर राज्य से दूर एक उद्यान में आ गए वहां जाकर उन्होंने मंगल ग्रह के व्रत आरंभ किए। विधिपूर्वक व्रत करते हुए जब उनके व्रत संपन्न हो गए तो उन्होंने उद्यापन किया और सारे राज्य में तुलसी मिश्रित दूध बंटवाया।

और फिर उसी रात मंगल ग्रह ने राजा नीलेश्वर को स्वप्न में दर्शन दिए। राजा नतमस्तक होकर बोले - 'हे देव! आप जो भी हैं, हमारा प्रणाम स्वीकार करें और हमें अपना परिचय देने की कृपा करें।'

यह सुनकर मंगल ग्रह ने जवाब दिया – 'राजन! मैं पृथ्वी का पुत्र मंगल ग्रह हूँ। तुम्हारे द्वारा किए गए व्रतों से प्रसन्न होकर मैं तुम्हारे पास आया हूँ। मैं तुमसे अति प्रसन्न हूँ। अत: हे राजन! जो मांगना चाहो मांग लो।'

मंगल ग्रह की बात सुनकर महाराज नीलेश्वर ने कहा – 'हे मंगल ग्रह देव! आप तो बस अपनी कृपा हम पर और हमारी प्रजा पर बनाए रखें। बस हमारा यही निवेदन है।' मंगल ग्रह ने कहा– 'निश्चिन्त रहो राजन। ऐसा ही होगा। परन्तु एक बात और?'

राजा नीलेश्वर ने पूछा – 'वह क्या?' मंगल ग्रह ने कहा – 'जिस प्रकार से तुमने व्रत पूरा किए और दान दिया। इसी प्रकार से जो भी मनुष्य मेरा व्रत करेगा तथा मेरी वस्तुओं का दान कर ब्राह्मणों को भोज कराएगा उस पर मेरा प्रकोप उस पर कभी नहीं होगा।'

राजा नीलेश्वर ने कहा – 'मैं इस बात को अवश्य प्रचारित करूंगा मंगल ग्रह देव।' मगर राजा की बात सुने बिना ही मंगल ग्रह अंतर्धान हो गए।

'मंगल ग्रह के प्रकोप से बचने के लिए जो भी मनुष्य इस कथा को पढ़ेंगे, व्रत रखेंगे, दान आदि देंगे, मंगल ग्रह की कृपा सदैव उन पर बनी रहेगी।' राजा ने यह घोषणा अपने पूरे राज्य में करवा दी।

बुधदेव का परिचय

बुधदेव अत्रि गोत्र एवं मगध देश के स्वामी है। इनका शरीर पीला है, चार हाथों में ढाल, गदा, खड़ग एवं वरमुद्रा है। सौम्य आकार के मनमोहक बाल्यरूपी पीला वस्त्र धारण किए हुए ये सिंह पर सवार हैं। इनके अधिदेवता नारायण और प्रत्यदि देवता भगवान विष्णु हैं।

बुध सौर परिवार का सबसे निकट का ग्रह है। बुध ग्रह चंद्रमा और प्लूटो से कुछ बड़ा मगर अन्य ग्रहों से छोटा है। इसका कोई उपग्रह नहीं है। यह चंद्रमा के समान ठोस है। यह जैसे-जैसे सूर्य से दूर और पृथ्वी के पास आता जाता है, वैसे-वैसे इसका तापमान कम होता जाता है। यह पृथ्वी से सामान्यत: 3,70,000 मील तथा सूर्य से 576 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसका विषुवतीय व्यास लगभग 3,100 मील है। इसकी त्रिज्या 2425 किलोमीटर है। सभी ग्रहों में यह सूर्य के सबसे निकट है और 28 अंशों से दूर कभी नहीं होता। यह 49 किलोमीटर प्रति सेकेंड की दर से गति करता हुआ सूर्य के चारों ओर लगभग 88 दिनों में अपना एक चक्कर पूर्ण कर लेता है। बुध का अपनी कक्षा की परिधि की ओर झुकाव लगभग 7 अंश है तथा भ्रमण करने की गति 29.7 मील यानि 176400 किलोमीटर प्रति सेकंड है। यह सूर्योदय से 2 घंटे पूर्व और सूर्यास्त से 2 घंटे पश्चात तक अत्यधिक चमकीले तारे के रूप में दिखाई देता है।

आकाश मंडल में यह बड़े तारे के रूप में प्रतीत होता है जो

शुक्र से लगभग 2,00,000 योजन की ऊंचाई पर स्थित है। बुध जब सूर्य की गति का उल्लंघन कर अपना परिभ्रमण करता है, तब पृथ्वी पर आंधी-तूफान, बादल और सूखा आदि के रूप में विचित्र मौसम आदि की परिस्थितियों का निर्माण करता है।

ज्योतिष में बुध ग्रह मोटे होंठ, बड़े दांत, सुन्दर त्वचा, सुडौल शरीर, श्याम वर्ण, लाल और बड़ी आंखों का अधिक शिराओं से युक्त माना गया है। इसमें हरे रंग की आभा प्रकट होती है। यह हरे रंग के प्रति संवेदनशील है, इसलिए इसकी निर्बल अवस्था में हरा रंग धारण करना लाभदायक है।

बुध ग्रह नपुंसक जाति, उत्तर दिशा का स्वामी, सभी दोष युक्त प्रकृति तथा पृथ्वी तत्वीय ग्रह है। बुध के द्वारा चर्म रोग, तंत्रिका तंत्र संबंधी रोग, गुप्त रोग, वात रोग, संग्रहणी, कुष्ठ रोग, गूंगापन, हकलाहट, बुद्धि भ्रम, विवेक शून्यता आदि रोगों का विचार किया जाता है।

प्राचीन ऋषियों के अनुसार बुध को आंशिक शुभ ग्रह और सौम्य ग्रह की संज्ञा दी गई है। ऐसा भी माना जाता है कि बुध शुभ फल देने में तभी सफल होता है जब वह अकेला हो। यह सूर्य के साथ होने पर अस्त तथा मंगल, राहु, शनि और केतु के साथ होने पर अशुभ फल तथा शुक्र, गुरु और चंद्र के साथ होने पर शुभ फल देता है। यह जल्दी-जल्दी अस्त और उदित होता रहता है। अत: एक राशि पर लगभग एक माह रहता है तथा गोचर में राशि परिवर्तन के 7 दिन पूर्व से ही पूरे समय एक समान फल देता है। चूंकि बुध शुभ ग्रह है, किन्तु वह सदा सूर्य के साथ या एक ही भाव आगे या पीछे होता है, अत: उसके प्रत्येक फल में सूर्य का प्रभाव परिलक्षित होता है।

बुध ग्रह विद्या, बुद्धि, वाकपटुता, भाषण, पुस्तक लेखन, पठन-पाठन, सम्पादन, प्रकाशन, गणित, ज्योतिष, वकील, अध्यापक, अनुवादक, स्कूल, कॉलेज, पुस्तकालय, बैंक, बीमा, डाकघर, वित्त कंपनी, इन्कमटैक्स विभाग, इनमें नौकरी, लेखाधिकारी, लेखा-प्रबंधक, व्यापार, भौतिक, सामाजिक, राजनीतिक उन्नति, धर्म, ज्ञान, प्रज्ञा, वेदान्त, विद्वानों से प्रशंसा, उपासना, कुशलता, सत्य वचन, आमोद-प्रमोद स्थल, शिल्प, बन्धु, युवराज, मित्र, बहन की संतान, संचार माध्यम, चिकित्सा आदि संबंधित उच्च राजनीतिक क्षेत्र एवं सर्विस के क्षेत्र में शुभ होने पर स्थान समान देता है। बुध व्यवहारिक ज्ञान देता है, जबकि बृहस्पति आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं।

यह चंद्रमा का पुत्र है इसलिए चंद्रमा की भांति मन, मस्तिष्क, बुद्धि पर शासन करता है तथा दिन और रात में सदा बलवान होता है।

श्री बुध ग्रह शांति हेतु मंत्र, जपानुष्ठान, दानोपाय की विधि

1. बुध का परिचय : ईशान्यां बाणाकारमंडल अंगुल 4, मगध देशोद्भव, आत्रेयगोत्र, हरितवर्णा। दान पदार्थ : मूंगा, हरित वस्त्र, स्वर्ण-कांस्य, केसर, कस्तूरी, कपूर, गजदन्त, पंचरत्न, पुष्प, हाथी, शंख, पन्ना।

2. जपनीय एकाक्षरी मंत्र - **ॐ बुं बुधाय नमः।**

3. जपनीय बीज मंत्र - **ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।**

4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र - **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।**

5. जपनीय वैदिक मंत्र :

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहीत्वमिष्टापूर्वेसꣳ सृजेथामयं च।
अस्मिनन्त्यध स्थेऽऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदता।

5. गायत्री मंत्र :

ॐ सौम्यः रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि
तन्नौ सौम्यः प्रचोदयात्।।

7. जप संख्या/समयः 9,000 / सूर्योदय से 5 घटी (ढाई घंटे बाद) तक

8. समिधः /औषधि : अपामार्ग/विधारा मूलं

9. अन्य उपायः कांस्य दान

10. रत्न/उपरत्न दानः पन्ना/हरिण मणि

11. धातु/न्यूनतम वजन : स्वर्ण या कांसा / 6 रत्ती

12. बुधदेव की उंगली : कनिष्ठा/अनामिका

13. जाप के नक्षत्र : अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती

14. जाप के लिए वार/समय : बुधवार, प्रथम प्रहर

15. पुराणोक्त श्री बुध ग्रह का स्तवन –

प्रियंगु-कलिका-श्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

श्री बुध ग्रह का संपूर्ण विवरण

बुध को काल पुरुष की वाणी और बुद्धि माना गया है। इसके संबंध में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं –

रत्न दान	पन्ना
उपरत्न दान	हरा ओनेक्स, तुरमली, हरा मरकज

राशि संचार काल	30 दिन
समय	प्रातः
स्वभाव	सौम्य, मिश्रित
समिधा	अपमार्ग (चिरचिटा)
पुष्प	हरे पुष्प
गुण	रजोगुण
लिंग	स्त्री, नपुंसक
तत्व	पृथ्वी
ऋतु	शरद
प्रतिनिधि पशु	गौ
अवस्था	बाल्यकाल, कुमार
दृष्टि	सप्तम
जाति	शूद्र और वैश्य
आकृति	गोल
दिशा	उत्तर
धातु	कांस्य,सोना
मित्र ग्रह	शुक्र, सूर्य
शत्रु ग्रह	चंद्रमा
सम ग्रह	मंगल, गुरु, शनि
काल पुरुष के शरीर में स्थिति	नाभिस्थल
दृष्टि	सप्तम
अंग्रेजी नाम	मर्करी
स्वामित्व	मिथुन, कन्या
मूल त्रिकोण	कन्या
भाव का कारकत्व	चतुर्थ, एकादश

अन्य कारकत्व	वाणी, लेखन, कला, व्यापार, मशीन
वर्ण	हरा
स्वरूप	प्रसन्न
वार	बुधवार
स्वाद	मिश्रित
प्रकृति	वात–पित्त–कफ
गोत्र	अत्रि
वाहन	सिंह
राज्याधिकार	राजकुमार
शरीर में प्रभाव	हाथ–पैरों में
कद	सामान्य
निसर्गबल	मंगल से अधिक बली
संज्ञा	अकेला शुभ, पापयुक्त या दृष्टि होने पर अशुभ
क्रीड़ा स्थल	क्रीड़ा भवन, खेल मैदान
रुचि	लेखाशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, शिल्पकला व रसायन शास्त्र आदि
दान का समय	सूर्योदय से 2 घंटे तक
मंडल	बाणाकार
देश	मगध
देवता	विष्णु
दृष्टि	कटाक्ष
शरीर में कारक	त्वचा

काल समय	ऋतु
रोग	वात, पित्त कफ विकार, कर्ण रोग, कुष्ठ रोग, चर्म रोग, घुटनों में दर्द, गला एवं वाणी दोष मंत्र रोग
पराभव	शुक्र से पराजित
बली	पूर्वाह्न
स्थान	श्मशान, विद्वानों का घर या गांव
दोष शमन	राहु का
भाग्योदय काल	32–36 वर्ष तक
जड़ी	विधारा की जड़
भाग	उभय
दान पदार्थ	नीला, हरा वस्त्र, चांदी, सोना, कांसा, मूंगा, पुष्प, दासी, गौ, हाथी दांत, शक्कर, घी, कपूर
विद्या	शिल्पकला, अर्थशास्त्र, रसायन शास्त्र, वैदिक साहित्य एवं लेखाशास्त्र
दीप्तांश	7 अंश
शुष्कता	जलीय
विचारणीय विषय	माया, बंधु, मित्र, विद्या, विवेक व वाणिज्य आदि

बुध की शांति के चमत्कारी उपाय

1. बुध पीड़ा की विशेष शांति हेतु चावल, शहद, सफेद सरसों, गोबर, गोरोचन एवं नवारी मल्वल मिलाकर 6 बुधवार तक स्नान करें।
2. हरिवंश पुराण के अनुसार जातक को महाविष्णु या अतिविष्णु यज्ञ कर कांस्य पात्र में दूध देना चाहिए।
3. बुद्धि स्थान को मजबूत करने हेतु और धन प्राप्ति हेतु पन्नायुक्त 'बुध यंत्र' या कवच धारण करें।
4. 1 रत्ती स्वर्ण का बुधवार के दिन दान करें।
5. 11 बुधवार तक एक मुट्ठी मूंग भिखारियों को दान करें।
6. बुध अष्टोत्तर शत नामावली बुध स्तोत्र अथवा पांडुरंग स्तोत्र का पाठन करें।
7. बुधवार का व्रत 5, 11, या 43 बार करें।
8. साबुन, मूंग, हरी चीजें मठ-मंदिरों में दान करें या जल में प्रवाहित करें।
9. तांबे के सिक्के में छेद करके बहते पानी में बहाएं।
10. पन्ना सोने की अंगूठी में अनामिका में धारण करें। पन्ने के अभाव में काली (धातु) धारण करें।
11. लड़की, बहन, बुआ, साली की समस्याओं में सहयोग करें और उनका आशीर्वाद लें।
12. कौड़ियों को जलाकर बहते पानी में बहाएं।
13. बुध उच्च हो तो बुध की चीजों का दान न दें और अगर बुध नीच हो तो बुध की चीजों का दान न लें।
14. किन्नरों को हरी चूड़ियां, हरे रंग के कपड़े देवें।

15. अनिष्ट बुध की शांति का सर्वोत्तम उपाय है बुध मंत्र के सम्पुट के साथ प्रति बुधवार को अनुष्ठान सहित या नित्य विष्णुसहस्त्र नाम का पाठ है।
16. नित्य शालिग्राम पूजन करके तुलसीपत्र का सेवन करें तथा मंत्र जाप कर लें। चमत्कारिक रूप से लाभ होगा।
17. शत्रु बाधा एवं अभिचार कर्मों के शमन के लिए प्रत्यांगिरा जप तथा हवन अमोघ है।
18. व्यापारिक अड़चनों के लिए महाधन्वंतरि मंत्र अथवा महामृत्युंजय मंत्र के जाप को दैनिक 108 बार करें।
19. शारीरिक व्याधियों के लिए महाधन्वंतरि मंत्र अथवा महामृत्युंजय प्रयोग करें।
20. बुध ग्रह के द्वारा उत्पन्न रोगों से पीड़ा की विशेष शांति हेतु हरड, गोमय, अक्षत, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु मिलाकर 27 बुधवार तक स्नान करें।

बुध मंत्र

बुध मंत्रों का जाप श्रद्धा, विश्वास और विधि के अनुसार करना चाहिए। बुध के वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक मंत्र निम्नलिखित हैं –

वैदिक मंत्र

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहीत्वमिष्टापूर्वेसꣳ सृजेथामयं च।
अस्मिनन्त्यध स्थेऽऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदता।

तांत्रिक मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

एकाक्षरी मंत्र

ॐ बुं बुधाये नमः।

पौराणिक मंत्र

ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाये नमः।

उपरोक्त बुध मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नियमित रूप से विधिवत जप करके बुध पीड़ा का निवारण कर सकते हैं। बुध मंत्र अल्पमत 9000 जपें, जबकि अधिकतम 36000 जपने पर पूर्ण फलदायी होते हैं।

श्री बुध अष्टोत्तर शत नमस्कार नामावली

ॐ बुधाय नमः
ॐ शुभप्रदाय नमः
ॐ सत्याऽऽवासाय नमः
ॐ सोमजाय नमः
ॐ वेदविदे नमः
ॐ विदुषे नमः
ॐ विशेषविनयान्विताय नमः
ॐ त्रिवर्गफलदाय नमः
ॐ बहुशास्त्रज्ञान नमः
ॐ वासवाय नमः
ॐ वरेण्याय नमः
ॐ सत्यबंधवे नमः
ॐ वाणिज्यनिपुणाय नमः
ॐ स्थूलाय नमः
ॐ सौम्याय नमः
ॐ दृढ़फलाय नमः
ॐ श्रेयसां पतये नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ वेदान्तज्ञान भास्कराय नमः
ॐ ऋजवे नमः
ॐ वीर्यवते नमः
ॐ त्रिदशाधिपपूतिताय नमः
ॐ बन्धविमोचकाय नमः
ॐ प्रसन्नवदनाय नमः
ॐ सत्यवते नमः
ॐ सर्वरोगप्रशमनाय नमः
ॐ वाताय नमः
ॐ स्थूल सूक्ष्मादिकारणाय नमः

ॐ गगन भूषणाय नमः
ॐ विशालाक्षाय नमः
ॐ चपलाय नमः
ॐ मगधाधिपतये नमः
ॐ महते नमः
ॐ शिवंकराय नमः
ॐ खडंगचर्मधराय नमः
ॐ सौम्यचित्ताय नमः
ॐ श्रुतिजालप्रबौधकाय नमः
ॐ अव्ययाम नमः
ॐ सोमवंशप्रदीपकाय नमः
ॐ विद्वत्प्रीतिकराय नमः
ॐ विविधागमसारज्ञाय नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ बलिने नमः
ॐ वसुधाष्धिपाय नमः
ॐ वाग्विलक्षणाय नमः
ॐ सदादराय नमः
ॐ वश्याय नमः
ॐ स्थैर्यगुणाध्यक्षाय नमः
ॐ धनाय नमः
ॐ विधिस्तुत्याय नमः
ॐ जितेन्द्रियाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ सिंहाधिरूढ़ाय नमः
ॐ प्रकाशात्मने नमः
ॐ चारूशीलाय नमः
ॐ उदङ्मुखाय नमः
ॐ सौम्यवत्सरसंजाताय नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ पीतवपुषे नमः
ॐ बुधर्चिताय नमः
ॐ दृढ़वताय नमः
ॐ सत्यवचसे नमः
ॐ सुखदाय नमः
ॐ विद्याविचक्षणाय नमः
ॐ विशअवानुकूलसंराय नमः
ॐ विगतज्वराय नमः
ॐ बुद्धिमते नमः
ॐ वक्रातिवक्रगमनाय नमः
ॐ वन्द्याय नमः
ॐ सत्यसंकल्पाय नमः
ॐ सर्वमृत्युनिवारकाय नमः
ॐ वातरोगहृते नमः
ॐ अप्रकाशाय नमः
ॐ विद्वतज्जनमनोहराय नमः
ॐ स्वप्रकाशाय नमः
ॐ मखासक्ताय नमः
ॐ सोमप्रियकराय नमः
ॐ शिखिवर्णाय नमः

ॐ पीतांबराय नमः
ॐ कार्यकर्त्रे नमः
ॐ अत्यन्तविनयाय नमः
ॐ चारूभूषणाय नमः
ॐ बन्धुप्रियाय नमः
ॐ तर्कशास्त्रविशारदया नमः
ॐ प्रियभूषणाय नमः
ॐ सुधिये नमः
ॐ आत्रेयगोत्रजाय नमः
ॐ चारणाय नमः
ॐ विशुद्धकनकप्रभाय नमः
ॐ अर्केशाननिवासस्थाय नमः
ॐ प्रियकृते नमः
ॐ मिथुनाधिपतये नमः
ॐ घनफलाश्रयाय नमः
ॐ पीतच्छत्रध्वजाकिंताय नमः
ॐ कलुषहारकाय नमः
ॐ चांपेयपुष्पसंकाशाय नमः
ॐ वीतभयाय नमः
ॐ बाणमंडलसंश्रिताय नमः
ॐ प्रीतिसंयुक्ताय नमः
ॐ माधवासक्ताय नमः
ॐ कामप्रदाय नमः
ॐ विश्वपावनाय नमः
ॐ वीतरागाय नमः
ॐ बन्धुयुक्ताय नमः
ॐ प्रशान्ताय नमः
ॐ मेधाविने नमः
ॐ कन्याराशिप्रियाय नमः
ॐ वेददत्तवज्ञान नमः

बुध ग्रह की पूजन विधि

जातक का जब बुध ग्रह खराब हो तो वह सबसे पहले बुध ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और यह मंत्र पढ़ें –

विनियोग **ॐ उद्बुध्स्वेति परमेष्ठी ऋषि त्रिष्टुप छन्दोः बुधो देवता बुधऽ वाहने विनियोग।**

ध्यान– हरे रंग का चावल या पान लेकर बुध का ध्यान करें।

ॐ पीताम्बराः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्उधरश्च सौम्याः सिंहाधितश्चन्द्रसुतोहरिप्रियः सदामम् स्याद्वरदोतु सौम्याः।।

अस्यबुधस्य ध्यानं समर्पयामि।

कहकर चावल या पान बुध पर चढ़ा दें।

तत्पश्चात्- बुध को जल चढ़ाएं -

शुद्धोदकं जलं समनीतं स्नानं प्रतिगृहताम्।

रोली या चन्दन निम्नलिखित मंत्र से चढ़ाएं -

ॐ उदबुधस्यवाग्गने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्ते ७ सृजेथा मयं च।
अस्मिन्त्स्धस्ते अध्युत्तरऽस्मन् विश्वेदेवा यजमानस्यसीदत।
ॐ बुधस्य चंदनं समर्पयामि।

तत्पश्चात्- बुध को चावल (अक्षत) चढ़ाएं।

ॐ बुधस्य अक्षतं समर्पयामि।

तत्पश्चात्- फूल चढ़ाएं। **पुष्पं समर्पयामि।**

तत्पश्चात्- मिठाई चढ़ाएं। **नैवेद्यं निवेदयामि।**

ततो नमस्कारं करोमि।

बुध को प्रणाम करें

प्रियगुं कलिका श्यामं रूपेणा प्रतिम बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं त्वां बुधं प्रणमाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः मगध देशोद्भव आत्रेय सगोत्र हरितवर्ण भो।
बुध इहागच्छ इहातिष्ठ बुधायनमः आवहयामि स्थापयामि।।
सम्पूज्यामि।

बुध ग्रह के व्रत के नियम

1. बुध ग्रह का व्रत बुधवार को ही रखें।
2. यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार से ही प्रारंभ करें।
3. व्रत कब तक करें अर्थात् व्रत की संख्या 21 या 45 बुधवार तक की ही हो।

4. नमक पूर्णतः वर्जित है, अतः इस दिन नमक का प्रयोग किसी भी रूप में न करें।
5. शुद्धता का पूर्ण ध्यान रखें। सभी व्रतों में ब्रह्मचर्य रहना 3 दिन पहले से 1 दिन बाद तक अनिवार्य होता है।
6. भोजन के रूप में मूंग की दाल की पंजीरी या हलवा भोग लगाकर प्रसाद रूप में वितरित करके शेष का सेवन सूर्यास्त के पूर्व सांयकाल श्रद्धापूर्वक करें।
7. दान करने के पश्चात् ही भोजन का सेवन करें। दान बुध संबंधी वस्तुओं का ही करें।
8. भोजन से पूर्व हरी इलायची, कर्पूर-मिश्रित जल से बुध देव को अर्घ्य दें।
9. व्रत के दिन बुध मंत्र का 9000 बार जाप करें या अथवा 14 माला का जाप अवश्य करें।
10. मस्तक पर सफेद चंदन हरी इलायची सहित घिसकर लगाएं और पहनने वाले वस्त्रों में हरे रंग का प्रयोग करें।
11. जब व्रत का अंतिम बुधवार हो तो उद्यापन विधि से बुध मंत्र से हवन करके पूर्णाहुति देकर ब्राह्मणों को मीठा भोजन कराकर बुध की वस्तुओं सहित वस्त्रादि का यथाशक्ति दान करें।

बुध व्रत का लाभ

बुध ग्रह का व्रत करने से बुध की अशुभता दूर होती है। विद्या, धन लाभ, व्यापारिक उन्नति एवं स्वास्थ्य लाभ होता है।

बुध ग्रह व्रत विधि

शुक्ल पक्ष में विशाखा नक्षत्र बुधवार के दिन इस व्रत का शुभारंभ किया जाता है। इसके 7 बुधवार को व्रत करने का विधान है। बुध की सोने की प्रतिमा बनाकर कांसे के पात्र में विराजमान करें। दो सफेद छोटी मोती की माला पहनाकर दैनिक पूजा करे। तांत्रिक या बीज मंत्र की 3 माला का जप करें। हरे वस्त्र धारण करें तथा नमक का त्याग करें। ऐसा विधान कर व्रत करने से सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं तथा चमत्कारी उन्नति होती है।

उद्यापन

व्रत की समाप्ति पर अंतिम बुधवार को उद्यापन करें। घर के आंगन को गोबर से लीपकर, गायत्री हवन सर्वग्रह शांति जैसे विधान से हवन पूर्णाहुति के बाद 4 ब्राह्मणों को भोजन कराएं तथा हरे वस्त्र व सोने अथवा चांदी का दान करें।

बुध शांति के सरल उपाय

1. बुधवार को हरे वस्त्र धारण करें।
2. हरे रंग का रुमाल पास में रखें।
3. कुछ दिन हाथी दांत के बर्तन में या रजत अथवा तुम्बी (लौकी) के पात्र में पानी पीयें।
4. बुधवार को बुध स्तोत्र का पाठ करें अथवा एकाक्षरी मंत्र का 4 माला जाप करें।

दान की वस्तुएं

पन्ना, सोना, कासीमृग, हरित वस्त्र, हाथी दांत, कपूर, शस्त्र, फल-फूल।

बीज मंत्र **ॐ बुं बुंधाये नमः।**

तांत्रिक मंत्र **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाये नमः।**

वैदिक मंत्र

ॐ उदब्रबुध्स्वाग्ने प्रतिजागृहि स्वमिष्टा पूर्ते सꣳ सृजेयामयं च।
अस्मिसधस्ते अध्युत्रास्मिन विश्वेदेवा यजमनाश्च सीदताः।।

बुध ग्रह की व्रत कथा

बहुत साल पहले की बात है, राजा विक्रमादित्य के राज्य में सारी प्रजा सुखी, संपन्न और खुशहाल थी। उनके राज्य में ही एक वैश्य परिवार भी सुख-शांति से जीवन यापन करते हुए प्रसन्नतापूर्वक रहता था। उस वैश्य का नाम था त्रिलोक नारायण। वैश्य त्रिलोक नारायण के दो पुत्र थे। दोनों ही युवा और गुणी थे। उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों की चारों तरफ प्रशंसा होती थी। त्रिलोक नारायण के छोटे पुत्र का नाम था विजय और बड़े बेटे का नाम विक्रम था। उन्हें व्यापार में तो निपुणता प्राप्त थी ही साथ ही वह शस्त्र कला में भी सिद्ध थे। छोटे- बेटे विजय को ज्योतिष विद्या में भी गहरी रुचि थी।

वह (विजय) अपने गुरु स्वामी आशानन्दजी से ज्योतिष विद्या सीखा करता था। शीघ्र ही वह अपने इस मनोरथ में निपुण भी हो गया। अब वह कोई ऐसी विद्या सीखना चाहता था जो

चमत्कारी हो। इसलिए एक दिन विजय ने अपने मन की बात आशानन्दजी को बताई।

यह बात जानकर आशानन्दजी गंभीर हो गए। उनकी उम्र सत्तर पार कर चुकी थी। यद्यपि उनकी दाढ़ी में सफेद बाल उगने लगे थे, परन्तु दाढ़ी अभी पूरी तरह से काली ही थी। उनके सिर के बाल भी काले ही थे। उनके मुख मंडल पर एक असीम ओज (तेज) था। उनकी आंखों में अब भी गहरी चमक विद्यमान थी।

वातावरण में कुछ क्षणों तक गहरी खामोशी छाई रही। फिर तेजस्वी, ओजस्वी ज्योतिषाचार्य पं. आशानन्दजी बोले –'वत्स!, वैसे तो ज्योतिष विद्या भी किसी चमत्कार से कम नहीं है, इसके ज्ञान का भंडार असीम है। परन्तु तुम्हारे मनोभावों को हमने समझ लिया है। तुम कोई ऐसी योगिक क्रिया सीखना चाहते हो जिससे चहुं ओर तुम्हारा यश बढ़े।'

विजय ने कहा–'हां गुरुदेव। आपने तो मेरे मन की बात पढ़ ली। मैं बिल्कुल ऐसा ही चाहता हूँ। आशानन्दजी ने कहा– 'वत्स! ऐसी कोई विद्या हम तो जानते नहीं। हां, तुम ऐसा करो, हठयोगी विराटानन्दजी के आश्रम में चले जाओ। वहां जाकर उन्हें हमारे विषय में बताकर अपना परिचय दे देना। वह तुम्हें योग विद्या में निपुण कर देंगे।' अपने गुरु से यह सुनकर विजय ने गुरु को प्रणाम किया और वहां से विदा ली।

फिर अपने घर पहुंचकर विजय ने अपने पूज्य पिताजी से अपने मन का सारा वृतांत कह सुनाया। फिर उसने प्रस्थान की आज्ञा मांगी तो त्रिलोक नारायण ने उसे स्नेहपूर्वक सीने से लगाकर कहा– 'पुत्र! तुमने जो यह योग विद्या सीखने की ठानी

है, यह खुशी की बात है। इसके लिए हमारी ओर से तुम्हें आज्ञा है, परन्तु अपनी मां से भी जाकर आज्ञा ले लो और आश्रम के लिए प्रस्थान करो।'

मां के पास जाकर विजय ने उन्हें प्रणाम किया और कहा- 'हे माते! आप मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए। आपके आशीर्वाद के फल से ही मैं योग विद्या में निपुण हो सकता हूँ।'

यह सुनकर माता राजेश्वरी की आंखें भर आईं। हां यह बात और थी कि वे आंसू खुशी के थे। राजेश्वरी भर्राए लहजे में बोली-'वत्स! मेरा आशीर्वाद तो तुम दोनों भाईयों के लिए सदैव ही रहता है। फिर भी मैं तुम्हें यह आशीर्वाद देती हूँ कि - 'पुत्र तुम योग विद्या में अवश्य सफल रहोगे। अपने माता-पिता और परिजनों के साथ-साथ अपने गुरु का भी यश और मान बढ़ाओगे। हे पुत्र- मेरा तुम्हें आशीर्वाद है।

फिर विजय अपने बड़े भाई विक्रम की तरफ घूमा और बोला- 'भैया।' विक्रम ने भी अपने छोटे भाई को गले लगाकर कहा - 'छोटे! विद्या पूरी करके शीघ्र लौटना मेरे भाई तुम्हारे इस बड़े भाई को तुम्हारी याद हर पल सताती रहेगी।'

विजय ने रुंधे गले से कहा - 'भैया।' विक्रम ने कहा- 'बाहर घोड़ा गाड़ी खड़ी है, छोटे- प्रस्थान करो।' फिर अपने परिजनों से विदा लेकर विजय अपने लक्ष्य की ओर रवाना हुआ।

माता-पिता और अन्य परिजन उसे तब तक जाते हुए देखते रहे, जब तक घोड़ा-गाड़ी नजर आती रही। फिर धीरे-धीरे वह एक शून्य दिखाई देती हुई नजरों से ओझल हो गई।

फिर आश्रम पहुंचकर विजय ने हठयोगी विराटानंदजी को

प्रणाम कर उनके चरण स्पर्श किए और हाथ माथे से लगाए। विराटानंदजी ने उसे आशीर्वाद दिया और उसके विषय में पूछा–'वत्स! तुम कौन हो? किस प्रयोजन से यहां आए हो? अपने बारे में सब कुछ बताओ।'

हठयोगी विराटानंदजी के इस प्रश्न को सुनकर विजय ने अपने बारे में और अपने गुरु आशानन्दजी के विषय में सब कुछ बता कर हठयोगी महाराज के चरणों में झुक कर कहा–'हे गुरुदेव! आप मुझे अपना शिष्य स्वीकार कीजिए। यदि आपने मुझे अपना शिष्य स्वीकार नहीं किया, तो मैं यही आपके चरणों में अपने प्राण त्याग दूंगा।'

हठयोगी विराटानन्दजी ने कहा – 'ऐसा नहीं कहते वत्स। हम अपना शिष्य उसे ही बनाते हैं जिसे हम विद्या के योग्य समझते हैं। तुम दृढ़ निश्चयी हो यह बात हम अच्छी तरह जान गए हैं। तुम निश्चिंत रहो विजय, हम तुम्हें हठयोग अवश्य सिखाएंगे।' और इतना कहकर गुरुदेव ने अपने शिष्य को पुकारा–'चेतराम!' शिष्य ने कहा–'जी गुरुदेव।' गुरुदेव ने अपने शिष्य से कहा– 'चेतराम। विजय आज से हमारा शिष्य है। जाओ, इसे आश्रम दिखाओ और यहां की जो आवश्यक बातें हैं, वह उसे समझा दो।' चेतराम ने जवाब दिया–'जी गुरुदेव।' फिर गुरुदेव ने विजय से कहा–'जाओ वत्स! चेतराम के साथ जाओ। अब तो तुमसे संध्या को भेंट होगी।' विजय ने जवाब दिया–'जो आज्ञा गुरुदेव।' यह कहकर विजय, चेतराम के साथ चला गया। उसकी शिक्षा आरंभ हो गई।

एक दिन गुरुदेव ने विजय से कहा–'वत्स! आज हम तुम्हें हठयोग विद्या का आखिरी सबक परकाया प्रवेश की विद्या

सिखा रहे हैं।' हठयोगी विराटानंद ने विजय को विद्या के विषय में समझाते हुए कहा-'वत्स! इस विद्या के माध्यम से तुम चौबीस घंटे के लिए किसी भी मृत व्यक्ति के शरीर में समाकर उसके शरीर को चौबीस घंटे के लिए जिंदा रख सकते हो। यह विद्या उन्हीं मृत शरीरों पर उपयोगी सिद्ध होगी जो बिना मृत्यु के प्राण गंवा देते हैं। जिसे अकाल मृत्यु भी कहा जाता है।' यह कहकर गुरुदेव ने विजय से पूछा-'वत्स! तुम हमारा तात्पर्य समझ रहे हो ना।'

विजय ने कहा-'जी गुरुदेव।' और फिर हठयोगी विराटानंद ने विजय को परकाया प्रवेश विद्या का ज्ञान दिया। थोड़े ही दिनों में विजय इस विद्या में निपुण हो गया। एक दिन गुरुदेव ने उसकी परीक्षा लेते हुए कहा-'विजय! यह मृत शरीर तुम्हारे सामने है। तुम अब अपने शरीर को सुरक्षित रखकर, इस परकाया में प्रवेश करके दिखाओ?' विजय ने कहा- 'जी गुरुदेव।'

फिर विजय ने एक उतना लंबा घेरा खींचा, जिसमें वह लेट सकता था। उसने गुरु के बताए कुछ मंत्र बुदबदाए और फिर वह उस घेरे में लेट गया। गुरुदेव ने देखा कि विजय ने अपना शरीर छोड़ दिया है और अब एक परछाई सी उस मृत शरीर में प्रवेश कर रही थी जिसे गुरुदेव के अन्य शिष्यों ने उपलब्ध कराया था।

इधर मंत्रों के घेरे में विजय का शरीर सुरक्षित था। 24 घंटे से पहले कोई भी उस घेरे में प्रवेश कर विजय के शरीर को किसी भी कीमत पर हानि नहीं पहुंचा सकता था। ज्यों ही कोई उस घेरे के करीब पहुंचने की कोशिश करता, गोले की रेखाओं

से अग्नि की किरणें निकलकर उसे जलाने के लिए पूरे वेग से लपक उठतीं।

गुरुदेव ने देखा की विजय की आत्मा परकाया में प्रवेश कर चुकी थी और अब वह मृत परकाया खड़ी हो रही थी। मृत परकाया में समाए विजय ने हाथ जोड़कर गुरुदेव को प्रणाम किया और कहा-'प्रणाम गुरुदेव।'

गुरुदेव ने उत्तर में कहा - 'विजय! तुम सफल हुए, अब परकाया को छोड़कर पुनः अपने शरीर में वापस लौट जाओ।' विजय ने कहा-'जो आज्ञा गुरुदेव। और फिर वह वापस अपने शरीर में लौट आया। कुछ दिनों पश्चात उसकी शिक्षा पूरी हुई और उसने आश्रम से गुरुदेव से आज्ञा ले, अपने घर के लिए प्रस्थाव किया।

विजय जब घर वापस लौटा तो वहां के हालात देखकर बुरी तरह चौंक पड़ा। घर में रोना-पीटना मचा हुआ था। उसके पिता और माता की आंखों से आंसू रोके नहीं रुक रहे थे।

विजय को सामने देखकर त्रिलोक नारायण उसकी और बढ़े, बोले-'बेटे! ये सब क्या हो गया, विक्रम को।' इतना कहकर वे फूट-फूटकर रोने लगे। विजय वहां का माहौल देखकर सारी स्थिति समझ गया-कि विक्रम को किसी जहरीले कीड़े ने काटा था और उसका इलाज करते-करते प्राणान्त हो गया था।

यह देखकर विजय ने कहा-'पिताजी! आप चिंतित न हों। आप अपने आंसू पोंछ लीजिए। विक्रम भैया को कुछ भी नहीं हो सकता। मैं उन्हें वापस लौटा लाऊंगा, क्योंकि वे अपनी मृत्यु से नहीं मरे हैं। उनका जीवन अभी शेष है। मैं उन्हें लौटा लाऊंगा।

विजय के मुंह से यह सुनकर त्रिलोक नारायण ने कहा– 'मगर कैसे बेटे?' विजय ने कहा– 'इसमें बस एक ही अंतर रहेगा पिताजी, कि अब मुझे अपना शरीर छोड़कर हमेशा के लिए विक्रम भैया के शरीर में निवास करते रहना होगा एवं बड़े भैया मेरे शरीर में अपनी उम्र तक जीवित रहेंगे।' त्रिलोक नारायण बोले, 'मगर।'

विजय ने कहा– 'माते! यह उस विद्या का चमत्कार होगा, जिसमें निपुण होकर आपका यह बेटा आज वापस लौटा है।' मां ने कहा– 'पुत्र! हमारी समझ में तो तुम्हारी यह रहस्यमयी बातें नहीं आ रही हैं।' विजय ने कहा–'माते! आपको सब कुछ बाद में समझाऊंगा, पहले मैं विक्रम भैया को वापस लाता हूँ।'

इतना कहकर विजय घेरे का सुरक्षा कवच बना उसमें लेट गया। फिर उसने अपना शरीर छोड़ा और वायुमंडल में घूमने लगा। विक्रम की आत्मा वहीं भटक रही थी। विजय, विक्रम की आत्मा से मिला और मंत्रों की शक्ति द्वारा विक्रम को अपने शरीर में प्रवेश करा दिया। फिर वह स्वयं विक्रम के शरीर में समा गया। दोनों भाई उठ खड़े हुए।

इस चमत्कार को देख वहां मौजूद सभी लोग नतमस्तक हो गए। बाद में विजय ने (जो अब विक्रम के शरीर में था) अपनी विद्या के विषय में अपने माता–पिता को बताया। तब पिता ने पूछा–'विजय बेटे! जब परकाया प्रवेश हो सकता है, तो तुमने विक्रम की आत्मा को विक्रम के शरीर में ही क्यों नहीं पहुंचाया?'

विजय ने जवाब दिया–'वह इसलिए पिताजी कि बड़े भैया के शरीर में जहर की मात्रा मौजूद थी वे इसे सहन न करके ही

इस शरीर को छोड़ गए थे, चूंकि मैं इस योग से तपी हुई आत्मा हूँ। अत: यह जहर मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।' यह सुनकर पिताजी के मुंह से बस इतना निकला-'ओह।'

फिर रात्रि में, विजय को पिता से पता चला कि उसके जाने के पश्चात व्यापार आदि सब चौपट हो गया। घर में एक वक्त ही भोजन बन रहा है ऐसा क्यों हो रहा है? उसकी समझ में कुछ नहीं आता।

विजय ने ज्योतिष की गणना की और फिर उसके मुंह से निकला-'ओ हो।' पिताजी ने पूछा-'क्या हुआ बेटे?'

विजय ने कहा-'पिताजी! हमारे परिवार पर तो बुध ग्रह की विपरीत चाल पड़ी है। बुध ग्रह हमसे नाराज हैं। हमें उन्हें प्रसन्न करना होगा। तभी यह संकट समाप्त हो पाएगा।' त्रिलोक नारायण ने पूछा-'बेटे! हम बुध ग्रह को किसी प्रकार प्रसन्न करें?'

विजय ने जवाब दिया-'पिताजी, यह कोई मुश्किल काम नहीं है। बुधवार के दिन व्रत रखने होंगे। केवल जल और फल ही सेवन करने होंगे। 14वें बुधवार का उद्यापन करना होगा। मीठे का प्रसाद बांटना होगा और वस्त्र का दान देना होगा। इस प्रकार बुध ग्रह हमसे प्रसन्न हो जोाएंगे।' त्रिलोक नारायण ने कहा-'बेटे! कल बुधवार है हम कल से ही ऐसा करते हैं।'

और फिर विजय द्वारा बताए गए अनुसार त्रिलोक नारायण ने बुध ग्रह के व्रत शुरु किए। जो शीघ्र ही पूरे हो गए। फिर उन्होंने बताई गई विधि से उद्यापन किया। प्रसाद बांटा, वस्त्र दान दिया। इसके लिए विजय के पास कुछ धन था, वही काम आया।

उसी रात त्रिलोक नारायण को बुध ग्रह ने स्वप्न में दर्शन दिए

और कहा-'वत्स! हम तुम्हारे द्वारा किए गए, हमारे व्रतों से प्रसन्न हुए। मांगों क्या मांगना चाहते हो?' त्रिलोक नारायण ने कहा- 'बुध ग्रह देव। यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरे दोनों बेटों को उनके शरीर प्रदान करो। आपकी कृपा से वे एक-दूसरे के शरीर में क्यों रहें। अपने-अपने शरीरों में क्यों न रहें।'

बुध ग्रह देव ने कहा-'तुम्हारी यह इच्छा अवश्य पूरी होगी, त्रिलोक नारायण, और कुछ मांगो।' त्रिलोक नारायण ने कहा- 'बुध ग्रह देव, आपकी कृपा दृष्टि सदैव हमारे परिवार पर बनी रहे, बस।'

बुध ग्रह देव ने कहा-'ऐसा ही होगा, परन्तु तुम्हें हमारी यह कथा, व्रत और उद्यापन, दान आदि की महिमा को प्रजा में प्रचारित करना होगा।' त्रिलोक नारायण ने कहा-'मैं ऐसा जरूर करूंगा।' बुध ग्रह देव ने कहा-'जो भी हमारी इस कथा को पढ़ेगा, व्रत रखेगा, उद्यापन करेगा, दान देगा, उनसे हम प्रसन्न रहेंगे।' इतना कहकर बुध ग्रह अन्तर्धान हो गए।

सुबह त्रिलोक नारायण ने अपने दोनों बेटों और पत्नी को स्वप्न के विषय में बताया। तभी विजय ने कहा- 'पिताजी! अब मैं अपने शरीर में हूँ और बड़े भैया अपने में, यह सब बुध ग्रह देव की कृपा से ही संभव हुआ है।'

बृहस्पति देव का परिचय

बृहस्पति देव अंगिरा गोत्र के ब्राह्मण हैं, सिंधु देश के अधिपति हैं। इनका वर्ण पूर्ण पीला है, पीतांबर धारण किए कमल पर बैठे हुए रुद्राक्ष शिला, दंड तथा वरमुद्रा धारण किए हुए इनके अधिदेवता ब्रह्माजी हैं एवं प्रत्यधि देवता इंद्रदेव हैं।

बृहस्पति ग्रह सौर परिवार का सबसे विशाल और भारी महाकाय ग्रह है। अपनी विशालता या गुरुता के कारण ही यह 'गुरु' कहलाया। सौर मंडल में सूर्य के चारों ओर परिभ्रमण करने वाले नौ ग्रहों में बृहस्पति का आकार ही सबसे बड़ा है।

इसकी पृथ्वी से सामान्य दूरी लगभग 48,50,00,000 मील तथा सूर्य से यह 77.3 करोड़ किलोमीटर दूर है। आधुनिक वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार बृहस्पति अपनी कक्षा में भ्रमण के दौरान कभी-कभी पृथ्वी से 36,70,00,000 मील की दूरी तक आ जाता है। यह पृथ्वी से 10.7 गुणा बड़ा, 318 गुणा भारी, एक चौथाई घनत्व तथा 71 हजार किलोमीटर त्रिज्या का ग्रह है। यह अपने अक्ष पर पृथ्वी से तेज गति से घूमता हुआ 9 घंटा 55 मिनट, 30 सेकेंड में एक चक्कर लगाता है। सूर्य की एक परिक्रमा 11 वर्ष और लगभग 9 माह में पूरी करता है। इस ग्रह का अपनी परिधि का झुकाव 2.5 अंश है तथा व्यास 9,36,720 मील तथा मतांतर से व्यास 2,75,000 मील माना जाता है। बृहस्पति लगभग 8 मील प्रति सेकेंड की चाल से यानी 28800 किलोमीटर प्रति घंटे की गति करते हुए सूर्य का चक्कर लगाता है। यह बुध, शुक्र और पृथ्वी की तरह ठोस न होकर गैसों का

वृहद गोला है। ये गैसें सघन और अर्द्धपारदर्शी हैं इसलिए इसकी सतह नहीं दिखती। ग्रहों की चमक सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करने के कारण होती है। ग्रहों की अपनी ऊर्जा या प्रकाश नहीं है मगर यह ग्रह सूर्य से जितनी ऊर्जा या प्रकाश ग्रहण करता है उससे चार गुणा अधिक उत्सर्जित करता है। इस ग्रह के 16 उपग्रह हैं, जिनमें से एक पृथ्वी के बराबर है।

बृहस्पति ग्रह पुरुष जाति, पीत वर्ण, पूर्वोत्तर दिशा का स्वामी तथा आकाश तत्वीय ग्रह है। यह कफ, धातु एवं चर्बी में वृद्धि करता है। रोगों की दृष्टि से सूजन, गुल्म, पेट के रोग देता है तथा घर, विद्या, संतान, पौत्र, स्त्रियों के लिए पति सुख, राज्य कृपा, जातक में धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक चिंतन एवं प्रगति, इष्ट कृपा एवं सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति को दर्शाता है।

यह यश, धन, बुद्धि, विद्या, ज्ञान, धर्म, मोक्ष, ईमानदारी, न्याय दर्शन, लोकहित, पवित्र धर्म स्थल, संतान, बड़े भाई, पति, स्वस्थ देह का कारक है। यह ज्ञान का ग्रह है, इससे व्यक्ति सृजनशील होता है, अपनी प्रतिभा निखारता है और समाज, देश तथा संसार में अपनी छाप छोड़ता है। ज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और इस ग्रह का आकार भी बहुत वृहद है इसलिए यह कला, साहित्य, संस्कृति, इतिहास, भूगोल, विज्ञान तथा सम-सामयिक घटनाओं के प्रति व्यक्ति में जिज्ञासा प्रकट करता है। शुभ और बलवान गुरु का जातक इन्द्रिय जनित सांसारिक विषय भोग को त्याग कर अपने कर्तव्यों का पालन करता है।

बृहस्पति एक राशि पर लगभग एक वर्ष तक रहते हुए कभी-कभी वक्री हो जाया करता है तथा 12 वर्ष के पश्चात

पुनः उस राशि पर आ जाता है, जहां वह जन्म के समय था। यह लग्न भाव में बली, चंद्रमा के साथ होने पर चेष्टा बली होता है। बृहस्पति जन्म कुंडली में जिस भाव में होता है, उस भाव से पांचवें, सातवें और नौवें भाव पर अपनी पूर्ण दृष्टि डालता है।

यद्यपि बृहस्पति नैसर्गिक रूप से शुभ ग्रह है, किन्तु जन्म कुंडली में अशुभ भाव का स्वामी बन जाने या अशुभ स्थान पर आ जाने से जातक का शुभ फल देने में सर्वथा अयोग्य होता है। जिसके परिणामस्वरूप जातक को अशुभ फल ही प्राप्त होते हैं। जब बृहस्पति वक्री होता है तो उसके शुभ या अशुभ फलों में वृद्धि हो जाती है।

ज्योतिष शास्त्र में यह पीले-भूरे नेत्र और बाल, पुष्ट और ऊंची छाती, मोटी और नाटी देह, भारी बूढ़ेपन जैसी आवाज, पीले-सुनहरे रंग का, पुरुष ब्राह्मण, सत्वगुणी, द्विपद, उत्तर-पूर्व में दिशा का स्वामी, मधुर स्वाद और कफ प्रधान संपूर्ण सौरमंडल में सर्वश्रेष्ठ ग्रह है तथा सभी देवताओं का गुरु है।

श्री बृहस्पति ग्रह शांति हेतु मंत्र, जपानुष्ठान, दानोपाय तथा रत्नादि धारण विधि

1. परिचयः उत्तरेदीर्घचतुरस्नमंडल अंगुल 6 सिन्धु देशोद्भव आंगिरस गोत्र पीतवर्ण। दान पदार्थ : शर्करा, मधु, घृतं, हल्दी, अश्व, पीतवस्त्र, पीतधान्य, पुस्तक, पुखराज, लवण, सोना, पीतपुष्प।

2. जपनीय एकाक्षरी मंत्र - **ॐ बृं बृहस्पते नमः।**

3. जपनीय बीज मंत्र – **ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पते नमः।**

4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र – **ॐ ग्रां ग्रीं गौं सः गुरवे नमः।**

5. जपनीय वैदिक मंत्र :

ॐ बृहस्पतेऽऽअति यदर्यो ऽ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु।
यद्दीदचच्छवस ऋतम्प्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्।

6. गायत्री मंत्र :

ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि
तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

7. जप संख्या/समय: 19,000 / संध्याकाल

8. समिधः /औषधि : अश्वत्थ/भृंगराज

9. अन्य उपायः अमावस्या व्रत

10. रत्न/उपरत्न दान : पुखराज/पीत जिरकन सुनहला

11. धातु/न्यूनतम वजन : स्वर्ण या रजत / 4 रत्ती

12. बृहस्पति की उंगली : तर्जनी

13. जाप करने का नक्षत्र : पुष्य

14. जाप करने के वार/समय : गुरुवार, प्रथम प्रहर

15. पुराणोक्त स्तवन –

देवानां च ऋषीणांञ्च गुरुं काञ्चन सन्निभम्।।
बुद्धि-भूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम्।।

श्री बृहस्पति ग्रह का संपूर्ण विवरण

गुरु को काल पुरुष की त्वाचा माना गया है इसके संबंध में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं –

रत्न दान	पुखराज
राशि संचार काल	13 माह

समय	प्रभात (सूर्योदय से 3 घंटे तक)
स्वभाव	शुभ, मृदु
समिधा	पीपल की लकड़ी
पुष्प	पीला पुष्प
गुण	सत्व गुण
लिंग	पुरुष
तत्व	आकाश
ऋतु	हेमन्त
प्रतिनिधि पशु	अश्व (घोड़ा)
अवस्था	वृद्ध
दृष्टि	5, 7, 9
मित्र ग्रह	सूर्य, चंद्रमा, मंगल
अंग्रेजी नाम	जुपीटर
स्वामित्व	धनु मीन
मूल त्रिकोण	धनु
उच्च राशि	कर्क
नीच राशि	मकर
वर्ण	पीला
जाति	ब्राह्मण
आकृति	वृत्ताकार
दिशा	उत्तर-पूर्व (ईशान)
धातु	स्वर्ण
शत्रु ग्रह	बुध, शुक्र
सम ग्रह	शनि

काल पुरुष के शरीर में स्थिति	नासिका
भाव का कारकत्व	2, 5, 9, 10, 11
अन्य कारकत्व	विद्या, संतति, मित्रता आदि
स्वरूप	स्थूल
प्रकृति	वात-पित्त-कफ
गोत्र	अंगिरा
वाहन	हाथी
राज्याधिकार	राजगुरु
निसर्गबल	शुक्र से अधिक बली
पराभव	मंगल से पराजित
बली	पूर्वाह्न
स्थान	ग्रामभूमि
शरीर में प्रभाव	कमर व जांघ
दोष शमन	राहु बुध, शनि, मंगल, शुक्र
शुभाशुभ	शुभ
दान पदार्थ	शक्कर, हल्दी, अश्व, पुखराज, स्वर्ण, पीला धान्य, पीला वस्त्र, लवण
मंडल	दीर्घ, चतुरस्त्र
देश	सिन्धु
भाग	उभय
दृष्टि	सम
शरीर में कारक	वसा व कफ
काल समय	मास
स्वाद	मीठा

वार	गुरुवार
कद	मध्यम व ह्रस्व
उपरत्न	पीला ओनेक्स, पीला, सफेद, सुनहला हकीक
संज्ञा	शुभ
क्रीड़ा स्थल	भंडार ग्रह
रोग	मुख रोग, सूजन, स्थूलता दुर्बलता, कमरदर्द, वायु-कफ विकार, कब्ज, फाइलेरिया
रुचि	व्याकरण दर्शन, वेदाभ्यास भाषाशास्त्र व वेदान्त
भाग्योदय	16-22 वर्ष तक
जड़ी	भारंगी या केले की जड़
देवता	ब्रह्मा (समांतर से इंद्र)
दीप्तांश	9 अंश
शुष्कता	मधुर
विद्या	व्याकरण, भाषा ज्ञान, वेद, अंतर्ज्ञान, मनोविज्ञान, ज्योतिष आदि
दान का समय	संध्याकाल

बृहस्पति की शांति के चमत्कारी उपाय

1. बृहस्पति को बलवान करने एवं धन प्राप्ति हेतु पुखराज युक्त 'गुरुयंत्र' कवच धारण करें।

2. गुरु लीलामृत का पाठ अथवा श्रवण करें।
3. हरि पूजन करें या पीपल की पूजा करें।
4. शुद्ध सोना धारण करें। (बृहस्पति षष्ठ भाव में हो तो न पहनें)।
5. पुखराज पहनें। पुखराज के अभाव में हल्दी की गांठ, पीले रंग के धागे में बांधकर दायीं भुजा पर बांधें। गुरुवार को पीले वस्त्र धारण करें।
6. चांदी की कटोरी में केसर/हल्दी का तिलक लगावें।
7. गुरु के कारण उत्पन्न समस्त अरिष्टों के शमन के लिए रुद्राष्टाध्यायी एवं शिवसहस्र नाम क पाठ अथवा नित्य रुद्राभिषेक करने से चमत्कारिक लाभ होता है।
8. पंचम भाव स्थित शनि, गुरु के अरिष्ट शमनार्थ 40 दिन तक वट वृक्ष की 108 प्रदक्षिणा करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग अनुभूत है।
9. बृहस्पतिवार का व्रत 5, 11 या 43 बार रखना।
10. नाभि पर केसर लगाएं या केसर खाएं।
11. श्रीविष्णु भगवान को नमस्कार करना।
12. वैदिक या तांत्रिक गुरु मंत्र का जाप तथा कवच एवं स्तोत्र पाठ अथवा भगवान दत्तात्रेय के तांत्रिक मंत्र का अनुष्ठान करना लाभप्रद है।
13. राहु, मंगल आदि क्रूर एवं पाप ग्रहों से दूषित गुरु कृत संतान बाधा योग में शतचंडी अथवा हरिवंश पुराण एवं संतान गोपाल मंत्र का अनुष्ठान करें अथवा मनचाही संतान कवच धारण करें।
14. पीले कनेर के पुष्प गुरु प्रतिमा पर चढ़ाएं।

15. दत्त भगवान का विधिवत पूजन करें। केले का पूजन करें।
16. किसी सौभाग्यवती को पीत वस्त्रों का दान देवें।
17. मिथुन या कन्या लग्न में बृहस्पति 6, 8 या 12वें स्थान में हो तो बृहस्पति के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए शुद्ध सोने के दो टुकड़े या पुखराज रत्न बराबर वजन के लें। विवाह समय एक टुकड़ा संकल्पपूर्वक नदी में बहा दें तथा दूसरा अपने पास रखें। जब तक दूसरा टुकड़ा जातक के पास रहेगा उसको बृहस्पति का कुप्रभाव स्पर्श नहीं कर पाएगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।
18. प्रश्नमार्ग के अनुसार गुरु महाविष्णु का प्रतिनिधित्व करता है अत: कम से कम पुरुष सूक्त का पाठ और सर्वग्रहशांति हवन अथवा सुदर्शन होम भी कल्याणकारी है।
19. ब्राह्मण एवं देवता के सम्मान, एवं सत्याचरण, सत्य भाषण से गुरु प्रसन्न होते हैं। तथा फलदार वृक्ष लगवाने एवं फलों के दान (केला, नारंगी आदि पीले फल) से बृहस्पति देव प्रसन्न होते हैं।
20. गुरुण पुराण का पाठ करना।

21. गेंदा या सूरजमुखी आदि के पीले फूल लगावें तथा दान करें। मंदिर में पीले फूल चढ़ाने व दान करने से सभी ग्रह प्रसन्न होते हैं।

बृहस्पति मंत्र

गुरु मंत्रों का जाप श्रद्धा, विश्वास और विधि के अनुसार करना चाहिए। गुरु के वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक मंत्र निम्नलिखित हैं –

वैदिक मंत्र

ॐ बृहस्पतेऽप्रति यदर्योऽऽअदर्यो
अर्हामुघद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छव सऽऋतम्प्रजात दस्मासुद्रविणन्धेहिचित्रम।।

तांत्रिक मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।

पौराणिक मंत्र

ह्रीं देवानां च ऋषिणां च गुरु कोचन संन्निभम्।
बृद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॐ बृं बृहस्पतिये नमः।

उपरोक्त बृहस्पति मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नियमित रूप से विधिवत जप करके बृहस्पति पीड़ा का निवारण कर सकते हैं। गुरु मंत्र अल्पतम 11000 जपें, जबकि अधिकतम 76000 जपने पर पूर्ण फलदायी होते हैं।

बृहस्पति अष्टोत्तर शत नामावली

ॐ गुरुवे नमः	ॐ गौप्त्रे नमः
ॐ गोपतिप्रिया नमः	ॐ गुणवतां श्रेष्ठाय नमः
ॐ अव्याय नमः	ॐ जयन्ताय नमः
ॐ जीवाय नमः	ॐ जयावहाय नमः
ॐ अध्वरासक्ताय नमः	ॐ अध्वरकृत्पराय नमः

ॐ नशिने नमः
ॐ चित्तशुद्धिकराय नमः
ॐ बृहद्रथाय नमः
ॐ सुराचार्याय नमः
ॐ धन्याय नमः
ॐ धीवराय नमः
ॐ धनर्द्धराय नमः
ॐ दारिद्रनाशाय नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ अंगिरःकुलंभवाय नमः
ॐ चतुर्भुजाय नमः
ॐ गोचराय नमः
ॐ गुरणां गुरवे नमः
ॐ जयदाय नमः
ॐ आंगिरसाय नमः
ॐ वाचस्पतये नमः
ॐ वाग्निचक्षणाय नमः
ॐ चित्रशिखण्डिजाय नमः
ॐ अभीष्टदाय नमः
ॐ गीर्वाणपोषकाय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ देवपूजिताय नमः
ॐ दयाकराय नमः
ॐ धनुर्मीनाधिपताय नमः
ॐ अंगिरोवर्षसंजाताय नमः
ॐ वरिष्ठाय नमः
ॐ चैत्राय नमः
ॐ बृहस्पतये नमः
ॐ सुरकार्यकृतोद्यमाय नमः
ॐ रिरिशाय नमः
ॐ दिव्यीभूषणाय नमः
ॐ दयासाराय नमः
ॐ दक्षिणायनसंभवाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ धीमते नमः
ॐ गुणाकराय नमः
ॐ गुणिने नमः
ॐ जेत्रे नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ विविक्ताय नमः
ॐ वश्याय नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ बृहद्रानवे नमः
ॐ सुराराध्याय नमः
ॐ गीष्पतये नमः
ॐ धिषणाय नमः
ॐ दैत्यहन्त्रे नमः
ॐ धन्याय नमः
ॐ धनुर्बाणधराय नमः
ॐ सिन्धुदेशधिपाय नमः

ॐ स्वर्णकायाय नमः
ॐ हेमांगदाय नमः
ॐ हेमवषुषे नमः
ॐ पुष्यनाथय नमः
ॐ पुष्परागमणिमंडनमंडिकाश नमः
ॐ पुष्पसमानाभाय नमः
ॐ असमानबलाय नमः
ॐ भूसुराभीष्टदाय नमः
ॐ पुण्यविवर्धनाय नमः
ॐ धनाध्यक्षाय नमः
ॐ धर्मपालनाय नमः
ॐ सर्वापद्विनिवारकायन नमः
ॐ स्वमतानुगतामराय नमः
ॐ ऋक्षराशिमार्गप्रचारवते नमः
ॐ सदानन्दाय नमः
ॐ सत्यसंघाय नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ ब्राह्मणेशाय नमः
ॐ सामनाधिकर्निभुक्ताय नमः
ॐ सर्वलोक वंशवदाय नमः
ॐ सत्यभाषणाय नमः
ॐ लोकत्रयगुरवे नमः
ॐ सर्वगाय नमः
ॐ सर्वेशाय नमः
ॐ सत्य संकल्पमानसाय नमः
ॐ हेमभूषणभूषिताय नमः
ॐ सर्ववेदान्तविदे नमः
ॐ इंद्राद्यमरसंघपाय नमः
ॐ सत्वगुणसंपद्विभावसवे नमः
ॐ भूरियशसे नमः
ॐ धर्मरूपाय नमः
ॐ धनदाय नमः
ॐ सर्ववेदार्थतत्वज्ञाय नमः
ॐ सर्वपापप्तशमनाय नमः
ॐ ऋग्वेदपारगाय नमः
ॐ सुराचार्य नमः
ॐ सर्वांगमज्ञाय नमः
ॐ ब्रह्मपुत्राय नमः
ॐ ब्रह्मविद्याविशारदाय नमः
ॐ बृहस्पतये नमः
ॐ शुभलक्षणाय नमः
ॐ सुरासुरगन्धर्ववन्दिताय नमः
ॐ दयावते नमः
ॐ श्रीमंताय नमः
ॐ सर्वतोविभवे नमः
ॐ सर्वदातुष्टाय नमः
ॐ सर्वदायं नमः
ॐ सर्व पूजिताय नमः

बृहस्पति ग्रह की पूजन विधि

जातक का जब बृहस्पति ग्रह खराब हो तो वह सबसे पहले बृहस्पति ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और यह मंत्र पढ़ें –

विनियोग **ॐ बृहस्पतये इति गृत्समदः ऋषि त्रिष्टुप छन्दोगुरोदेवता गुरुऽ वाहने विनियोगः।**

ध्यान तत्पश्चात्– हाथ में पीला फूल लेकर बृहस्पति का ध्यान करें–

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटीः चतुर्भुजो देवगुरो प्रशान्तः
तथाक्षसूत्रं च कमंडलुम च दण्डं च विभ्र दरदोऽऽमहयम्।
ध्यानं समर्पयामि।

यह मंत्र पढ़कर फूल पूजा स्थल पर चढ़ा दें।

तत्पश्चात्– बृहस्पति को जल चढ़ाएं –

शुद्धोदकं जलं स्नानीतं स्नानं प्रतिगृहताम्।

तत्पश्चात्– हाथ में रोली या चन्दन लेकर बृहस्पति भगवान को अर्पित करें –

ॐ बृहस्पतेऽऽअति यदर्योऽऽअर्हाघुमद्विभाति वक्रतुभज्जनेषु।
यद्दीदयच्छक्सऽऽऋतप्रजात तदस्म्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।
चंदनं समर्पयामि।

तत्पश्चात्– बृहस्पति को चावल (अक्षत) चढ़ाएं।
अक्षतं समर्पयामि।

तत्पश्चात्– फूल चढ़ाएं। **पुष्पं समर्पयामि।**

तत्पश्चात्– मिठाई चढ़ाएं। **नैवेद्यं समर्पयामि।**

ततो नमस्कारं करोमि।

पीले फूल हाथ में लेकर बृहस्पति को प्रणाम करें-

देवानां च ऋषीणां गुरु कां चन सन्निभं।
बृद्धि भूतं ब्यलोकेशं त्वं नमामि बृहस्पतिम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आंगिरस गोत्र बृहस्पतये।
इहागच्छ इहातिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।।

बृहस्पति ग्रह के व्रत के नियम

1. बृहस्पति ग्रह का व्रत गुरुवार को किया जाता है।
2. यह व्रत शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार से किया जा सकता है।
3. व्रत कब तक करें अर्थात् व्रत की संख्या 3 वर्ष पर्यन्त या कम से कम 16 अथवा 26 गुरुवार तक रखें।
4. इस व्रत में नमक पूर्णत: वर्जित है, अत: इस दिन नमक का सेवन किसी भी रूप में न करें।
5. शुद्धता का पूर्णत: ध्यान रखें। सत्य भाषण सत्या चरण के बिना व्रत का फल निष्फल हो जाता है।
6. भोजन के रूप में बेसन के लड्डू या हल्दी से पीले करे मीठे चावलों का गुरु ग्रह को भोग लगाकर प्रसाद रूप में वितरित कर शेष का सेवन करें।
7. सायंकाल गुरु संबंधी वस्तुओं का श्रद्धापूर्वक दान करें। दान करने के बाद ही भोजन का सेवन करना चाहिए। मंदिर में देव दर्शन कर पीले वस्त्र दान करें।
8. भोजन से पूर्व पीले पुष्प और जल से गुरु ग्रह को अर्घ्य दें।
9. व्रत के दिन गुरु मंत्र का 19000 बार जाप करें अथवा

यथा शक्ति 3 या 12 माला कम से कम अवश्य जाप करें।

10. मस्तक पर हल्दी मिश्रित या केसर मिश्रित चंदन लगाएं। पहनने वाले वस्त्र भी पीले का ही प्रयोग गुरुवार को करें।
11. जब व्रत का अंतिम गुरुवार हो तो गुरु मंत्र से हवन करके पूर्णाहुति देकर ब्राह्मणों को मीठा भोजन करवाकर गुरु वस्तुओं का यथाशक्ति दान करें।

बृहस्पति व्रत का लाभ

गुरु ग्रह का व्रत करने से गुरु की अशुभता दूर होती है। बुद्धि विद्या, यश, पुत्र व धन की प्राप्ति होती है। अविवाहित कन्या का विवाह होता है तथा अभीष्ट कार्यों की सिद्धि होती है। स्मरणशक्ति बढ़ती है, एवं सत्परुषों का अचानक सहयोग प्राप्त होता है।

बृहस्पति ग्रह व्रत विधि

बृहस्पति ग्रह का व्रत बृहस्पतिवार के दिन किया जाता है। बृहस्पतिवार का व्रत बुद्धि के विकास, धन की स्थिरता तथा विषम गुरु की शांति के लिए किया जाता है।

गुरुवार का व्रत शुक्ल पक्ष में अनुराधा नक्षत्र तथा प्रथम गुरुवार से प्रारंभ किया जाता है। इस व्रत को कम से कम के 12 माह तक करने का विधान है। यदि इससे अधिक करें तो और भी उत्तम है। इस दिन सर्वप्रथम प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त होकर पीतांबर धारण करें। बृहस्पतिजी की सोने की प्रतिमा, सोने के पात्र में स्थापित करके पीला वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत, पीले फूलों से सुशोभित करें। पीत नैवेद्य से पूजन-

अर्चन कर कुंकुम का लेप लगावें तथा दीप, फल, चंदन, चावल आदि से पूजा करके बृहस्पति के मंत्र की 5 अधिकतम यथाशक्ति एकाक्षक्षरी मंत्र का जाप करें। भोजन में बेसन की बनी मिठाई व पीले चावल का उपयोग कर उपवास समाप्त करें।

उद्यापन

व्रत के अंतिम गुरुवार को उद्यापन करें, वैदिक विधि से श्रद्धापूर्वक हवन व पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मणों को स्वर्ण, पीत वस्त्र, चने की दाल का दान करें तथा बेसन के लड्डुओं का भोजन कराएं और दक्षिणा देवें।

बृहस्पतति शांति के सरल उपाय

1. गुरुवार को पीले वस्त्र पहनें।
2. पीले रुमाल का उपयोग करें।
3. पीले फूल व पीले वस्त्र देव मंदिरों में दान करें तथा पीले फूलों की माला पहनें।
4. सोने के बर्तन से पानी पीयें या सोने से स्पर्शित जल पीएं।

दान की वस्तुएं

सोना, पुखराज, कांसी, हल्दी, कच्ची खांड, पीले वस्त्र, घी, पीले फल, पुष्य, पुस्तक, हाथी, घोड़ा आदि।

बीज मंत्र **ॐ बृं बृहस्पतये नमः।**

तांत्रिक मंत्र **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।**

वैदिक मंत्र

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतु मज्जननेषु।।
यद्दीदयच्छवसअमृत प्रजात तदस्मासु द्रविणं देहि चित्रम्।।

बृहस्पति ग्रह की व्रत कथा

बहुत वर्षों पहले की बात है। उज्जैन नगरी में रामचंद्र नाम का एक सेठ रहता था। उनके परिवार में उनकी पत्नी राजेश्वरी देवी और उनकी दो बेटियां दिव्या और वर्षा थीं।

सेठ रामचंद्र की दोनों बेटियां दिव्या और वर्षा विवाह योग्य हो चुकी थीं। दोनों अत्यधिक सुंदर थीं। उनकी दोनों बेटियों में कई ऐसे गुण विद्यमान थे, जिनसे कि वह कठिन और विपरीत समय में भी धैर्य रख, कार्य कर सकती थीं।

रामचंद्र का हलवाई का व्यवसाय था। उनकी दुकान की मिठाई राज्य भर में प्रसिद्ध थीं। दूर-दूर से लोग उज्जैन में उनकी दुकान की बनी हुई मिठाई लेने आते थे।

एक बार एक भिखारी सा दिखने वाला एक व्यक्ति उनकी दुकान पर आया। उसकी दाढ़ी बड़ी हुई थी। सिर के बाल बेतरतीब से इधर-उधर बिखरे हुए थे और बालों में धूल-मिट्टी जमी हुई थी। उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि कई महीनों से उसने स्नान न किया हो। उसने एक बहुत पुराना सफेद रंग का उजला चौंगा पहना हुआ था। उसके गले में रुद्राक्ष की माला थी। हाथ में खोपड़ी कपाल जैसा भिक्षा पात्र था।

अलख जगाता हुआ वह दुकान के आगे आकर खड़ा हो गया और बोला-'भिक्षाम् देहि।' रामचंद्र ने थोड़ी सी मिठाई उसके पात्र में डालनी चाही तो वह एक कदम पीछे हटता हुआ गुर्राकर

बोला - 'नहीं, हम अकेले नहीं हैं। हमारे साथ सैकड़ों साधुओं का एक काफिला है। सभी ने बहुत समय से मिष्ठान का स्वाद नहीं चखा है। हम केवल अपने लिए नहीं मांगते बल्कि सभी के लिए मांगते हैं।'

रामचंद्र ने थोड़ी और अधिक मिठाई देनी चाही तो बाबा फिर बोला-'बच्चा! ऐसा प्रतीत होता है जैसे तू हमारा मतलब नहीं समझा।' यह सुनकर रामचंद्र ने कहा-'बाबा! आप स्पष्ट बताएं कि आपको क्या चाहिए? क्योंकि जो मिठाई में दे रहा हूँ, वह तो आप ले ही नहीं रहे हैं।'

इस पर बाबा ने कहा-'बच्चा! हमें तो तुम्हारी दुकान की सारी मिठाई चाहिए।' रामचंद्र ने कहा-'मगर बाबा, ऐसा कैसे हो सकता है? भिक्षा मांगने वाला भिक्षा की सीमा कैसे निर्धारित कर सकता है? भिक्षा देने वाले यजमान के ऊपर निर्भर करता है कि वह याचक को कितना देता है।'

रामचंद्र की यह बातें सुनकर बाबा ने कहा-'बच्चा! तुम ठीक कहते हो पर हम भी अपने स्थान पर सही हैं। हम देख रहे हैं कि तुम्हारे ऊपर गुरू की कोप दृष्टि पड़ी हुई है। जो तुम्हें तबाह और बर्बाद कर देगी। तुम नहीं जानते बृहस्पति ग्रह की विपरीत चाल से कितनी हानि उठानी पड़ सकती है। इसलिए हमने सारी मिठाई मांगी है। जिसे हम अपने सभी शिष्यों में वितरित कर देंगे। जिससे कि गुरु ग्रह की नजर तुम्हारे ऊपर ठीक हो जाएगी।'

यह सुनकर रामचंद्र ने कहा-'बाबा! आप जो कह रहे हैं वह सत्य है। इसका मैं कैसे विश्वास करूं?'

बाबा ने कहा-'बच्चा! हम कोई ढोंगी साधु नहीं हैं। हम

ज्योतिष के ज्ञाता हैं। हमें गलत मत समझ। इस नगरी के बाहर वन में हमारा बसेरा है। हम प्रभु चिंतन में लीन रहने वाले बाबा हैं। यदि तुझे विश्वास हो तो दे, ना हो तो मना कर, ताकि हम आगे बढ़ें।'

रामचंद्र ने कहा–'आप कहीं और जाइए, बाबा। मैं यहां धन अर्जित करने के लिए मिठाइयां बेचता हूँ। मुफ्त में बांटने के लिए नहीं बैठा।'

इस पर बाबा ने कहा–'बच्चा! जैसी तेरी इच्छा, पर यह ध्यान रख, तू बहुत पछताएगा। हमने तो तेरे भले के लिए ही कहा, तू नहीं मानता तो मत मान। पर इतना सुन ले कि जब तू बर्बाद होने लगे, तुझे बाबा की कही बातें याद आएं, तो बाबा को याद करना। बाबा तो दुबारा तुझे ढूंढने से भी नहीं मिलेंगे। मगर वे तेरा भला चाहते हैं। इसलिए तुझे पहले से ही बता रहे हैं। तू गुरु ग्रह को प्रसन्न करने के लिए सात बृहस्पतिवार व्रत रखना। एक समय भोजन करना। प्रसाद के रूप में मिठाई वितरित करना। आठवें बृहस्पतिवार को उद्यापन करना, वस्त्र और फल-मिष्ठान का दान देना। इस प्रकार बृहस्पति ग्रह तुझसे प्रसन्न होंगे। उनकी टेढ़ी दृष्टि और चाल ठीक होगी। तेरा भला होगा। अलख निरंजन, अलख निरंजन।' इतना बताकर अलख जगाता हुआ, वह अलौकिक तेज वाला साधु वहां से दूर होता चला गया और अन्तर्धान हो गया। सेठ रामचंद्र इस बात को साधारण समझकर अपने काम में जुट गए।

कुछ दिनों पश्चात, एक दिन राजा उग्रसेन का एक सिपाही रामचंद्र की दुकान पर आया और उसने कहा–'रामचंद्र! महाराज ने मिठाई मंगाई है। दुकान में जितनी भी मिठाइयां हैं, सभी बांध

दो।' यह आज कोई नई बात नहीं थी। रामचंद्र की दुकान से हर हफ्ते राजमहल मिठाई जाती रहती थी। अत: रामचंद्र ने अपने नौकरों को सभी मिठाइयां तौल कर पैक करने का आदेश दे दिया।

अगले दिन-रामचंद्र ने सुबह जब अपनी दुकान खोली तो राजा के सैनिक दुकान पर आ पहुंचे। सेनापति ने कठोर मुद्रा में अपने सैनिकों को आदेश दिया-'गिरफ्तार कर लो इसे और महाराज के पास ले चलो।'

यह सुनकर रामचंद्र दोनों हाथ जोड़कर विनीत भाव से बोला-'मेरा अपराध क्या है?' सेनापित ने कहा-'कल जो तुम्हारे यहां से महल में मिठाइयां गईं थीं, वह दोषपूर्ण थीं। मिठाइयां खाकर राजमहल में सभी लोग बेहोश हो गए और इसी मध्य राजमहल में चोरी हो गई।' रामचंद्र ने कहा-'मगर।' सेनापति ने कहा-'तुम्हें अपनी सफाई में जो कुछ कहना हो, महाराज से कहना, ले चलो इसे।' इस प्रकार सैनिक, रामचंद्र को गिरफ्तार करके ले गए।

राजमहल में पहुंचकर, रामचंद्र ने अपनी सफाई में काफी अनुनय-विनय की किन्तु महाराज ने कहा-'रामचंद्र! कसूरवार तुम ही हो, तुम चोरों से मिले हुए हो। तुम्हारी मिठाई की जांच कराने पर पाया गया कि उसमें बेहोशी की दवा मिली हुई थी। अब तुम अतिशीघ्र अपने चोर साथियों के नाम-पता बता दो, अन्यथा तुम्हें कठोर दंड मिलेगा।'

महाराज की बातें सुनकर, रामचंद्र की समझ में कुछ न आया। उसने जब ऐसा किया ही नहीं था जो वह चोरों के विषय में क्या बता सकता था। उसने सिर्फ इतना ही कहा-'महाराज!

मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ। मेरा कोई साथी नहीं है। मैंने कोई चोरी नहीं की, मैं निर्दोष हूँ।'

मगर राजा को उसकी दी गई सफाई पर विश्वास नहीं हुआ। रामचंद्र को कारागार में डाल दिया गया। जहां उसे कठोर यातनाएं दी जाने लगीं।

कारागार में रात भर कराहते हुए रामचंद्र की कब आंख लग गई उसे पता ही नहीं चला। स्वप्न में उसने उसी साधु बाबा को देखा। रामचंद्र ने कहा-'बाबा! मैं निर्दोष हूँ।' बाबा ने कहा-'बच्चा! हमने तुम्हें पहले ही सावधान किया था, परन्तु तुम्हें हमारी बात पर विश्वास नहीं हुआ। यह सब गुरु के कोप का परिणाम है। इसके लिए व्रत करो। उद्यापन करो, दान दो, तभी गुरु ग्रह शांत होंगे।'

रामचंद्र ने कहा-'बाबा! मुझे क्षमा करें, मुझसे बड़ी भारी भूल हो गई जो मैंने आपकी बातों पर विश्वास नहीं किया, परन्तु अब तो मैं यहां काल कोठरी में पड़ा हुआ हूँ, फिर व्रत किसी प्रकार कर पाऊंगा।'

बाबा ने कहा-'रामचंद्र! चिंता मत करो। कल तुम्हारा परिवार तुमसे मिलने आएगा। तुम उन्हें सारा वृत्तांत कह सुनाना। यदि वे व्रत करेंगे, तब भी गुरु ग्रह शांत हो जाएंगे।' इतना कहकर बाबा अन्तर्धान हो गए। रामचंद्र का स्वप्न टूट गया।

अगले दिन, रामचंद्र अपने परिवार वालों की प्रतीक्षा करने लगे। उसकी दोनों बेटियां-दिव्या और वर्षा उससे मिलने वहां आईं। उन्होंने बताया कि-'हमारा घर-बार, संपत्ति सब राजा ने हड़प ली है। वह और उनकी मां अब एक झोंपड़ी में आश्रय

लिए हुए हैं। वह बोली–'पिताजी। न जाने क्यों हम पर यह विपत्तियों के पहाड़ टूट पड़े हैं। हमें समझ नहीं आता है कि हमारे साथ ऐसा क्यों हो रहा है।'

यह सुनकर रामचंद्र ने कहा–'चिंता मत करो मेरी बच्चियों, मैं जानता हूँ। ऐसा क्यों हो रहा हा। हमारे गुरु ग्रह हमसे रुष्ट हुए हैं। यही कारण है कि हमारी ऐसी दुर्दशा हुई है।' और फिर उसने साधु बाबा के विषय में और उनसे हुई वार्तालाप के विषय में और स्वप्न के विषय में सब कुछ कह सुनाया।'

रामचंद्र की बातें सुनकर दिव्या और वर्षा ने कहा–'पिताजी! आप चिंता न करें, हम गुरु ग्रह का व्रत रखेंगी। गुरु ग्रह को प्रसन्न करेंगी। दान देंगी और उद्यापन करेंगी।' तब यह सुनकर रामचंद्र ने कहा–'मगर मेरी बच्चियों, यह सब तुम कैसे कर पाओगी। इस सबको करने करने के लिए तुम धन की व्यवस्था कैसे करोगी?'

तब दिव्या बोली–'पिताजी आप चिंता न करें। हम दोनों बहनों के कानों में यह सोने की बालियां मौजूद हैं। ये फिर कब काम आएंगी। हम इन्हें बेच देंगी। फिर इससे जो धन प्राप्त होगा, हम उसी से व्रत रखेंगी।' रामचंद्र ने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी आंखें भर आईं।

अगले दिन बृहस्पतिवार था। दोनों बहनों ने अपने कानों की बालियां बेच दीं और व्रत रखा। समय गुजरते हुए देर न लगी। उनके व्रत पूरे हुए। पूरे विधि-विधान से उद्यापन कर, उन्होंने वस्त्रों का दान दिया और जब व्रत उद्यापन पूरा हो गया, तब सैनिकों ने कुछ चोर पकड़े। उनसे कड़ी पूछताछ की गई।

उन्होंने बताया कि–'रामचंद्र हलवाई की दुकान से जो मिठाई

राजमहल में आई थी। उस मिठाई में रामचंद्र के एक नौकर से मिलकर हमने बेहोशी की दवा मिला दी थी और राजभवन में चोरी कर ली थी।'

चोरों की बातें सुनकर राजा उग्रसेन कारागृह में पहुंचे। उन्होंने रामचंद्र को रिहा करने का आदेश दिया और बोले-'रामचंद्र! आज हमें सच्चाई का पता चल गया। तुम बेकसूर हो। हमें क्षमा करो।'

राजा उग्रसेन की बातें सुनकर, रामचंद्र फूट-फूटकर रो पड़ा। फिर रोते-रोते उसने सारा वृतांत कह सुनाया। तब राजा उग्रसेन ने कहा-'रामचंद्र! यह तो बड़ी अद्‌भुत बात हुई। हम आज ही इस कथा को प्रचारित करा देगे। ताकि प्रजा भी जान ले कि गुरु के रुष्ट होने पर उन्हें क्या करना चाहिए।'

फिर राजा उग्रसेन ने, रामचंद्र की चल-अचल संपत्ति लौटा दी और उसे सम्मानपूर्वक विदा किया।

शुक्रदेव का परिचय

शुक्रदेव भृगु गोत्र के ब्राह्मण हैं, भोजकट देश के स्वामी हैं, कमल पर बैठे हुए श्वेत वर्ण के चारों हाथों में रुद्राक्ष, वरमुद्रा, शिला एवं दंड है। इनके अधिदेवता इंद्र हैं और प्रत्यधि देवता चंद्रमा हैं।

शुक्र हमारे सौर परिवार का सूर्य के पश्चात सबसे अधिक दैदीप्यमान (चमकीला) ग्रह है। जो सूर्योदय से पूर्व तथा सूर्यास्त के बाद दिखाई देता है। यह पृथ्वी से बहुत अधिक दूर नहीं है। यह आकार, भार और घनत्व में पृथ्वी के समान है।

यह पृथ्वी से लगभग 3,43,00,000 मील और सूर्य से लगभग 10.75 करोड़ किलोमीटर अर्थात 6,70,00,000 मील की दूरी पर स्थित है। यह सूर्य से 40 अंश के अंदर रहता है। ऐसा माना जाता है। उस समय पृथ्वी से इसकी दूरी मात्र 20,00,000 मील रह जाती है। यह सूर्य की परिक्रमा लगभग 225 दिनों में पूरी कर लेता है। इसका व्यास लगभग 7,700 मील है। यह अन्य ग्रहों के समान ही कभी-कभी वक्री होता है। शुक्र ग्रह 227 वर्षों के उपरांत ठीक उसी तिथि, मास, दिन, अंश पर उसी स्थान पर आ जाता है।

यह पृथ्वी, चंद्रमा और बुध की भांति ठोस है, सतह पथरीली और वायुमंडल में कार्बनडाइआक्साइड, फार्मेक्डीहाइड, गंधक अम्ल की वाष्पों के घने बादल हैं। पृथ्वी की तुलना में इस पर कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा अधिक है तथा आक्सीजन और जल अनुपस्थित हैं। यह चंद्रमा की तरह कलाएं दिखाता है।

शुक्र स्त्री जाति, श्याम वर्ण, दक्षिण-पूर्व दिशा का स्वामी तथा जल तत्वाय ग्रह है। शुक्र शरीर में वीर्य और कफ का कारक है। यह वीर्य विकार, सभी प्रकार के गुप्त रोग उत्पन्न करता है। जातक के जीवन में समस्त प्रकार के भोग विलास, संगीत, चित्रकारिता, विलासिता के सामान, घर और वाहन, स्त्री आदि के सुखों का विचार शुक्र की स्थिति देखकर किया जाता है। भोग और विलास का प्रतिनिधि ग्रह शुक्र को नवग्रह मंडल में मंत्री का पद प्राप्त है। जातक को इस जीवन में कब, कैसे, कितनी मात्रा में, कहां से, किस प्रकार मन और आत्मा को सुख मिलेगा, इसकी जानकारी जन्म कुंडली में पड़ा शुक्र देता है। अत: यह कहा जा सकता है कि जिसकी जन्म कुंडली में शुक्र बिगड़ा हुआ हो, उस व्यक्ति का जीवन इस पृथ्वी पर व्यर्थ हो जाता है। सूर्य के संग यह बलहीन नहीं होता। चन्द्रमा से शुक्र का और शुक्र से बुध का बल बढ़ता है।

शुक्र प्रभाव का व्यक्ति कलहकारी नहीं होता वह पुलिस, कोर्ट-कचहरी जैसे झंझटों से दूर रहना चाहता है। वह जीवन में प्रसन्नता, व्यवस्था और शांति चाहता है। पुरुषों की कुंडली में स्त्री राशि में और स्त्रियों की कुंडली में पुरुष राशि में शुक्र श्रेष्ठ फल देता है। निर्बल शुक्र वाला व्यक्ति नीरस, उदास, प्रेम, लालसा और उत्कण्ठा से रहित, गीत, संगीत और कला से विमुख तथा भीरू प्रवृत्ति का होता है।

यह सौम्यता, सौन्दर्य, ऐश्वर्य शारीरिक, सामाजिक और भौतिक सुख, मधुरवाणी, प्रेम और सहानुभूति, मधुर, रुचि, अन्न, धन, पुष्प, इत्र जैसी सुगंधित वस्तु, विवाह, वैवाहिक जीवन व स्त्री सुख का कारक है। शुक्र ग्रह इसी प्रकार के और

इनसे संबंधित अन्य सभी सुखों का प्रतीक है, अतः यह वाद्यंत्र, गीत, संगीत, नृत्य, अभिनय, पेंटिंग और अन्य कलाओं का भी कारक है।

यह स्थूल देह, सुंदर, आकर्षक और बड़े नेत्र, गेहुंआ रंग, काले महीन और घुंघराले बाल, आकर्षक व्यक्तित्व, स्त्री, ब्राह्मण, रजोगुणी, द्विपाद, जलतत्व, श्वेत रंग, असुरों का गुरु, बसंत ऋतु का स्वामी, वात, कफ और कामुक प्रकृति, भौतिक विषय सुख भोग और श्रृंगार रस का ग्रह है।

शुक्र राशि के मध्य में अपना पूर्ण फल देता है। जिस प्रकार बृहस्पति को देव गुरु का पद प्राप्त है, उसी प्रकार शुक्र को दैत्यों का गुरु होने का गौरव प्राप्त है। शुक्र को एक आंख से अंधा माना जाता है। शुक्र नैसर्गिक रूप से शुभ ग्रह होकर सदा शुभफलदायक ही होता है, अतः जातक को अशुभ फल प्रायः कम मात्रा में ही मिलते हैं।

शुक्र ग्रह शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, दानोपाय तथा रत्नादि धारण विधि

1. परिचय : पूर्वे पंचकोणमंडल अंगुल 9, भोजकट देशोद्भवभार्गवः सगोत्र श्वेतवर्ण। दान पदार्थ : श्वेत चित्र वस्त्र, श्वेताश्व, श्वेत पुष्प, धेनु, श्वेत चंदन, हीरा, चांदी, स्वर्ण, चावल, सुगंध, घृत शर्करा।

2. जपनीय एकाक्षरी मंत्र – **ॐ शुं शुक्राय नमः।**

3. जपनीय बीज मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।**

4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र – **ॐ द्रां दीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**

5. जपनीय वैदिक मंत्र :

ॐ अन्नात्परिरस्त्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः।
सोमं प्रजापितः ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानꣳ
शुक्र मन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोअमृतंमधु।।

6. गायत्री मंत्र :

ॐ भृगजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि
तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।

7. जप संख्या/समय: 16,000 / सूर्योदयकाल
8. समिध: /औषधि : उदुम्बर/मंजिष्ठा
9. अन्य उपाय: गो प्रतिपालन, बंधु का सम्मान सहयोग
10. रत्न/उपरत्न दान : हीरा/श्वेत जिरकन
11. धातु/न्यूनतम वजन : प्लेटिनम या चांदी/91 रत्ती
12. शुक्र की उंगली : तर्जनी/मध्यमा
13. जाप करने नक्षत्र : भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
14. जाप करने का वार/समय : शुक्रवार/प्रथम प्रहर
15. पुराणोक्त स्तवन –

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

शुक्र ग्रह का संपूर्ण विवरण

शुक्र ग्रह को काल पुरुष का काम माना गया है अत: कामेच्छा का प्रतीक है। इसके संबंध में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं –

रत्न दान	हीरा
उपरत्न दान	ओपल, सफेद जिरकन, स्फटिक
राशि संचार काल	एक माह

समय	अपराह्न
स्वभाव	शुभ, लघु व मृदु
समिधा	गूलर
पुष्प	सफेद पुष्प
गुण	रजोगुण
तत्व	जल तत्व
ऋतु	बसंत
प्रतिनिधि पशु	सफेद घोड़ा
अवस्था	युवा
वर्ण	चमकदार, चितकबरा, सफेद
जाति	ब्राह्मण
आकृति	लम्बा, खंड
दिशा	आग्नेय
धातु	चांदी, गिलट
लिंग	स्त्री
मित्र ग्रह	बुध, शनि
शत्रु ग्रह	सूर्य, चंद्र
सम ग्रह	मंगल, गुरु
शरीर में स्थिति	दोनों नेत्र
भाव का कारकत्व	सप्तम
स्वामित्व	वृष, तुला
अंग्रेजी नाम	वीनस
मूल त्रिकोण	तुला
उच्च राशि	मीन
नीच राशि	कन्या

अन्य कारकत्व	वाहन, भौतिक सुख, आभूषण, ऐश्वर्य, कवित्व आदि
स्वरूप	तेजस्वी, घुंघराले श्याम केशयुक्त
स्वाद	खट्टा
वार	शुक्रवार
संज्ञा	शुभ
शरीर में प्रभाव	जननांगों पर
क्रीड़ा स्थल	शयनकक्ष
प्रकृति	कफ
गोत्र	भार्गव
वाहन	अश्व
राज्याधिकार	गुप्तमंत्री या प्रधान नायिका
कद	छोटा
निसर्गबल	चंद्र से कम बली
पराभव	चंद्र से पराजित
बली	सायंकाल में
स्थान	जलभूमि
रुचि	ललित कलाएं
भाग्योदय	25–28 वर्ष तक
शुभाशुभ	शुभ
दान पदार्थ	श्वेत अश्व, सवत्स गो, सोना, चांदी, चावल, सुगंधित पद, श्वेत वस्त्र, चंदन
देश	भोजक
देवता	देवी इन्द्राणी

स्वामित्व	वृष व तुला
शुष्कता	अम्लीय
रोग	वीर्य विकार, गुप्त रोग, मधुमेह प्रमेह, धातु क्षय, मूत्ररोग, कफ-वात एवं उदर विकार व नेत्र रोग
दोष शमन	राहु, बुध, शनि व मंगल
जड़ी	सरपंखा मूल
दान का समय	सूर्योदयकाल
मंडल	षटकोण
भाग	शीर्ष
दीप्तांश	7 अंश
शरीर में कारक	वीर्य, ओज व ज्योति
काल समय	पक्ष
विचारणीय विषय	स्त्री, वाहन, व्यापार, आभूषण, राजनैतिक षडंयंत्र एवं सुख
विद्या	ललित कलाएं, पेंटिंग, चित्रकला, फोटोग्राफी शिल्प, चिकित्साशास्त्र आदि

शुक्र शांति के चमत्कारी उपाय

1. श्रीसूक्त, लक्ष्मी सूक्त और कवच अथवा भाग्यशाली मंत्र अथवा भाग्योदयी मंत्र का जाप लाभकारी सिद्धि मंत्र भी है।
2. विलंब विवाह में मोहिनी कवच या कामदेव मंत्र का जाप कल्याणकारी एवं विलंबी बाधाओं को दूर करता है।

3. शुक्र मंत्र के जप स्तोत्र, कवच या शतनाम सहित सौन्दर्य लहरी (आचार्य शंकरकृत) का कम से कम एक श्लोक रोज पढ़ना चाहिए।
4. पत्नी सुख एवं चारों तरफ वर्चस्व बढ़ाने के लिए धन एवं व्यापार की वृद्धि हेतु जिरकन युक्त अंगूठी 'शुक्र मंत्र' का जाप कर धारण करें।
5. 21 शक्रवार को श्वेत वस्तुओं का दान करें।
6. 'ॐ नमः' का जप करें।
7. शुक्र की होरा में निर्जल रहें।
8. शुक्रवार का व्रत 5, 11, या 43 बार करें।
9. घी, दही, कपूर, अदरक आदि का दान करे या बहते जल में प्रवाहित करें। सफेद फूल देव मंदिर में दान करें।
10. हीरा पहनें। हीरे के अभाव में सच्चा मोती पहनें।
11. स्त्री का कहना मानें, स्त्री के कार्यों में सहयोग करें या स्त्री से झगड़ा न करें।
12. स्त्री के साथ प्रतिवर्ष विवाह की वर्षगांठ पर विवाह उत्सव मनाएं।
13. शुक्र उच्च का हो तो शुक्र की चीजों का दान न दें और शुक्र नीच का हो तो शुक्र की चीजों का दान न लें।
14. सफेद गुलाब के पुष्पों को कुएं अथवा नदी में प्रवाहित करें।
15. श्री सूक्त का पाठ करें।
16. फटी हुई या जली हुई पोशाक धारण न करें। पोशाक ठीक रखें और दिन में 1-2 बार बदलें।
17. बछड़े वाली गाय का दान या सेवा करें। यह ध्यान रहे

गाय अंगहीन न हो।

18. आम लोगों की सेवा करें। सप्ताह या माह में अतिथियों को भोजन कराएं।
19. कपड़े पर इत्र या सेंट लगाएं व शरीर पर क्रीम पाउडर लगाएं।
20. स्वर्ण अथवा रजत का दान करें।
21. प्रत्येक शुक्रवार घी, तिल, जौ आदि से यज्ञ करें।
22. शुक्र पीड़ा की विशेष शांति हेतु झिरझिटा, मेनसिल, कुमकुम और कटहल मिलाकर 7 शुक्रवार तक स्नान करें।
23. हरिवंश पुराण के अनुसार गौ के पालन व दान में पुत्र लाभ होगा
24. शुक्र शांति का सर्वोत्तम उपाय दुर्गा सप्तशती का विधिवत पारायण है। मारकेश होने पर शतचंडी अनुष्ठान अवश्य कराना चाहिए। इससे शुक्रकृत समस्त अरिष्ट दूर हो जाते हैं।
25. भगवती कमला की आराधना शुक्रजन्य समस्त पीड़ाओं में अमोघ है।
26. शुक्र के कारण उत्पन्न व्याधि की अवस्था में इंद्राणी कवच करना चाहिए। धन हानि में कनकधारा या अन्नपूर्ण स्तोत्र अथवा धनदायक्षिणी का प्रयोग करें।

शुक्र मंत्र

शुक्र मंत्रों का जाप श्रद्धा, विश्वास और विधि के अनुसार करना चाहिए। शुक्र के वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक मंत्र

निम्नलिखित हैं –

वैदिक मंत्र

अन्नात्परिश्रुतो रसंब्रह्मणाव्व्यपिबन्तक्षत्रम्प्यः सोमप्रजापति।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियव्विपानञशुक्रमन्धसऽएन्द्रयेनिद्रमिदं
पयोऽमृतं लघु।।

तांत्रिक मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

पौराणिक मंत्र

ॐ शुं शुक्राय नमः
ह्रीं हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तातम् भार्गव प्रणमाम्यहम्।।

उपरोक्त शुक्र मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नियमित रूप से विधिवत जप करके शुक्र पीड़ा का निवारण कर सकते हैं। गुरु मंत्र अल्पतम 16000 जपें, जबकि अधिकतम 64000 जपने पर पूर्ण फलदायी होता है।

शुक्र अष्टोत्तर शत नमस्कार नामावली

ॐ शुक्राय नमः	ॐ शुभगुणाय नमः
ॐ शोभनाक्षाय नमः	ॐ दीनार्तिहारकाय नमः
ॐ देवाभिवन्दिताय नमः	ॐ कामपालाय नमः
ॐ कल्याणदायकाय नमः	ॐ शुभ्रवाहाय नमः
ॐ भद्रगुणाय नमः	ॐ भक्तपालनाय नमः
ॐ भुवनाध्याक्षाय नमः	ॐ सर्वलक्षणसंपन्नाय नमः
ॐ चारुरूपाय नमः	ॐ निधये नमः
ॐ नीतिविद्याधुरंधराय नमः	ॐ समानाधिकनिर्मुक्ताय नमः

ॐ भृगवे नमः
ॐ मानदाय नमः
ॐ बलिप्रसन्नाय नमः
ॐ भवपाशपरित्यागाय नमः
ॐ कुंबुग्रीवाय नमः
ॐ श्वेतांबराय नमः
ॐ अचिन्त्याय नमः
ॐ नीतिमार्गदाय नमः
ॐ शुभलक्षणाय नमः
ॐ दैत्यगुरवे नमः
ॐ कवये नमः
ॐ भ्रदभूर्तये नमः
ॐ भोगदाय नमः
ॐ चारुचन्द्रनिभाननाय नमः
ॐ सर्वावगुणवर्जिताय नमः
ॐ भोगकराय नमः
ॐ मान्याय नमः
ॐ अभयदाय नमः
ॐ बलिबन्धविमोचकाय नमः
ॐ कल्याणगुणवर्द्धनाय नमः
ॐ अक्षमालधराय नमः
ॐ नयदाय नमः
ॐ क्लेशनाशकराय नमः
ॐ हृषीकेशाय नमः
ॐ शान्तमतये नमः
ॐ भूमिसुरपालनतत्पराय नमः
ॐ मायातीताय नमः
ॐ बलिने नमः
ॐ धनाशयाय नमः
ॐ कारुण्यरससंपूर्णय नमः
ॐ चतुर्भुजसमन्विताय नमः
ॐ नक्षत्रगणसंचारा नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ शुद्धस्फटिकभास्वराय नमः
ॐ काव्यासक्ताय नमः
ॐ शुभदाय नमः
ॐ भार्गवाय नमः
ॐ चारुशीलाय नमः
ॐ निखिलशास्त्रज्ञाय नमः
ॐ सकलागमपारगाय नमः
ॐ मनस्विने नमः
ॐ महायशसे नमः
ॐ सत्यपराक्रमाय नमः
ॐ धनाध्यक्षाय नमः
ॐ श्वेतबपुषे नमः
ॐ अधीणगुणभासुराय नमः
ॐ वर्षप्रदाय नमः
ॐ चिन्तितार्यप्रदाय नमः
ॐ भृगुसुताय नमः
ॐ आधिव्याधिहराय नमः

ॐ पुण्यदायकाय नमः
ॐ अजेयाय नमः
ॐ मन्दहासाय नमः
ॐ मुनिसन्नुताय नमः
ॐ असुरपूजिताय नमः
ॐ भाग्यवदाय नमः
ॐ गोप्त्रे नमः
ॐ ज्येष्ठाय नमः
ॐ ज्येष्ठे नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ चित्तमसाधिकृते नमः
ॐ पुराणपुरुषाय नमः
ॐ विजितारातये नमः
ॐ संर्वागीर्वाणगणसन्नुताय नमः
ॐ रत्नसिंहासनारूढ़ाय नमः
ॐ शुरशत्रुसुहृदे नमः
ॐ तुलावृषभरराशीशाय नमः
ॐ भव्यचारित्राय नमः
ॐ गुणिने नमः
ॐ श्रेष्ठाय नमः
ॐ सन्तानफलप्रदायकाय नमः
ॐ पूज्याय नमः
ॐ विविधाभरणोज्जवलाय नमः
ॐ मुक्ताफलसमानाभाय नमः
ॐ रथस्थाय नमः
ॐ दुर्द्धराय नमः
ॐ भवपाशविमोचकाय नमः
ॐ गुणविभूषणाय नमः
ॐ शुचिस्मिताय नमः
ॐ शुचिस्मिताय नमः
ॐ सवैश्र्वर्यप्रदाय नमः
ॐ भूरिविक्रमाय नमः
ॐ पुरुहूतादिसन्नुताय नमः
ॐ कुन्दपुष्पप्रतीकाशाय नमः
ॐ मुक्तिदाय नमः
ॐ रजतप्रभाय नमः
ॐ सुर्यप्राग्देशसंचाराय नमः
ॐ धर्मपालकाय नमः
ॐ गौड़देशेश्र्वराय नमः
ॐ ज्येष्ठानक्षत्रसंभूताय नमः
ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
ॐ सर्व भार्गवाय नमः

शुक्र ग्रह की पूजन विधि

जातक का जब शुक्र ग्रह खराब हो तो वह सबसे पहले शुक्र ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और

यह मंत्र पढ़ें -

विनियोग

ॐ अन्नात्परिस्त्रुता इति प्रजापत्य ऋषि सरस्वती इन्द्रादि देवता जगतीच्छन्दः शुक्रो देवता शुक्र वाहने विनियोगः

ध्यान-तत्पश्चात्- हाथ में सफेद फूल अथवा चावल लेकर शुक्र का ध्यान करें-

श्वेताम्बरः श्वेत वपुः किरोटी चतुर्भुजो दैव्य वरः प्रशान्तः
तथाक्ष सूञ्च कमंडलुञ्च दण्डञ्च विभ्र दरदोऽस्तु महयम्।
अथ ध्यानं समर्पयामि।

यह मंत्र पढ़कर फूल पूजा स्थल पर चढ़ा दें।

तत्पश्चात्- शुक्र को जल चढ़ाएं -

शुद्धोदकं जलं स्नानीतं स्नानं प्रतिगृहताम्।

तत्पश्चात्- हाथ में रोली या चन्दन लेकर शुक्र भगवान को अर्पित करें -

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रस ब्रह्माणा व्व्यपिबत्क्षत्रं प सोमं प्रजापति।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपान शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिंद पयोऽमृतं मधु।
चंदनं समर्पयामि।

तत्पश्चात्- शुक्र को चावल (अक्षत) चढ़ाएं।

अक्षतं समर्पयामि।

तत्पश्चात्- फूल चढ़ाएं। **पुष्पं समर्पयामि।**

तत्पश्चात्- मिठाई चढ़ाएं। **नैवेद्यं समर्पयामि।**

ततो नमस्कारं करोमि।

सफेद फूल अथवा चावल हाथ में लेकर शुक्र को प्रणाम करें-

हिमकुंदं मृणालाभं दैत्याजाम् परमं गुरुं।
सर्व शास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणभाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशोद्भव भार्गवसगोत्र भो।
शुक्र इहागच्छ इहातिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।।

शुक्र ग्रह के व्रत के नियम

1. इस ग्रह का व्रत शुक्रवार को किया जाता है।
2. यह व्रत किसी भी शुक्ल पक्ष के प्रथम शुक्रवार से प्रारंभ किया जा सकता है।
3. व्रत कब तक करें अर्थात व्रत की संख्या एक वर्ष पर्यन्त या 21 या 31 शुक्रवार तक व्रत रखें।
4. नमक पूर्णतः वर्जित है, किसी भी रूप में व्रत वाले दिन नमक का सेवन न करें।
5. शुद्धता का पूर्ण ध्यान रखें।
6. भोजन के रूप में चावल, खाण्ड, खीर या दूध से बने पदार्थों का शुक्र देव को भोग लगाकर प्रसाद रूप में वितरित करके शेष का सेवन सांयकाल श्रद्धापूर्वक करें।
7. भोजन का सेवन शुक्र ग्रह संबंधी दान के पश्चात ही करें।
8. भोजन से पूर्व दूध, सफेद पुष्प और जल से शुक्र ग्रह के निमित्त अर्घ्य दें।
9. व्रत के दिन शुक्र मंत्र का 16000 बार जाप करें या कम से कम 6 या 15 या फिर 24 माला का जाप अवश्य करें।
10. मस्तक पर सफेद चंदन का तिलक लगाएं। पहनने वाले वस्त्रों में सफेद रंग का ज्यादा प्रयोग करें।
11. जब व्रत का अंतिम शुक्रवार हो तो शुक्र मंत्र से हवन करके पूर्णाहुति देकर ब्राह्मणों को मीठा भोजन कराकर शुक्र वस्तुओं का यथाशक्ति दान करें।

शुक्र व्रत का लाभ

शुक्र ग्रह का व्रत करने से शुक्र की अशुभता दूर होती है। सभी प्रकार की सुख-संपन्नता के साधन प्राप्त होते हैं। धन लाभ होता है। अविवाहित युवकों को विवाह सुख प्राप्त होता है।

शुक्र ग्रह व्रत विधि

शुक्र ग्रह का व्रत शुक्रवार के दिन किया जाता है। शुक्रवार का व्रत करने से लक्ष्मीजी की प्राप्ति व स्त्री का सुख प्राप्त होता।

शुक्रवार के व्रत की विधि

शुक्ल पक्ष के प्रथम शुक्रवार से यह व्रत प्रारंभ किया जाता है। इसके वर्ष पर्यन्त 21 या 31 व्रत करने का विधान है। यदि अधिक करें तो और भी उत्तम है। सर्वप्रथम प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त होकर सफेद वस्त्र धारण करें। फिर शुक्र के तांत्रिक या बीज मंत्र की 11 या 21 माला का जप करें। व्रत का समापन चावल, दूध की खीर खाकर करें। नमक का त्याग करें।

उद्यापन

व्रत की समाप्ति पर अंतिम शुक्रवार को उद्यापन करें। ग्रह पूजन में इसके मंडल पंचकोण 9 अंगुल पूर्व दिशा में बनाकर करें। हवन पूर्णाहुति के पश्चात एक आंख वाले ब्राह्मण को दूध, घी, शक्कर, चावल का भोजन कराएं तथा सफेद वस्त्र, चांदी व घी का दान देवें।

शुक्र शांति के सरल उपाय

1. सफेद वस्त्र पहनें।
2. सफेद रुमाल का उपयोग करें।
3. सफेद फूलों की माला पहनें।
4. चांदी के बर्तन में भोजन करें।
5. शुक्र स्तोत्र का पाठ करें।

बीज मंत्र **ॐ शुं शुक्राय नमः।**

तांत्रिक मंत्र **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**

वैदिक मंत्र

अन्नात्परिस्त्रतो रसं ब्राह्मण व्यपिवतः क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानः गुं
शुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोअमृतं मधु।।

शुक्र ग्रह की व्रत कथा

बहुत समय पहले की बात है। भास्कर राज्य में राजा भास्करदेव राज्य करते थे। उनके राज्य में चारों ओर खुशहाली व्याप्त थी। उनकी प्रजा हर तरह से सुखी और संपन्न थी। वहां कोई दुखी न था। वे थोड़ा मिल जाए तो थोड़ा और अधिक मिल जाए तो अधिक, जैसा भी जिसे मिल जाता, खाकर संतोषपूर्वक जीवन व्यतीत करते। भास्कर राज्य में लोगों की पूजा-पाठ, धार्मिक अनुष्ठानों में प्रबल रुचि थी।

वे मानते थे कि-मनुष्य जन्म बहुत मुश्किल से प्राप्त होता है। अतः इस जन्म को सार्थक बनाने के लिए अच्छे कर्म करने चाहिए। राज्य में विद्वान ब्राह्मणों, ज्योतिषियों की भी कोई कमी

न थी। राजा भास्कर देव से प्रजा खुश थी।

इसी राज्य के एक छोटे से गांव, पूरब ग्राम में केवल चार-पांच सौ घर थे। वहां के किसानों के पास जमीन के छोटे टुकड़े थे, जिनमें अन्न, साग-सब्जियां उगाकर अपनी आजीविका चलाते थे।

इसी गांव में आनन्द का परिवार भी रहता था। उसके एक पुत्र और एक पुत्री केवल दो संताने थीं। दोनों बच्चे विवाह योग्य हो चुके थे। आनन्द की पत्नी आराधना, अपने इस छोटे से परिवार में प्रसन्न रहती थी। आनन्द ने आजीविका के लिए गांव में एक परचून की दुकान खोल रखी थी।

सभी गांववासी अपनी जरूरत की वस्तुएं उसे अन्न देकर प्राप्त किया करते थे। आनन्द को गांव के लोग सेठ व लाला कह कर पुकारते थे। आनन्द सामान के बदले में जो अन्न एकत्रित होता, उसे बोरियों में भरकर शहर में बेच आता था और बदले में सामान खरीद लाता था। आनन्द का बेटा सुधीर उसके कार्यों में हाथ बंटाया करता था। इसी तरह आनन्द की आजीविका चल रही थी। परिवार में मंगल ही मंगल था।

आनन्द की बेटी सुमन का रिश्ता पास ही के एक अन्य गांव के सुन्दर गुणवान, विवेकी किसान परिवार के बेटे से तय हो चुका था और कुछ ही दिनों बाद उसकी शादी थी। आनन्द की पत्नी आराधना बेटी के विवाह की तैयारियों में लगी हुई थी।

मगर अचानक ही न जाने क्या हुआ कि आनन्द की दुकान पर ग्राहकों का आना कम हो गया। पहले तो उसने (आनन्द) सोचा कि सब दिन एक सी तो दुकानदारी होती नहीं, कभी कम कभी ज्यादा तो होती ही रहती है। किन्तु उसकी यह सोच व

भ्रम शीघ्र ही टूट गया। दिन-प्रतिदिन उसकी दुकान पर ग्राहकों में कमी आती चली गई और देखते ही देखते उसकी दुकान और व्यापार चौपट हो गया।

परन्तु कहते है कि मुसीबतें जब आती हैं तो चारों ओर से एक साथ आती हैं। ऐसा ही आनन्द के साथ भी हुआ। एक दिन उसकी बेटी सुमन टांड पर से संदूक उतार रही थी कि अचानक सीढ़ी पर से उसका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ी। उसके मुंह से एक तेज चीख निकली-'आह।'

बेटी की आवाज सुनकर आराधना दौड़ी-दौड़ी आई और पूछा-'क्या हुआ मेरी बच्ची?' गिरने के कारण सुमन के पैर में बहुत अधिक दर्द हो रहा था। वह रोते हुए बोली-'मां! संदूक उतारते हुए सीढ़ी लुढ़क गई। ऐसा लगता है पैर में चोट आई है।' आराधना ने कहा-'बेटी! तू चिंता मत कर। मैं वैद्यजी को बुलाकर लाती हूँ। तू जल्दी ठीक हो जाएगी।' और आराधना गांव के वैद्यजी को बुलाने चली गई।

थोड़ी ही देर में वैद्यजी आ पहुंचे। उन्होंने सुमन के पैर की जांच की और फिर कोई लेप लगाते हुए बोले-'बेटी! चिंता की कोई बात नहीं है। पांव मुड़ जाने से मोच आ गई। एक हफ्ते में ठीक हो जाएगी।' यह कहकर,लेप लगाकर पट्टी बांध दी। आराधना ने उन्हें बदले में थोड़ा सा अनाज दिया। वैद्यजी वहां से अपने घर चल दिए।

अभी वैद्यजी को गए हुए थोड़ी ही देर हुई थी कि अमरपुर गांव से जिस वैश्य किसान परिवार में सुमन का रिश्ता तय किया था उनका नौकर आ पहुंचा।

आराधना ने उसे देखकर कहा-'तुम।' नौकर बोला-'प्रणाम

मां जी।' आराधना ने कहा-'प्रणाम रिछपाल, कहो कैसे आना हुआ? वहां सब कुशल मंगल तो है न।' आराधना ने रिछपाल के लिए चारपाई पर चादर बिछाते हुए पूछा।

रिछपाल ने कहा-'मां जी! अमंगल समाचार है। बैठूंगा नहीं, मुझे समाचार सुनाकर तुरन्त चले आने के लिए कहा है।' नौकर की बात सुनकर आराधना देवी का दिल धक-धक करने लगा। फिर रिछपाल ने कहा-'मां जी! गोद भराई की रस्म में जो सामान आपने दिया था, वह वापस लौटाने आया हूं।' आराधना देवी बुरी तरह चौंक पड़ी और पूछा- 'मगर क्यों? क्या कारण है जो सामान वापस भेजा है?'

रिछपाल ने कहा-'मां जी! इसका जवाब तो मैं दे नहीं सकता। वहां से जितना मुझे करने-बताने के लिए भेजा गया है, उतना सब मैंने कह सुनाया है। अब मैं आपसे विदा चाहंगा।'

आराधना बोली-'रिछपाल! तुम्हें मालूम तो होगा ही कि हमारी बेटी में ऐसा क्या दोष हो गया-जो वे रिश्ता तोड़ रहे हैं।' रिछपाल ने कहा-'मां जी! मैं इतना ही कहूँगा कि जो रिश्ते दौलत प्राप्त करने के लिए जोड़े जाते हैं और कही से अधिक दौलत मिल रही होती है, तो कम दौलत देने वाले से रिश्ते इसी तरह टूट जाते हैं। मां जी, भूल जाइए, इस रिश्ते को और गुणी बेटी का रिश्ता किसी ऐसे परिवार में कीजिए, जो मन, वचन, कर्म से पवित्र परिवार हो, अच्छा मां जी, अब मैं इजाजत चाहूँगा।'

आराधना देवी ने रिछपाल की बातों का कोई जवाब नहीं दिया। वह तो जैसे काठ हो रही थी। इधर अंदर के कमरे में सुमन ने भी सब कुछ सुना, उसकी हिचकियाँ बंध गईं। रिछपाल

वापस चला गया। अन्दर कमरे में सुमन होठों ही होठों में बड़बड़ाते हुए, रोते-रोते स्वयं से बोली-हे भगवान! यह सब मेरे साथ क्या हो रहा है? मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया है जिसकी मुझे ऐसी सजा मिल रही है।'

उधर, आनन्द का गांव में कुछ उधार भी बंटा हुआ था। उसका बेटा सुधीर वही उगाहने गया था। उनके घनश्याम पर बीस रुपए थे। सुधीर ने जब उससे बड़े ही प्रेमपूर्वक पैसे मांगे तो घनश्याम ने कहा-'कैसे रुपए की बात कर रहा है, सेठ के लड़के। हमने जो लिया था दे आए, अब हमें कुछ नहीं देना।' सुधीर बोला- 'मगर भाई जी, खाते में तो लिखा है।'

घनश्याम बोला- 'लिखा है तो हम क्या करें। खाता तुम्हारा अपना है जो चाहो लिख लो। मैंने उधार नहीं लिया। जा तू यहां से।' बात ही बात में झगड़ा बढ़ता चला गया और हाथापाई की नौबत आ गई। सुधीर वहां से बड़ी कठिनाई से पीछा छुड़ाकर निकला।

घर पहुंचकर उसने सारा वृत्तांत आनन्द को सुनाया। आनन्द गहरी सोचों में डूबे हुए थे-'यह सब अचानक ही क्या होने लगा। उनकी समझ में नहीं आ रहा था।'

तभी बाहर से आवाज आई-'लालाजी घर में हैं क्या?' आनन्द ने पूछा-'कौन, पंडित जीवनदासजी?' पंडितजी बोले- 'हां जी हम ही हैं। आनन्द ने कहा-'भीतर आ जाओ ज्योतिषीजी।' ज्योतिषाचार्य पंडित जीवनदास घर में आ गए।

आनन्द ने उन्हें आदर के साथ आसन पर बैठने के लिए कहा और पूछा-'कहिए पंडितजी, कैसे आना हुआ?' पंडित जीवनदास ने कहा-'अजी आना क्या हुआ जजमान, तुम्हारी

दुकान बंद थी। इधर से गुजर ही रहे थे। सोचा पूछ लें कि दुकान क्यों बंद है।' तभी आराधना देवी शर्बत ले आई। पंडितजी ने शर्बत ले लिया।

आनन्द ने कहा-'क्या बताएं, पंडितजी! सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था कि अचानक ही न जाने क्या हुआ कि एक एक करके सभी कार्य बिगड़ते जा रहे हैं।' साथ में आराधना बोली-'पंडितजी! आप तो ज्योतिषी हैं देखकर बताइए ना कि ऐसा क्यों हो रहा है।'

पंडितजी बोले-'अभी लो जी। हम अभी देखते हैं।' और पंडितीजी अपना पोथी-पत्रा खोलकर बैठ गए और गणना करने लगे। ऐसा करते हुए अचानक उनके माथे पर अनेक प्रकार की रेखाएं उभरी थीं।

थोड़ी देर के लिए वहां गहरा सन्नाटा व्याप्त रहा। फिर सन्नाटे को तोड़ते हुए पंडितजी बोले-'लालाजी! आप पर शुक्र ग्रह की विपरीत चाल बैठी हुई है। शुक्र ग्रह आपसे कुपित हैं।' आनन्द ने कहा-'ऐसा।'

पंडित जीवनदास ने कहा-'हां लालाजी। परन्तु चिंतित होने की कोई जरूरत नहीं है। शुक्र ग्रह की शांति का उपाय है जो मैं आपको बताता हूँ। आप शुक्रवार के दिन, शुक्र ग्रह के सात व्रत कीजिए। व्रत खोलने के समय केवल दूध और फलों का ही सेवन कीजिए। इस प्रकार व्रत पूरे कीजिए। आठवें शुक्रवार को उद्यापन कीजिए। और फल एवं वस्त्र का दान दीजिए। ऐसा करने के उपरांत, शुक्र ग्रह की कोप दृष्टि आपके ऊपर से हट जाएगी व शुक्र ग्रह आपसे प्रसन्न होकर आपको लाभ पहुंचाएंगे एवं इस कथा को स्वयं पढ़िए और प्रचार कीजिए। ऐसा करने

से लाभ मार्ग प्रशस्त होता है।'

आनन्द ने कहा- 'मैं ऐसा करूँगा पंडितजी और जरूर करूंगा। अगले हफ्ते जो शुक्रवार आएगा, उस दिन से हम व्रत शुरु कर देंगे।' ज्योतिषाचार्य जीवनदास बोले-'इसी तरह तुम्हारा कल्याण होगा लालाजी।' यह कहकर जीवनदास ने कहा-'अब मुझे इजाजत दीजिए, मैं चलता हूँ।'

फिर अगले हफ्ते जो शुक्रवार आया, आनन्द ने अपने परिवार सहित शुक्र ग्रह के व्रत शुरु कर दिए। कुछ समय उपरांत व्रत पूरे हुए। फिर उन्होंने विधिवत उद्यापन किया। वस्त्र और फलों का दान किया।

उसी रात शुक्र ग्रह ने आनन्द बंसल को स्वप्न में दर्शन देकर कहा-'लाला! मैं तुम्हारे द्वारा किए गए अपने व्रतों से प्रसन्न हूँ। अब आपको मेरी तरफ से कोई नुकसान नहीं होगा। आपके सभी काम बनेंगे।' आनन्द ने कहा-'आपको मेरा प्रणाम शुक्र ग्रह।' शुक्र ग्रह देव ने कहा-'लाला! एक बात और जो भी स्त्री-पुरुष जातक मेरा इसी विधि-विधान से व्रत रखेगा, उद्यापन करेगा, वस्त्र एवं फलों का दान देगा, उस पर हम कभी भी अप्रसन्न नहीं होंगे।' इतना कहकर शुक्र ग्रह देव अन्तर्धान हो गए। अगले दिन, आनन्द के सभी बिगड़े काम बनते चले गए। दुकान पर ग्राहक आने लगे और दुकान खूब चल पड़ी। सुमन का जो रिश्ता टूट गया था, वह पुनः जुड़ गया। लड़का खुद घर आया और अपने परिवार की भूल की क्षमा मांगी। उधार दिया हुआ धन वापस आने लगा और घनश्यान ने सुधीर से क्षमा मांगी। और मय ब्याज के परा पैसा लौटाया।

शनिदेव का परिचय

शनिदेव कश्यप गोत्र, शूद्र वर्ण के हैं। सौराष्ट्र प्रदेश के अधिपति हैं, इनका वर्ण कृष्ण है। ये काले वस्त्र धारण किए हए हैं, चार हाथों में बाण, शूल, धनुष एवं वरमुद्रा है। इनका वाहन गिद्ध है। इनके अधिदेवता यमराज एवं प्रत्यधि देवता प्रजापति ब्रह्म हैं।

शनि ग्रह सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले बुधादि ग्रहों में धीमी गति से भ्रमण करते हुए लगभग 29 वर्ष 6 माह में सूर्य का एक चक्कर पूर्ण करता है। संपूर्ण राशि पथ को पार करने में लगभग 30 वर्ष का समय लगता है और एक राशि को पार करने में लगभग ढाई वर्ष का समय लगता है। इनकी गति अत्यन्त मंद होने के कारण ही इनका नाम शनि पड़ा।

पृथ्वी से शनि की दूरी लगभग 79,10,00,000 मील और है। यह पृथ्वी से 9.5 गुणा बड़ा 50,000 किलोमीटर त्रिज्या, 713 गुणा अधिक आयतन मगर 1/10 गुरुत्वाकर्षण और पानी की तुलना में 0.69 घनत्व का, सूर्य से 1427 करोड़ किलोमीटर दूर है। वास्तव में यह दूरी कुछ भी हो, किन्तु सूर्य के एक चक्कर लगाने में लगने वाला समय ही बताता है कि शनि की स्थिति पृथ्वी या सूर्य से काफी दूर है। शनि की गति सूर्य के समीप आने पर लगभग 60 मील प्रति घंटा घट जाती है। शनि ग्रह का अपनी परिधि पर झुकाव लगभग 6 अंश तथा विषुवतीय व्यास लगभग 85,100 मीटर है, यह भी कभी-कभी वक्री हो जाता है।

शनि के 21 उपग्रह हैं इनमें सबसे बड़ा टिटान 2570

किलोमीटर त्रिज्या का है। इसमें वायुमंडल होने का अनुमान है जो पृथ्वी की अपेक्षा 1.6 गुणा अधिक दबाव उत्पन्न कर रहा है। शनि सौर मंडल का सबसे अंतिम ग्रह था मगर अब इसके बाद तीन ग्रह यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो का पता चला है। शनि के चारों ओर तीन सुंदर वल्व हैं, जो एक-दूसरे से भिन्न रहते हैं, किन्तु आकाश में संचारण के समय शनि के साथ ही होते हैं।

शनि नपुंसक जाति, कृष्ण रंग, पश्चिम दिशा का स्वामी और वातश्लेष्मिक प्रकृति का होकर वायु तत्वीय ग्रह है। यह वात और कफजनित रोग, लंगड़ापन, मानसिक विकार, शरीर में चोट, गांठिया, पोलियो, पक्षाघात, कैंसर, स्नायुतंत्र में विकृति, हार्निया आदि रोगों का कारक है। किसी भी व्यक्ति को इस जीवन में कब, कैसे कितनी मात्रा में दुखों से सामना करना पड़ेगा, यह भी शनि की उपस्थिति से ही जाना जाता है। इनके अतिरिक्त जातक की आयु, मृत्यु, मृत्यु का स्वरूप, चोरी, किसी भी प्रकार की हानि, घाटा, दिवाला, बंधन या जेल, मुकदमा, फांसी, राजभाव, शत्रुता आदि का अवलोकन किया जाता है।

यह श्याम रंग, शीतल, प्रकाश रहित, भावहीन, उत्साहहीन, विद्याहीन, मूर्ख, चुगलखोर, नीच, निर्दयी, निकृष्ट, दुष्ट और दरिद्र है तथा अल्पता, पराजय, बाधा, अपमान, चिंता, उदासी, आलस्य, क्रोध, विरोध, सट्टा, जुआ और पृथकता का जनक है। मंद गति होने के कारण कार्य संपन्नता में विलंब करता है। रात्रि में जन्मे जातकों को माता और पिता हेतु हानिकारक है। अनेक अवगुणों के उपरांत भी योगकारी शनि का व्यक्ति गंभीर, परिश्रमी, दार्शनिक, विचारक, वैरागी, तपस्वी और दीर्घायु होता है।

यह श्याम रंग, कृश एवं दीर्घ देह, मोटे नख, बड़े दांत, घने बाल, निस्तेज और धंसे हुए नेत्र, दीर्घ हाथ और टांग, झुर्रियोंदार मुख, देखने में भयानक, नपुंसक, शूद्र, तमोगुणी, पृष्ठोदयी, वात प्रकृति, दक्षिण-पश्चिम दिशा और शिशिर ऋतु का स्वामी है। यद्यपि यह सूर्य का पुत्र है, फिर भी सूर्य का विरोधी और शत्रु है।

चूंकि शनि नैसर्गिक रूप से पापी ग्रह है अतः जन्मकुंडली के जिस भाव में भी होता है, कुछ न कुछ अशुभ फल तो देता ही है। शनि जातक को प्रत्येक सुख से वंचित करने का प्रयास कर उसे इस मृत्यु लोक की विषय वासनाओं से परे कर जातक में वैराग्य की भावना का संचार करता है। मांगलिक कुंडलियों में शनि की उपस्थिति का विवाह के समय बहुत ध्यान रखा जाता है।

यह जीवन, आयु, मृत्यु, दुर्घटनाओं, दास, चर्म निर्मित वस्तुओं, कृषि वस्तुओं, पत्थर, पर्वत, सीमेंट, काले रंग के पदार्थ, जमीन से प्राप्त पदार्थ-लोहा, कोयला, पेट्रोलियम, रेल, रेल पटरी और विदेशी भाषा ज्ञान का प्रतिनिधि है।

शनि ग्रह शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, दान आदि की विधि

1. परिचय/दान पदार्थ : पश्चिमे धनुषाकार मंडल अंगुल 2, सौराष्ट्र देशोद्भव कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ग/तिल, माषान्न, तेल, उड़द, महिषी, लोहा/श्याम धेनु, नीलम, श्यामवस्त्र स्वर्ण।

2. जपनीय एकाक्षरी मंत्र - **ॐ शं शनैश्चराय नमः।**

3. जपनीय बीज मंत्र - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।**

4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र – **ॐ प्रां प्रीं प्रों सः शनये नमः।**

5. जपनीय वैदिक मंत्र :

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽऽआपोभवन्तु पीयते।।
शंयोरमिस्त्रवन्तु नः।

6. गायत्री मंत्र :

ॐ भगवावाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि
तन्नो शनिः प्रचोदयात्।

7. जप संख्या/समयः 23,000 / संध्याकाल
8. समिधः /औषधि : शमीमूलं
9. अन्य उपायः मृत्युंजय जप
10. रत्न/उपरत्न दान : नीलम/नीली, फिरोजा
11. धातु/न्यूनतम वजन : पंचधातु या स्टील /41 रत्ती
12. शनि की उंगली : मध्यमा
13. जाप करने के नक्षत्र : उ.षा., श्रवण, शत, चित्रा, स्वाति
14. जाप करने के वार/समय : शनिवार/सूर्यास्त के बाद
15. पुराणोक्त स्तवन –

नीलाञ्जन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्य संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

शनि ग्रह का संपूर्ण विवरण

शनि ग्रह को काल पुरुष का दुख माना गया है। कालचक्र में शनि कर्म और उसके परिणाम का प्रतीक है। इसके संबंध में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं –

रत्न दान	नीलम
उपरत्न दान	कटैला, जामुनिया

राशि संचार काल	ढाई वर्ष
वर्ण	काला
स्वरूप	आलसी बूढ़ा
आकृति	दीर्घ
तत्व	वायु
स्वभाव	तीक्ष्ण व दारूण
प्रकृति	वात
गोत्र	कश्यप
वाहन	गिद्ध
अवस्था	वृद्ध
लिंग	नपुंसक
गुण	तम
स्वाद	कसैला
धातु	लोहा
जाति	शूद्र
वार	शनिवार
समिधा	शमी
ऋतु	शिशिर
कद	दीर्घ
निसर्ग बल	सबसे कम बली
पराभव	सूर्य से पराजित
बली	संध्या व रात्रि में
स्थान	ऊसर भूमि
दोष शमन	राहु और बुध का
राज्याधिकार	सेवक, दूत

शरीर में प्रभाव	घुटनों से पिंडली तक
संज्ञा	पाप
क्रीड़ास्थल	कूड़ाघर
शुभाशुभ	अशुभ
रुचि	कूटनीति, कानून, राजनीति, दर्शन शास्त्र, भावनी व श्मशानी विद्या
भाग्योदय	36-42 वर्ष में
जड़ी	बिच्छोल मूल या बिछुआ
दान का समय	मध्याह्न व सायं
मंडल	धनुषाकार
देश	सौराष्ट्र
भाग	पृष्ठ भाग
देवता	ब्रह्मा व यम
स्वामी	मकर व कुंभ का
दीप्तांश	9 अंश
शरीर में कारक	स्नायु संस्थान
काल समय	वर्ण
दान पदार्थ	नीलम, तिल, काले उड़द, तेल, कुलथी, भैंस, लोहा, काला वस्त्र
रोग	गला, टांग व लंगड़ापन, वात व कफ विकार व कैंसर
दृष्टि	पश्चिम
शुष्कता	तिक्त
विचारणीय विषय	जीवन, मृत्यु का कारण, आयु, दुख व विपत्ति

विद्या	शिल्प, दर्शन, कानून, तंत्र-मंत्र-यंत्र व यांत्रिक शास्त्र, न्याय दर्शन।

शनि मंत्र

शनि मंत्रों का जाप श्रद्धा, विश्वास और विधि के अनुसार करना चाहिए। शनि के वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक मंत्र निम्नलिखित हैं -

वैदिक मंत्र

ॐ शन्नो देवीरभिष्ट आपोभवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।

तांत्रिक मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

पौराणिक मंत्र

ॐ शं शनैश्चराय नमः

ह्रीं नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

उपरोक्त शनि मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नियमित रूप से विधिवत जप करके शनि पीड़ा का निवारण कर सकते हैं। शनि मंत्र अल्पतम 23000 जपें, जबकि अधिकतम 92000 जपने पर पूर्ण फलदायी होता है।

शनि अष्टोत्तर शत नमस्कार नामावली

ॐ शनैश्चराय नमः	ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः
ॐ वरेण्याय नमः	ॐ सौम्याय नमः
ॐ सुरलोकविहारिणे नमः	ॐ सुन्दराय नमः
ॐ घनरूपाय नमः	ॐ घनसारविलेपाय नमः

ॐ मन्दाय नमः
ॐ महेशाय नमः
ॐ चरस्थिरस्वभावाय नमः
ॐ नीलाञ्जननिभाय नमः
ॐ विधिरूपाय नमः
ॐ वैराग्यदाय नमः
ॐ गूढ़ाय नमः
ॐ गुणाढचाय नमः
ॐ आयुष्यकरणाय नमः
ॐ विविधागमवेदिने नमः
ॐ शरण्याय नमः
ॐ सुरवन्द्याय नमः
ॐ घनाय नमः
ॐ रवद्योताय नमः
ॐ मर्त्यपावनपादाय नमः
ॐ शततूणीरधारिणे नमः
ॐ नित्याय नमः
ॐ वेद्याय नमः
ॐ व्रजदेहाय नमः
ॐ विपत्परंपरेशाम नमः
ॐ कूर्मांगनय नमः
ॐ गोचराय नमः
ॐ आपदृद्धर्त्रे नमः
ॐ विधिस्तुत्याय नमः
ॐ वरिष्ठाय नमः
ॐ महनीयगुणात्मने नमः
ॐ शर्वाय नमः
ॐ नीलवर्णाय नमः
ॐ निश्चलाय नमः
ॐ भेदास्पदस्वभावाय नमः
ॐ विश्ववन्द्याय नमः
ॐ कुरूपिणे नमः
ॐ अविद्यामूलनाशाय नमः
ॐ विष्णुभक्ताय नमः
ॐ शान्ताय नमः
ॐ सर्वेशाय नमः
ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः
ॐ घनाभरणधारिणे नमः
ॐ मन्दचेष्टाय नमः
ॐ छायापुत्राय नमः
ॐ अचंचलाभ नमः
ॐ नीलांबरविभूषाय नमः
ॐ विरोधाधारभूमये नमः
ॐ वीराय नमः
ॐ गृध्रवाहाय नमः
ॐ कुत्सिताय नमः
ॐ विद्याविद्यास्वरूपिणे नमः
ॐ वशिने नमः
ॐ बन्द्याय नमः
ॐ वज्रांकुशधराय नमः

ॐ वामनाय नमः
ॐ कष्टौधनाशकर्त्रे नमः
ॐ भक्तिवश्यायं नमः
ॐ पावनाय नमः
ॐ तनुप्रकाशदेहाय नमः
ॐ वशीकृतजनेशाय नमः
ॐ घननीलांबाय नमः
ॐ नित्याय नमः
ॐ नन्द्याय नमः
ॐ दीनार्तिहरणाय नमः
ॐ क्रूरचेष्टाय नमः
ॐ परिपोषितभक्ताय नमः
ॐ गरिष्ठाय नमः
ॐ ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः
ॐ पुष्टिदाय नमः
ॐ भानवे नमः नमः
ॐ धनुर्मण्डलसंस्थाय नमः
ॐ तामसाय नमः
ॐ पशूनां पतये नमः
ॐ काठिन्यमानसाय नमः
ॐ निरामयाय नमः
ॐ दिव्यदेहाय नमः
ॐ क्रूराय नमः
ॐ भक्तसंघमनोभीष्टफलदाय नमः
ॐ निर्गुणाय नमः
ॐ श्रेष्ठाय नमः
ॐ स्तुत्याय नमः
ॐ भानुपुत्राय नमः
ॐ धनदाय नमः
ॐ अशेषजनवन्द्याय नमः
ॐ खेचराय नमः
ॐ आर्यगणस्तुत्याय नमः
ॐ गुणात्मने नमः
ॐ धीराय नमः
ॐ आर्यजनगण्याय नमः
ॐ कंठत्रपुत्रशत्रुत्वकारणाय नमः
ॐ विरूपाक्षाय नमः
ॐ वरदा भयहस्ताय नमः
ॐ वितभाषिणे नमः
ॐ स्तोत्रगम्याय नमः
ॐ भव्याय नमः
ॐ धनुष्मते नमः
ॐ विशेषफलदायिने नमः
ॐ खगेशाय नमः
ॐ नीलच्छत्राय नमः
ॐ वन्दनीयाय नमः
ॐ दैन्यनाशकराय नमः
ॐ कामक्रोधकराय नमः
ॐ परिभीतिहराय नमः
ॐ वीतरोगंभयाय नमः

शनि ग्रह की पूजन विधि

जातक का जब शनि ग्रह खराब हो तो वह सबसे पहले शनि ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और यह मंत्र पढ़ें –

विनियोग

ॐ शन्नौ देवीति दध्यङ्गाथर्वण ऋषि गायत्री छन्दः
शनिर्देवता शन्यावाहने विनियोगः।

ध्यान–तत्पश्चात्– हाथ में काले चावल या फूल लेकर शनि का ध्यान करें–

नीलाबरः शूलधृः किरीटी ग्रध्रास्थित स्त्रासकारो धनुष्मान।
चदुर्भुजः सूर्यसुत प्रशांत सदास्तु मद्वम वरदोल्पमायी।
अथ ध्यानं समर्पयामि।

यह मंत्र पढ़कर फूल पूजा स्थल पर चढ़ा दें।

तत्पश्चात्– शनि को जल चढ़ाएं –

शुद्धोदकं जलं स्नानीतं स्नानं प्रतिगृहताम्।

तत्पश्चात्– हाथ में रोली या चन्दन लेकर शनि भगवान को अर्पित करें –

ॐ शन्नो देवीति रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
श्य्योरभिस्त्र वन्तु नः। चंदनं समर्पयामि।

तत्पश्चात्– शनि को चावल (अक्षत) चढ़ाएं।

अक्षतं समर्पयामि।

तत्पश्चात्– फूल चढ़ाएं। **पुष्पं समर्पयामि।**

तत्पश्चात्– मिठाई चढ़ाएं। **नैवेद्यं समर्पयामि।**

ततो नमस्कारं करोमि।

काले चावल या फूल हाथ में लेकर शनि को प्रणाम करें-

नीलाञ्जनं समाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपे गोत्र भो।
शनैः इहागच्छ इहातिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।।

शनि ग्रह के व्रत के नियम

1. शनि ग्रह का व्रत शनिवार को किया जाता है।
2. यह व्रत किसी भी शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से प्रारंभ किया जा सकता है।
3. व्रत कब तक करें अर्थात व्रत की संख्या एक वर्ष पर्यन्त 17 या 21 या फिर 51 शनिवार तक व्रत करें।
4. नमक पूर्णतः वर्जित है, किसी भी रूप में व्रत वाले दिन नमक का प्रयोग न करें।
5. शुद्धता का पूर्ण ध्यान रखें।
6. भोजन के रूप में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, तेल में पकी वस्तु शनिदेव को भोग लगाकर या कुत्ते या गरीब को देकर शेष वस्तु सेवन सांयकाल करें।
7. शनि संबंधी वस्तुओं के दान के पश्चात ही भोजन का सेवन करें।
8. भोजन से पूर्व एक बर्तन में शुद्ध जल में काले तिल, काले पुष्प, लौंग, गंगाजल, शक्कर व थोड़ा सा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुख करके पीपल की जड़ में डाल दें।
9. व्रत के दिन शनि मंत्र का 23000 बार जाप करें या कम से कम 8 या 17 माला का जाप अवश्य करें।

10. मस्तक पर भस्म का तिलक करें। पहनने वाले वस्त्रों में काले रंग का ज्यादा प्रयोग करें।
11. जब व्रत का अंतिम शनिवार हो तो शनि मंत्र से हवन करके पूर्णाहुति देकर भिखारियों को शनि वस्तुओं का यथाशक्ति दान करें।

श्री शनि व्रत का लाभ

शनि ग्रह का व्रत करने से शनि की अशुभता दूर होती है। शत्रु पर विजय प्राप्त होती है, सभी सांसारिक परेशानियों से मुक्ति मिलती है तथा कारखाने व व्यापारिक उन्नति से लाभ होता है। शनि ग्रह का व्रत शनिवार के दिन ही किया जाता है।

शनिवार के व्रत की विधि

शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से यह व्रत प्रारंभ किया जाता है। इसके वर्ष पर्यन्त 31 या 51 व्रत करें। इस दिन सर्वप्रथम दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर काले वस्त्र पहनकर, शनि के तांत्रिक या बीज मंत्र की 3 या 19 माला का जप करें। फिर एक बर्तन में जल, काले, तिल, काले फूल, लौंग, गंगाजल, शक्कर व कच्चा दूध डालकर, पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल को चढ़ाएं। उड़द के आटे के व्यंजन बनाकर गरीब को या काले कुत्ते को खिलाएं। व्रत में सरसों के तेल में बना हुआ सामान भोजन में खाएं।

उद्यापन

व्रत के अंतिम दिन शनिवार को उद्यापन करें। उस दिन ग्रह पूजन में इसका मंडल धनुषाकार 2 अंगुल पश्चिम दिशा में

बनाकर पूजन करें। हवन–पूर्णाहुति के पश्चात उड़द, केवड़े के तेल के सामान से बने पकवान से गरीबों को भोजन करावें तथा शनि की वस्तुओं का यथाशक्ति ब्राह्मण एवं गरीबों को दान देवें। लोहे के पात्र में तेल भरकर उसमें अपनी परछाईं देखकर दान करें। शनि स्तोत्र का पाठ करें।

श्री शनि शांति के सरल उपाय

1. काले जूते पहनें।
2. काले वस्त्र धारण करें।
3. आंखों में काजल लगाएं।
4. काले घोड़े की नाल का छल्ला या काला हकीक चांदी की अंगूठी में बनवाकर शनिवार शाम को हनुमान मंदिर में मध्यमा में धारण करें।

जानिए अपना भविष्य, विघ्न बाधाओं से मुक्ति के उपाय

- अनुष्ठान, गृह प्रवेश, महामृत्युंजयी आराधना, जाप
- कपाल भैरवी, बगुलानुमुखी, अकालानुमुखी, मोक्षानुमुखी, आदि शत्रुविजयी अनुष्ठान
- जन्म-पत्रिका, पंचांग, कैलेंडर निर्माण कार्य
- जन्म पत्रिका में मंगल दोष, पितृ दोष, कालसर्प दोष, चांडाल दोष, विष कन्या दोष आदि समस्याओं के अनुसंधान व समाधान के लिए तुरंत संपर्क करें

*** ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल ***

(भारतीय प्राचीन ज्योतिष, हस्तरेखा, आयुर्वेद, खगोल, वास्तु एवं मौसम अनुसंधान संस्थान)

पता : ई.एम. 129 ज्योतिष मठ, नेहरू नगर, भोपाल (मप्र)-462003

ज्योतिषाचार्य पं. विनोद गौतम अयोध्या प्रसाद गौतम

मोबाइल नं. : 9827322068 email-pt.vinodgoutam@gmail.com

आग्रह : ज्योतिष मठ संस्थान के विकास व अनुसंधान कार्यों में आर्थिक सहयोग प्रदान करें एवं संस्थान के सदस्य बनें। सहयोग राशि बैंक खाता क्रमांक 61211920616 IFSC-SBIN0010468 में जमा कर हमें सूचित करें।

संस्थान द्वारा पंचांग के अतिरिक्त अन्य प्रकाशित पुस्तकें जैसे, महालक्ष्मी पूजा पद्धति, कुंभ रहस्यम्, संतान प्राप्ति रहस्यम्, श्राद्ध रहस्यम्, विवाह पद्धति आदि डाक से घर बैठे प्राप्त करें।

दान की वस्तुएं

काले, तिल, साबुत उड़द, कड़वा तेल, काली गाय, भैंस, इन्द्र नील, काले कंबल, वस्त्र, काले जूते आदि।

तांत्रिक मंत्र **ॐ प्रां प्रीं, प्रौं शः शनये नमः।**

बीज मंत्र **ॐ शनैश्चराय नमः।**

वैदिक मंत्र

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपोभवन्तु पीतये।
शंयोर भिस्त्रवन्तु नः।।

श्री शनि ग्रह की व्रत कथा

बहुत समय पहले हिमालय नगरी में राजा हिमगिरी राज्य करते थे। राज्य में चारो ओर प्रसन्नता और खुशहाली व्याप्त थी। उनकी प्रजा हर प्रकार से सुखी और संपन्न थी। राजा हिमगिरी अपनी प्रजा का बहुत ख्याल रखते थे।

इसी राज्य में गंगाधर नाम का एक ब्राह्मण अपने परिवार के साथ रहता था। गंगाधर ब्राह्मण के पड़ोस में ही आलोकनाथ नाम का एक वैश्य परिवार भी रहता था। ब्राह्मण के परिवार में उसकी पत्नी रूपरानी और एक पुत्री कमला थी। आलोकनाथ के परिवार में उसकी पत्नी रुक्मिणी और विभान्शु नाम का एक सुन्दर चरित्रवान पुत्र था।

ब्राह्मण परिवार अपनी पंडिताई करके जीवन यापन करता था, जबकि आलोकनाथ उदारता से अपने अर्जित धन को किसानों की खेती में लगाता था। वह बीज, बुआई इत्यादि के लिए निर्धन किसानों पर धन लगाता था और जब फसल तैयार

हो जाती थी तो अपना धन वापस ले लेता था, साथ में फसल का चौथाई भाग भी लेता था। इस प्रकार दोनों परिवारों के दिन चैन और सुखपूर्वक व्यतीत हो रहे थे।

बचपन से ही ब्राह्मण की पुत्री कमला और वैश्य पुत्र विभान्शु एक साथ खेल-कूद कर बड़े हुए थे। अत: दोनों एक दूसरे के प्रति अनुराग और स्नेह रखते थे। मन ही मन वे एक-दूसरे को चाहते थे। वे दोनों किसी भी बहाने से किसी भी उद्यान, बाग-बगीचे में चले जाते थे और घंटों बैठकर प्रेमपूर्वक बातें करते रहते।

ऐसे ही एक दिन बगीचे में बैठे वे मधुर वार्ता कर रहे थे। कमला कह रही थी-'विभान्शु! अभी तक हमारे परिवारों में यह पता नहीं है कि हम एक-दूसरे से अनुराग रखते हुए प्रेम करते हैं। यदि किसी दिन पता चल गया तो कहीं हमारे इस संबंध को दोनों के पिता अस्वीकार न कर दें। कई दिनों से इसी संबंध में सोचकर मुझे डर लग रहा है।'

कमला की बात सुन्दर विभान्शु ने कहा-'कमला। अनुराग करना कोई बुरी बात नहीं है, बल्कि जिस अनुराग में छल हो वह अनुराग बुरा होता है। हमारा प्रेम सच्चा और पवित्र है। मेरी तो यही राय है कि हमें अपने माता-पिता को अपने प्रेम के बारे में बता देना चाहिए।' कमला ने कहा-'मगर।' विभान्शु ने कहा 'अनहोनी की तरफ न सोचो कमला। हमारे माता-पिता हमसे स्नेह रखते हैं। वे हमारे हित को ध्यान में रखकर ही कोई कदम उठाएंगे और फिर हम अधिक समय तक इस बात को छिपा भी नहीं सकते हैं।'

अभी कमला और विभान्शु वार्तालाप कर ही रहे थे कि एक

आहट सुनकर चौंक पड़े। उन्होंने इधर-उधर देखा वहां कोई न था। मगर यह उनका भ्रम नहीं था क्योंकि ब्राह्मण गंगाधर ने उन दोनों की बातें सुन ली थीं और आग बबूला होकर वह दोनों के सामने आया और बिजली जैसे कड़क लहजे में बोला-'कमला।'

पिता को एकाएक ही सामने देखकर कमला कांप उठी। वह एक झटके से विभान्शु से अलग हो उठ खड़ी हुई। गंगाधर उसका हाथ पकड़कर बोला-'कमला। मैं नहीं जानता था कि तुम इतना नीचे गिर जाओगी।'

कमला ने कहा-'पिताजी! हम दोनों आपको अपने प्रेम के विषय में बताना चाहते थे। इसी विषय में वार्ता कर रहे थे, मगर।' गंगाधर बोला-'मैं मानता हूँ बेटी कि प्यार करना कोई अपराध नहीं है। मगर विभान्शु के पिता इस रिश्ते को स्वीकार कर लेंगे, मुझे इसमें शक है।'

अब तक खामोश बैठे विभान्शु ने कहा-'पूज्य चाचाजी! मैं अपने पिता को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। वह मेरे इस प्रेम को समझते हुए कभी इंकार नहीं करेंगे।' गंगाधर बोला-'मेरे बच्चे अगर ऐसा हो भी गया, तब भी यह विवाह सम्पन्न न होगा।' विभान्शु ने पूछा-'वह क्यों चाचाजी?'

गंगाधर ने उत्तर दिया-'वह इसलिए बेटे कि मैंने ज्योतिष गणना करके इस विषय में ज्ञात किया है। तुम्हारे ग्रह ठीक नहीं हैं। शनि ग्रह तुमसे नाराज हैं यह संबंध तभी संपन्न होगा जबकि तुम दोनों शनिग्रह की शांति करने के उपाय कर लोगे।' विभान्शु ने कहा-'आप हमें कृपाकर उपाय बताएं जिसमें शनि ग्रह हमसे प्रसन्न हों और हम दोनों विवाह सूत्र में बंध जाएं।'

यह सुनकर गंगाधर ने विभान्शु से कहा-'तुम ठीक कहते हो बेटे! शनि ग्रह की शांति के लिए शनिवार के दिन तीन व्रत रखने होंगे। एक समय पवित्र अन्न (जैसे-सिंघाड़े का आटा, कुट्टू का आटा, समा के चावल एवं फलाहार) खाना होगा। तीन शनिवार व्रत रखने के पश्चात उद्यापन करना होगा। उद्यापन में पांच ब्राह्मणों को भोजन कराना होगा। वस्त्र का दान देना होगा। बस यही एक उपाय है,मेरे बच्चो! इसे करने के पश्चात ही तुम दोनों का विवाह संपन्न होगा।'

गंगाधर ब्राह्मण ने कहा-'बच्चो! तुम दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हो। इस बात का पता आलोकनाथ से तब तक के लिए छिपाना होगा, जब तक तुम्हारे ऊपर शनि ग्रह कृपा दृष्टि न हो जाए।' विभान्शु ने कहा-'ठीक है पिताजी! आप जैसा कहते हैं, हम दोनों वैसा ही करेंगे।' इधर कमला इस बात से प्रसन्न थी कि उसके पिता गंगाधर ने तो उनके संबंध को स्वीकार कर लिया है।

तीन दिन बात शनिवार का दिन आया तो कमला और विभान्शु ने शनि ग्रह को प्रसन्न करने के लिए व्रत रखना शुरु किया। उन दोनों के व्रत समय के साथ पूरे हो गए।

तब दोनों ने मिलकर गंगाधर ब्राह्मण के यहां उद्यापन किया। पांच ब्राह्मणों को भोजन कराया। वस्त्र का दान दिया और यह सब करने के बाद। उस रात, आलोकनाथ को शनि ग्रह देव ने स्वप्न में दर्शन दिए।

आलोकनाथ ने दोनों हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और पूछा-'आप कौन हैं, देव?'

उन्होंने कहा-'पुत्र! हम शनि ग्रह हैं। हम तुम्हें यह बताने

आए हैं कि तुम्हारे मित्र पंडित गंगाधर की बेटी कमला और तुम्हारा बेटा विभान्शु एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं। इन दोनों बच्चों का विवाह संपन्न करो, वत्स! इसमें ही तुम्हारा कल्याण होगा और ऐसा होना ही तुम्हारे लिए लाभदायक होगा।'

शनि ग्रह की बात सुनकर आलोकनाथ ने कहा-'हे शनि ग्रह देव! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।' आलोकनाथ ने जब इतना कहा तो तभी शनि ग्रह बोले-वत्स! एक बात और सुनो, कमला और विभान्शु ने हमारे व्रत रखकर हमें प्रसन्न किया है। अत: जो भी हमारी इस कथा को पढ़ेगा, चर्चा करेगा, व्रत रखेगा, उनसे हम सदैव प्रसन्न रहोंगे। हमारी चाल गति उनके लिए शुभ-ही शुभ दर्शाएगी।' इतना कहकर शनि ग्रह अन्तर्धान हो गए।

अगले दिन, आलोकनाथ ने स्वप्न की बात अपने ब्राह्मण मित्र गंगाधर को बताई तो, गंगाधर ने उन्हें बताया कि-'मित्र! मुझे पहले से ही यह सब विदित था। प्रसन्नतापूर्वक दोनों बच्चों की शादी करना ही हमारे हित में है।'

और फिर, विभान्शु और कमला के विवाह की तैयारियां शुरु होने लगीं। ठीक समय पर दोनों का विवाह संपन्न हो गया। कमला और विभान्शु दोनों सुखी जीवन व्यतीत करने लगे।

राहुदेव का परिचय

राहुदेव पैठीनस गोत्र, शूद्र वर्ण के हैं, मलय देश के अधिपति हैं, इनका वर्ण कृष्ण है, वस्त्र भी कृष्ण धारण किए हैं। इनका वाहन सिंह है, चार हाथों में खडग, शूल, ढाल एवं वरमुद्रा में हैं। इनके अधिदेवता काल हैं तथा प्रत्यधि देवता सर्प हैं।

राहु एवं केतु ग्रह सूर्य, बुध, मंगल, हमारी पृथ्वी, शुक्र, गुरु, शनि, हर्षल या नेपच्यून की भांति आकाशीय पिण्ड नही हैं। न उनका परिमाण है और न ही भार। वे दृश्यमान भी नहीं है, जब उनका पार्थिव अस्तित्व ही नहीं है तो वे दृश्यमान कैसे हो सकते हैं?

तो फिर राहु एवं केतु हैं क्या?

पौराणिक कथाओं को छोड़ दें तो वास्तव में राहु एवं केतु आकाशीय पिण्ड नहीं, वरन चंद्रमा एवं क्रांतिवृत्त के कटाव बिन्दु हैं।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि समस्त ग्रह सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं, चंद्रमा है जो पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। यह पथ या भ्रमण मार्ग ज्योतिष शास्त्र में भचक्र कहा जाता है।

अपने क्रांतिवृत्त या परिक्रमा पथ पर पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण करता हुआ चंद्रमा पृथ्वी के भचक्र को एक बिन्दु पर काट कर उत्तर की ओर चला जाता है। इसी कटाव बिन्दु को राहु नाम दिया गया। पाश्चात्य ज्योतिषशास्त्र में इसे 'नार्थ नोड ऑफ द मून' कहा जाता है। इसे 'ड्रेगंस हेड' भी कहा जाता है। केतु की स्थिति इस कटाव बिन्दु के ठीक सामने 180 अंश

पर मानी गई है। इसीलिए लाभांग चक्र में केतु की स्थिति राहु के सप्तम भाव में दर्शायी जाती है।

पौराणिक कथाओं में राहु को सिंहिका नामक एक राक्षसी का पुत्र कहा गया है। यह राहु उन्नतिकामी था। वह चतुर, तीक्ष्ण बुद्धि एवं व्यवहार कुशल भी था।

एक समय देवता और दैत्य आपस में लड़ने लगे। उनकी कलह शांत करने हेतु सर्वशक्तिमान भगवान विष्णु प्रकट हो गए। उनके शरीर की प्रभा ऐसी थी मानो हजारों सूर्य एक साथ उग आए हों।

श्री भगवान ने कहा-'देवताओ! तुम लोग सावधान होकर मेरी सलाह सुनो। इस समय असुरों पर काल की कृपा है। इसलिए जब तक तुम्हारा अच्छा समय नहीं आए तब तक तुम दैत्य और दानवों के पास जाकर उनसे संधि कर लो। तुम लोग बिना विलंब के अमृत निकालने का प्रयत्न करो। पहले समुद्र से कालकूट विष निकलेगा, उससे डरना नहीं। दूसरी, किसी भी वस्तु के लिए कभी भी लोभ मत करना।' इतना कहकर भगवान उनके बीच से अंतर्धान हो गए। देवराज इन्द्र आदि देवता राजा बलि के पास गए, देवताओं को बिना अस्त्र-शस्त्र के सामने आते देख दैत्य सेनापतियों के मन में बड़ा क्षोभ हुआ। वे देवताओं को पकड़ लेना चाहते थे, परन्तु दैत्यराज बलि ने ऐसा करने से रोका। बुद्धिमान इन्द्र ने बड़ी मधुर वाणी से समझाते हुए राजा बलि से वे सब बातें कहीं। वह बात दैत्यराज बलि को जंच गई। वहां बैठे हुए दूसरे सेनापति शम्बर, अरिष्टनेमि और त्रिपुरनिवासी असुरों को भी यह बात अच्छी लगी। तब देवताओं और असुरों ने आपस में संधि कर ली। संधि की शर्तों के

अनुसार सब मिलकर समुद्र मंथन के लिए पूर्ण तैयारी करने लगे।

असुर एवं देवता समुद्र मंथन करने लगे। परन्तु अमृत न निकला तब स्वयं भगवान विष्णु मंदराचल की मथानी से समुद्र मंथन करने लगे, तभी समुद्री जीव-जन्तु भयभीत होकर ऊपर आ गए। उसी समय हलाहल नामक अत्यन्त उग्र विष निकला। अत्यन्त उग्र विष के प्रभाव से भयभीत होकर संपूर्ण प्रजा और प्रजापतियों ने भगवान शंकर की स्तुति की। देवताओं के आराध्य देव महादेव ने विष पान कर सभी को भय से मुक्ति प्रदान की। धन्वंतरि अमृत कलश लेकर जब निकले तो दैत्यों की दृष्टि उन पर पड़ी और कलश छीनने के लिए टूट पड़े और उनके हाथ से कलश छीन लिया। देवताओं का मन विषाद से भर गया। अब वे भगवान की शरण में गए। भगवान विष्णु ने कहा, 'देवताओं! तुम लोग दुख मत करो। मैं अपनी माया से उनमें आपसी फूट डालकर अभी तुम्हारा काम बना देता हूँ।'

भगवान सुंदर स्त्री मोहिनी का रूप धारण कर दैत्यों के बीच प्रकट हुए। असुर सोचने लगे, 'कैसा अनुपम सौन्दर्य है? शरीर में से कितनी अद्‌भुत छटा छिटक रही है।' आपस के बैर-भाव को भूलकर उसके पास काममोहित होकर निवेदन करने लगे, 'हम लोगों ने अमृत के लिए बड़ा पुरुषार्थ किया है। तुम न्याय के अनुसार निष्पक्ष भाव से इसे बांट दो।' यह कहकर असुरों ने अमृत का कलश मोहिनी के हाथ में दे दिया। भगवान ने देवता और असुरों की अलग-अलग पंक्तियां बना दीं और फिर दोनों को कतार बांधकर अपने-अपने दल में बैठा दिया।

जिस समय भगवान देतवाओं को अमृत पिला रहे थे, उसी

समय राहु दैत्य देवताओं का वेष बनाकर उनके बीच में आ बैठा और अमृत पी लिया, परन्तु तत्क्षण चंद्रमा और सूर्य ने उसकी पोल खोल दी। अमृत पिलाते-पिलाते ही भगवान ने चक्र से उसका सिर काट दिया। अमृत का संसर्ग न होने से उसका धड़ नीचे गिर गया परन्तु सिर अमर हो गया और ब्रह्माजी ने उसे 'ग्रह' बना दिया। वही राहु पूर्णिमा और अमावस्या के वैरभाव से बदला लेने के लिए चंद्रमा और सूर्य पर आक्रमण किया करता है। इसी कारण चंद्र और सूर्य ग्रहण होते हैं, पुराणों में ऐसा वर्णन है।

छाया ग्रह राहु एवं केतु रहस्यात्मक ग्रह हैं। तंत्र-मंत्र, टोने-टोटके में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। साहस के कार्य, सर्कस, राजनीति, सत्ता, शेयर, रेस, चमकीले खेल, चित्रपट, अनुसंधान, विज्ञापन एजेंसी तथा सेना के कमांडों इत्यादि कैरियर में राहु प्रधान व्यक्ति सफल होते हैं। राहु-मंगल सेना तथा खेल में ऊंचाइयां देते हैं। शुक्र-राहु विज्ञापन एवं चित्रपट में तथा शनि एवं गुरु के साथ योगकारी राहु निश्चित ही गद्दी पर बिठाता है।

राहु एवं केतु के नकारात्मक प्रभावों को ज्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है। हकीकत में तो यह है कि ये कैरियर में सहयोगी ग्रह हैं। लेकिन भारतीय ज्योतिष शास्त्र में राहु-केतु को छाया ग्रह मानकर उनके प्रभाव को भी महत्वपूर्ण माना गया है। ज्योतिष ग्रंथ में राहु के संबंध में विस्तार से विवेचन मिलता है। फल दीपिका के अनुसार राहु, पंचम, दशम तथा एकादश भाव में राजयोग का कारक माना गया है। आजीविका अथवा कैरियर की दृष्टि से इन भावों में राहु को सुखद कहा गया है।

'यथार्थ चिंतामणि' में कहा गया है कि तृतीय, पंचम, नवम

एवं एकादश भाव की राहु की महादशा एवं अन्तर्दशा योगकारी होती है। राहु की इन महादशाओं में पदोन्नति, व्यापार एवं कारोबार में वृद्धि तथा कैरियर आदि में अच्छे फल प्राप्त होते हैं।

'जातक भरणम्' के अनुसार लग्नस्थ राहु जातक को विजय प्राप्त करवाता है। इसी तरह दशम एवं एकादश भाव स्थित राहु अचानक उन्नति के योग बनाता है। षष्ठ भाव स्थित राहु जातक को शत्रुहन्ता बनाता है।

पराशर ने त्रिकोणस्थ अर्थात लग्न, पंचम स्थित राहु को उत्तम निरूपित किया है। राहु की महादशा का अन्तर्दशा में कार्यारंभ करने से व्यापार एवं नौकरी आदि की स्थिति बनती है।

राहु को राजनीति में सत्ता का कारक माना गया है। चतुर्थेश यानि चतुर्थ भाव के स्वामी या चतुर्थ भाव स्थित ग्रह की दशा में या अन्तर्दशा में सत्ता प्राप्त होती है।

कहा गया है कि यदि कुंडली में राजयोग है तथा चतुर्थ भाव में राहु स्थित है तो उनकी महादशा या अन्तर्दशा में निश्चय ही सत्ता प्राप्त होगी।

राहु ग्रह शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, दान उपाय की विधि

1. परिचय/दान पदार्थ : नैऋत्यांशूर्पाकार मंडल अंगुल 12, राठिना देशोद्भव पैठीनसगोत्र, धूर्मवर्ण/उड़द, गोमेद, कृष्ण अश्व, खड्ग, नीलवस्त्र, कम्बल, तिल, तेल, लोहा, अभ्रक, सप्तधान्य, रत्न, स्वर्ण।

2. जपनीय एकाक्षरी मंत्र – **ॐ रां राहवे नमः।**

3. जपनीय बीज मंत्र – **ॐ एं ह्रीं राहवे नमः।**

4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र – **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं राहवे नमः।**

5. जपनीय वैदिक मंत्र :

ॐ कयानश्चित्रऽआभूवदूतीसदावृधःसखा।
कयाशचिष्ठयावृता।।

6. गायत्री मंत्र :

ॐ शिरोरूपाय विद्महे आमृतेशाय धीमहि
तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

7. जप संख्या/समयः 18,000 /रात्रिकाल

8. समिधः /औषधि : दूर्वा/श्वेत चंदन

9. अन्य उपायः भुजंगदान, चांदी, लोहा, तांवा के 3 नाग बनवाकर 3 अमावस्या को क्रमशः बहते पानी में बहा देने से राहु बाधा शांत होती है।

10. रत्न/उपरत्न दान : गोमेद/रक्त चंदन, काला हकीक

11. धातु/न्यूनतम वजन : पंचधातु या चांदी/ 6 रत्ती

12. राहु की उंगली : मध्यमा

13. जाप करने वाले नाले नक्षत्र : आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा

14. जाप करने के वार/समय : शनिवार/सूर्यास्त के बाद

15. पुराणोक्त स्तवन –

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।

राहु ग्रह का संपूर्ण विवरण

छाया ग्रह राहु को काल पुरुष का दुख माना गया है। इसके संबंध में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं –

रत्न दान	गोमेद, काला हकीक
उपरत्न दान	संगतुरसावा, संगसाफी
राशि संचार काल	18 माह
स्वभाव	पापी, तीक्ष्ण व दारूण
समिधा	दूर्वा
पुष्प	काले फूल
गुण	तमोगुणी
जाति	म्लेच्छ
आकृति	लम्बी, दीर्घ
दिशा	नैऋत्य
धातु	सीसा, रांगा, पंचधातु
लिंग	पुरुष
तत्व	वायु
प्रतिनिधि पशु	ऊंट, घोड़ा
अवस्था	वृद्ध
दृष्टि	सप्तम
मित्र ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
शत्रु ग्रह	सूर्य, चंद्रमा, मंगल
सम ग्रह	गुरु, बृहस्पति
शरीर में स्थिति	उदर संस्थान, पेट
भाव का कारकत्व	गुप्त, धन, विषैले जन्तु आदि

अंग्रेजी पर्याय	ड्रेगन्स हैड
स्वामित्व	कन्या
मूल त्रिकोण	कर्क
उच्च राशि	मिथुन
नीच राशि	धनु
वर्ण	नीला, भूरा
स्वरूप	मलि
प्रकृति	वात
गोत्र	पैठीनस
वाहन	व्याघ्र
ऋतु	ग्रीष्म
पराभव	किसी से नहीं
संज्ञा	अशुभ
क्रीड़ा स्थल	गांव का छोर
रुचि	गारुड़ी विद्या, तकनीकी विद्या, परकाया प्रवेश
शुभाशुभ	अशुभ
दान पदार्थ	गोमेद, अश्व, गेहूँ, नीला या भूरा वस्त्र, कंबल, तेल, कांसा, तिल, लोहा, अभ्रक, शीशा आदि
स्वाद	तीखा
वार	कोई नहीं
राज्याधिकार	कोई नहीं
शरीर में प्रभाव	रक्त व त्वचा पर
निसर्ग बल	स्थिति व संगतिनुसार

बली	रात्रि में
स्थान	ऊसर भूमि
दोष शमन	किसी का नहीं
भाग्योदय	42–48 तक
जड़ी	सफेद चंदन
दान का समय	रात्रि
भाग	पृष्ठ
शुष्कता	तिक्त
मंडल	सूर्पाकार
देश	मलय/राठीपुर
देवता	रुद्र
विद्या	गारुड़ी, राजनीति, तंत्र शास्त्र, न्युरोलाजी व मनोविज्ञान
दीप्तांश	12 अंश
दृष्टि	अधो
काल समय	उभय
शरीर में कारक	त्वचा व रक्त
विचारणीय विषय	दादा व पूर्वजों का
रोग	बवासीर, हाथ–पैरों में सूजन, कुष्ठ सर्पदंश, वात–पित्त–कफ विकार, संक्रामक रोग, गण्डमाला, विषविकार व हृदय विकार

राहु शांति के चमत्कारी उपाय

1. राहु को प्रसन्न करने हेतु गोमेद युक्त 'राहु यंत्र' या राहु कवच धारण करें।
2. शिवजी पर बिल्वपत्र चढ़ाएं व शिव मंदिर के नियमित दर्शन करें। शिवजी पर धतूरे के पुष्प चढ़ाएं।
3. घर में या आंगन में गोबर, लकड़ी आदि का धुआं न जलाएं तथा रसोई में चिमनी (धुआंदानी) न रखें।
4. राहु उच्च का हो तो राहु की चीजों का दान न दें और राहु नीच का हो तो राहु की चीजों का दान न लें।
5. यदि राहु संतान में बाधक हैं तो 'हरिवंश पुराण' के अनुसार जातक को पराई कन्या का दान संकल्पपूर्वक करने से पुत्र लाभ होता है।
6. झूठी गवाही न दें या झूठ न बोलें। गबन न करें व ससुराल से अच्छे संबंध रखें। भाईयों-बहनों के हक न छीने, उनसे प्रेम रखें।
7. गोमेद धारण करें। गोमेद के अभाव में सिक्का धारण करें। काला हकीक भी धारण कर सकते हैं।
8. 'नवनाथ के 13 पारायण करें।

अथ राहु रक्षा कवचम्

अस्य श्रीराहुकवचस्तोत्रमंडल चंद्रमा ऋषिः। अनुष्टुप छंदः।
रां. बीजं। नमः शक्तिः। स्वाहा कीलकम्।
राहु प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
प्रणयामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरिटिनम्।

सैहिकेयं करालास्यं लोकानामभयप्रदम्।
नीलांबरः शिरः पातु ललाटं लोकवंदितः।
चक्षुषी पातु में राहुः श्रोत्रे त्वर्धशरीरवान्।
नासिकां में धूम्रवर्णः शूलपाणिर्मुखं मम।
जिव्हां में सिंहिकासूनुः कंठ में कंठिनांधिकः।।
भुजंगेशो भुजौ पातु नीलमाल्याम्बरः करौ।
पातु वक्षः स्तथं मंत्री पातु कुक्षिं विधुंतुदः।।
कटिं में विकटः पातु ऊरू में सुरपूजितः
स्वर्भानुर्जानुनी पातु जंघे में धातु जाडयहा।।
गुल्फौ ग्रहपतिः पातु पादौ में भीषणाकृतिः।
सर्वाण्यंगानि में पातु नीलश्चन्दनभूषणः।।
राहोरिदं कवचमृद्धिदवस्तुदं यो भकत्या
पठत्युदिनं जियतंः शुचिः सन्।
प्राप्नोति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धिमापुरोग्यमात्मविजये
च हि तत्यसादात्।।

इति श्रीमहाभारते धृतराष्ट्रसंजयसंवादे द्रोणपर्वणि राहुकवचं संपूर्णम्।

राहु मंत्र

राहु मंत्रों का जाप श्रद्धा, विश्वास और विधि के अनुसार करना चाहिए। राहु के वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक मंत्र निम्नलिखित हैं –

वैदिक मंत्र

ॐ कयानश्चित्रऽऽआभूवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता।।

तांत्रिक मंत्र

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं राहुवे नमः।

पौराणिक मंत्र

ॐ रां राहवे नमः

ह्रीं अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दनम्।

सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहु प्रणमाम्यहम्।।

उपरोक्त राहु मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नियमित रूप से विधिवत जप करके राहु-पीड़ा का निवारण कर सकते हैं। राहु मंत्र अल्पतम 18000 जपें, जबकि अधिकतम 72000 जपने पर पूर्ण फलदायी होता है।

राहु अष्टोत्तर शत नमन नामावली

ॐ राहवे नमः	ॐ सैंहिकेयाय नमः
ॐ विन्धुन्तुदाय नमः	ॐ सुरशत्रवे नमः
ॐ तमसे नमः	ॐ पणिने नमः
ॐ गाग्यर्यायनाप नमः	ॐ सुरारये नमः
ॐ नीलजीमूतसंकाशाय नमः	ॐ चतुर्भुजाय नमः
ॐ खडंगगखेटकधारिणे नमः	ॐ वरदायकहस्तकाय नमः
ॐ शूलायुधाय नमः	ॐ दक्षिणाशामुखरथाय नमः
ॐ तीक्षणंदंष्ट्राकरालकाय नमः	ॐ विषज्वालावृत्ताऽस्याय नमः
ॐ गोमेधाभरणप्रियाय नमः	ॐ भाषप्रियाय नमः
ॐ काश्यपर्षिनन्दनाय नमः	ॐ भुजगेश्वराय नमः
ॐ उल्कापातयित्रे नमः	ॐ शूलिने नमः
ॐ निधिपाय नमः	ॐ कृष्णसर्पराजे नमः
ॐ सूर्पाकारासनस्थाय नमः	ॐ अर्द्धशरीराय नमः

ॐ शात्रवप्रदाय नमः
ॐ छायास्वरूपिणे नमः
ॐ द्विषच्छक्रच्छेदकाय नमः
ॐ भयंकराय नमः
ॐ तमोरूपाय नमः
ॐ नीललोहिताय नमः
ॐ नीलवसनाय नमः
ॐ चण्डालवर्णाय नमः
ॐ मेषभवाय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ उपरागकराय नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ नीलपुष्पविहाराय नमः
ॐ अष्टमग्रहाय नमः
ॐ यातुधनुकुलोद्भवाय नमः
ॐ देवजातिप्रविष्टकाय नमः
ॐ धोराय नमः
ॐ शुक्रमित्राय नमः
ॐ माने गंगस्नानदात्रे नमः
ॐ सद्गृहेन्ऽयबलधृते नमः
ॐ सिंह्याजन्मने नमः
ॐ राज्यदात्रे नमः
ॐ जन्मकर्त्रे नमः
ॐ मादकाज्ञानदाय नमः
ॐ जन्महानिदाय नमः
ॐ रवीन्दुभीयकराय नमः
ॐ कठिनांगकाय नमः
ॐ करालास्याय नमः
ॐ क्रूरकर्मण नमः
ॐ श्यामात्मने नमः
ॐ किरीटने नमः
ॐ शनिसामन्तवर्त्मगाय नमः
ॐ अश्वयृक्षभवाय नमः
ॐ शनिवत्फलदाय नमः
ॐ अपसव्यगतये नमः
ॐ सोमसूर्यच्छविमर्दकाय नमः
ॐ ग्रहश्रेष्ठाय नमः
ॐ कबंधमात्रदेहाय नमः
ॐ गोविन्दवरपात्राय नमः
ॐ क्राय नमः
ॐ शनेर्मित्राय नमः
ॐ अगोचराय नमः
ॐ स्वगृहे प्रवलाढयदाय नमः
ॐ चतुर्थे मातृनाशकाय नमः
ॐ दानवाय नमः
ॐ महाकायाय नमः
ॐ विधुरिपवे नमः
ॐ जन्मकन्याराज्यदात्रे नमः
ॐ नवमे पितृहन्त्रे नमः
ॐ द्यूने कलहप्रदाय नमः

ॐ पंचमे शोकदायकाम नमः
ॐ सप्तमे कलहप्रदाय नमः
ॐ चतुर्थे वैरदायकाय नमः
ॐ दशमे शोकदायकाय नमः
ॐ अन्ते वैरप्रदासयकाय नमः
ॐ गोचरचराय नमः
ॐ पंचमे घिषणश्रगंदाय नमः
ॐ बलिने नमः
ॐ चन्द्रवैरिणे नमः
ॐ सुरशत्रवे नमः
ॐ शांभवाय नमः
ॐ पाटीरपूरणाय नमः
ॐ भक्तरक्षास नमः
ॐ सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः
ॐ कृष्णाय नमः
ॐ षष्ठे विन्तदात्रे नमः
ॐ नवमे पापदात्रे नमः
ॐ आदौ यशः प्रदात्रे नमः
ॐ कालात्मने नमः
ॐ धनेककुत्प्रदाय नमः
ॐ स्वर्भानवे नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ पापग्रहाय नमः
ॐ पुज्यकाय नमः
ॐ पैठीनसकुलोद्रवाय नमः
ॐ राहुमूर्तये नमः
ॐ दीर्घाय नमः
ॐ अतनवे नमः
ॐ विष्णुनेत्रराय नमः
ॐ स्वर्भानवे नमः

राहु ग्रह की पूजन विधि

जातक का जब राहु ग्रह खराब हो तो वह सबसे पहले राहु ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और यह मंत्र पढ़ें –

विनियोग

ॐ कयानइति वामदेव ऋषिर्गायत्री
छन्दोराहुर्देवता राहु वाहने विनियोगः।

ध्यान–तत्पश्चात्– हाथ में काले चावल लेकर राहु का ध्यान करें–

नीलाबरो नीलवपुः किरीटी कराल वक्त्र करताल शूली।
चतुर्भुजोः चक्रधरस्य च राहु सिंहासनस्थो वरदोस्थ मह्याम।।
अथ ध्यानं समर्पयामि।

यह मंत्र पढ़कर चावल पूजा स्थल पर चढ़ा दें।

तत्पश्चात्- राहु को जल चढ़ाएं -

शुद्धोदकं जलं समानीतं स्नानं प्रतिगृहताम्।

तत्पश्चात्- हाथ में रोली या चन्दन लेकर राहु को अर्पित करें-

ॐ कयानश्चित आभुवः दूती सदावृधः
सखा कया सचिष्टया वृता।
चंदनं समर्पयामि।

तत्पश्चात्- राहु को चावल (अक्षत) चढ़ाएं।
अक्षतं समर्पयामि।

तत्पश्चात्- राहु को फूल चढ़ाएं। **पुष्पं समर्पयामि।**

तत्पश्चात्- मिठाई चढ़ाएं। **नैवेद्यं समर्पयामि।**

तत्पश्चात्- नमस्कार करें। **ततो नमस्कारं करोमि।**

हाथ में काले चावल लेकर राहु को प्रणाम करें-

अर्द्धकाय महावीर्य चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिका गर्भ सम्भूतं तं राहु प्रणमाम्यहम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः राठिना पुरोदभवः पैठिनि सगोत्र भो।
राहु इहागच्छ इहातिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।।

राहु ग्रह की व्रत विधि

यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से यह व्रत प्रारंभ किया जाता है। इसके वर्ष पर्यन्त 18 व्रत करने चाहिए। यदि अधिक करें तो और भी उत्तम है। इस दिन सर्वप्रथम प्रात:काल दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर पीपल के वृक्ष में पानी सीचें तथा सायंकाल घी का दीपक जलाएं। राहु के तांत्रिक या बीज मंत्र की 21 माला का जप करें। काले कंबल का आसन बनाकर व्रत पूजन करना चाहिए। व्रत के दिन सायंकाल तिल के लड्डुओं का भोजन करके व्रत का समापन करें या मीठा चूरमा, रोटी, तिल तेल, रेवड़ी आदि का व्रत में भोजन करें।

उद्यापन

व्रत की समाप्ति पर अंतिम शनिवार को उद्यापन करें। इस दिन ग्रह पूजन में इसका मंडल शूर्पाकार 12 अंगुल नैऋत्य दिशा में बनाकर उद्यापन करें। हवन-पूर्णाहुति के पश्चात ब्राह्मण को भोजन करावें तथा काले काले वस्त्र व लोहे के बने आभूषण दान देवें।

राहु शांति के उपाय

1. काले वस्त्र या काला कंबल पहनें।
2. नीले वस्त्र धारण करें।
3. काला या नीला रुमाल उपयोग में लें
4. घड़ी का पट्टा काला रखें।
5. आंखों में काजल लगाएं।

6. लोहे की अंगूठी, नीला पैन, नीली माला धारण करें।
7. घर के पर्दे-सोफे का कवर व घर की चादरें काली रखें।

दान की वस्तुएं

गेहूँ, रत्न, अश्व, नीलमणि, काले वस्त्र, कंबल, तिल, तेल, अभ्रक, नील वस्त्र, गोमेद, सोना, काले-फल-फूल आदि।

तांत्रिक मंत्र **ॐ रां राहवे नमः।**

बीज मंत्र **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।**

वैदिक मंत्र

ॐ कया नश्चित्रयआभूवदूती सदा वृधः सखा।
कयाशचिष्ठयावृत्ता।।

राहु ग्रह की व्रत कथा

बहुत समय पहले की बात है। जिस समय देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया तो उसमें से जहां भिन्न-भिन्न और अनमोल रत्न निकले, वहीं अमृत कलश भी निकला और सुरा यानि मदिरा भी निकली।

अमृत को लेकर देवताओं और असुरों में छीना-छपटी होने लगी। भगवान श्री हरि सब देख रहे थे। वे चिंतित हुए। फिर मोहिनी रूप धारण करके प्रकट हुए।

उन्होंने (श्री हरि) असुरों का ध्यान अपनी और आकर्षित कर मदिरा पिला-पिलाकर, असुरों को मदहोश कर दिया और फिर कहा-'मैं तुम्हें अमृत अपने हाथों से पिलाऊंगी, मगर इसके पहले तुम स्नान करके आओ।' असुर, श्री हरि की बातों में आ गए। वे मदिरा के नशे में दूर समुद्र में स्नान करने चले गए।

मगर राहु वहीं छिपकर खड़ा रहा और जब उसने श्री हरि की चाल को समझा तो वह भेष बदलकर देवता के रूप में, देवताओं को कतार में शामिल हो गया।

श्री हरि ने सभी देवताओं को अमृत पिलाया और जब अमृत पिलाते हुए राहु तक पहुंचे तो राहु को अमृत पिलाने लगे, तभी उन्हें ज्ञात हुआ कि–ये तो भेष बदले हुए राहु है। उन्होंने अमृत कलश झट से हटा लिया। राहु उठकर भागा।

अभी उसे पिलाया गया अमृत उसके कंठ तक ही पहुंच पाया था कि श्री हरि ने सुदर्शन चक्र से राहु का सिर धड़ विहीन कर दिया। राहु का धड़ तो निस्तेज हो गया, मगर उसका सिर सुरक्षित रहा। तब श्री हरि को ज्ञात हुआ कि अब राहु के सिर को समाप्त नहीं किया जा सकता। तब राहु को विचार–विमर्श कर ग्रह लोक में स्थान दे दिया।

राहु ग्रह राक्षस जाति का होने के बावजूद अत्यधिक चतुर और दया भाव रखने वाला ग्रह है। यह ग्रह दुष्टों को अच्छा सबक सिखाता है। व्यभिचार को नष्ट करने के लिए इसकी गति बेहद तीव्र हो जाती है।

एक समय की बात है कि राजा भीमसेन के राज्य में चारों और प्रसन्नता का आलम था। उनके राज्य में कहीं कोई दुखी नहीं था। सारी प्रजा खुशहाल थी। उनके इस राज्य में, सुलोचना नाम की एक सुंदर स्त्री रहा करती थी। उसके पति का नाम विवेक था, वह राजमहल में एक अच्छे पद पर कार्यरत था।

परन्तु सुलोचना को अपने रूप का बहुत अभिमान था। वह परपुरुषों को अपने रूप जाल में फंसाकर, अपने इशारों पर नचाकर उनसे व्यभिचार करती थी। उसके पति विवेक उससे

बेहद प्रेम करते थे।

एक दिन वह जल्दी ही राजमहल से घर लौट आए। जैसे ही उन्होंने अपने घर में प्रवेश करना चाहा। किसी की खिलखिलाहट की आवाज सुन वह ठिठक कर दरवाजा पर ही रुक गए और दरवाजे की झिरी में से अन्दर देखने लगे।

अन्दर सुलोचना को किसी परपुरुष के पहलू में देखकर उनके क्रोध की सीमा न रही। वह होठों ही होठों में बड़बड़ाते हुए बोले- 'सुलोचना, हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि तुम ऐसी होगी। धिक्कार है तुम पर और यह सत्यता जान लेने के बाद हमें स्वयं पर भी धिक्कार है। अब हमारा जीवन व्यर्थ है यह सब बड़बड़ाते हुए विवेक वहां से हटे और गंगा तट की ओर बढ़ गए। वह अपने आपको गंगाजल में लीन कर लेना चाहते थे।

उधर राहु ग्रह को तो व्यभिचार से सख्त नफरत थी ही, वह सुलोचना को देख रहे थे। वे विवेक के मन की बात भी समझ चुके थे। अत: जब राहु ग्रह ने देखा कि विवेक जल समाधि लेने वाले हैं तो ब्राह्मण का भेष धारण कर वह प्रकट हुए।

उन्होंने विवेक से कहा - 'ठहरो वत्स!' विवेक ने पूछा- 'श्रीमान आप कौन हैं? और हमें क्यों रोक रहे हैं?' ब्राह्मण भेषधारी राहु ग्रह ने कहा-'वत्स! हम एक पंडित हैं। हम तुम्हारे मन की बात जानते हैं। तुम जल समाधि लेने का विचार रखते हो। ऐसा उचित नहीं है पुत्र। यह पाप का मार्ग है। आत्महत्या करना पाप होता है। अत: इस विचार को अपने मन से त्याग दो।'

ब्राह्मण की बात सुनकर विवेक ने पूछा-'मगर ब्राह्मण श्रेष्ठ!

अब हम क्या करें ?' ब्राह्मण (राहु ग्रह) ने कहा-'वत्स!' अपने घर जाओ। तुम्हारी पत्नी को अपने ऊपर अभिमान है। उसका यह घमंड राहु की विपरीत चाल से जल्दी ही टूट जाएगा। और वह पतिव्रता बन तुम्हारी सेवा करेगी। इस प्रकार राहु ग्रह ने विवेक को समझाकर घर वापस भेज दिया।

इधर घर पर सुलोचना रसोई घर में खाना बना रही थी। चूल्हे में लकड़ियां जल रही थीं और उनमें से धुआं निकल रहा था। जैसे ही सुलोचना ने चूल्हे में आग भड़काने के लिए फूंक मारी, वैसे ही एक चिंगारी उछली और उसकी आंख से जा टकराई। वह जोर से चिल्लाई-'हाय मैं मरी।'

तभी उसके पति विवेक ने घर में कदम रखा। वह सुलोचना को बहुत प्यार करता था। अत: वह तुरन्त उसके पास आया और बोला-'क्या हुआ सुलो ?' सुलोचना बोली-'स्वामी! आंख में चिंगारी आ गई है। दर्द से मेरा बुरा हाल हो रहा है।'

यह सुनकर विवेक तुरंत एक गिलास ठंडा पानी लाया। उसने सुलोचना की आंख धोई। इससे सुलोचना को कुछ राहत मिली, परन्तु उसकी आंख नहीं खुली। वह जोर से चीखी-'स्वामी! मेरी आंख न जाने क्यों खुल नहीं रही है।' विवेक ने कहा-'तुम चिंता मत करो, सुलो। मैं अभी वैद्यजी को बुलाकर लाता हूँ। सब ठीक हो जाएगा।'

फिर विवेक वैद्यजी को बुलाकर लाया। वैद्यजी ने सुलोचना की आंख देखी और चिंतित स्वर में बोले-'सुलोचना की यह आंख खराब हो गई है। अब यह एक आंख से देख नहीं पाएगी।' यह सुनकर सुलोचना रो पड़ी।

थोड़ी शांति सी हुई तो सुलोचना ने स्वयं को आईने में देखा।

एक आंख चली जाने के कारण उसका चेहरा बदसूरत हो गया था। वह अपना चेहरा दोनों हथेलियों से ढंककर फूट-फूट कर रो पड़ी। उसका सारा सौन्दर्य कुरूपता में बदल गया था।

उसी रात सुलोचना को राहु ग्रह ने स्वप्न में दर्शन दिए। उन्होंने कहा- 'उठो, सुलोचना उठो! क्या हुआ हैं तुम्हें?' राहु ग्रह देव भेष धारण किए थे। उनके चेहरे पर ओज था। सुलोचना बिस्तर पर बैठ गई और पूछा-'आप कौन हैं?'

वह बोले-'सुलोचना! मैं राहु ग्रह हूँ। मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि अब सतयुग चल रहा है और सतयुग में व्यभिचार का कोई स्थान नहीं है। तुमने एक बार अपने पति को परमेश्वर मान कर पूजा की थी। फिर बाद में तुम व्यभिचार में फंसती चली गई। तुम्हें अपने सौन्दर्य पर घमंड हो गया था। इसलिए तुम्हारी यह दशा हुई है।'

सुलोचना को जैसे अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने राहु ग्रह के चरण स्पर्श किए और कहा-'हे राहु देव! मुझसे बड़ी भारी भूल हुई है। आज मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ है। मुझ पर कृपा करें देव! आज के बाद मैं सदैव पतिव्रत धर्म का पालन करूगी। आप कृपा करके मुझे कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे कि मेरी यह कुरूपता दूर हो जाए और मैं अपने पति को प्रसन्न रख सकूं।'

राहु ग्रह देव ने कहा - 'सुलोचना! उपाय तो है परन्तु, क्या तुम करोगी? सुलोचना बोली-'अवश्य देव! मैं अवश्य करूंगी।'

इस पर राहु देव ने कहा-'सुनो सुलोचना! तुम्हारे एक पुण्य का यह प्रताप है। सतयुग में जो कलियुग का प्राणी पापी है।

उसने यदि कोई एक भी पुण्य का काम किया है तो उसका फल उसे सौ गुना प्राप्त होता है। उसी पुण्य के प्रताप से आज तुम बच पाई हो। वरना अग्नि तुम्हें जलाकर भस्म कर देती। अत: मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ। तुम्हें मेरे यानि राहु ग्रह के पांच व्रत करने होंगे। एक समय किसी भी अन्न का भोजन करना होगा। तुम मांस खाती हो, मांस का तुम्हें त्याग करना होगा। उद्यापन के लिए पांच ब्राह्मणों को भोजन कराना होगा। वस्त्र का दान देना होगा। सात्विक प्रवृत्ति को अपनाना होगा। पति को परमेश्वर मानकर पूजा करनी होगी। पति की आज्ञा का पालन करना होगा। यदि तुम ऐसा करोगी तो मैं तुमसे प्रसन्न रहूँगा। तुम्हारा रूप सौन्दर्य तुम्हें पुन: वापस मिल जाएगा। बस तुम इतना ही करो, पाप का मार्ग त्याग दो। व्रत तुम्हें शनिवार अथवा मंगलवार को रखने होंगे।'

राहु ग्रह की बातें सुनकर सुलोचना ने कहा–'मैं आपकी हर आज्ञा का पालन करूंगी, राहु ग्रहदेव।' सुलोचना ने इतना ही कहा था कि राहु ग्रह अन्तर्धान हो गए।

अगले दिन शनिवार था। सुलोचना ने स्वप्न का सारा वृत्तांत पति को कह सुनाया। विवेक ने उसे आश्वासन दिया। सुलोचना ने कहा–'स्वामी! मुझसे बड़ी भूलें हुई हैं। मुझ अपराधिन को क्षमा करें एवं व्रत रखने की अनुमति दें।' विवेक ने उसे अनुमति दे दी। सुलोचना ने व्रत शुरु किए।

समय के साथ उसके व्रत पूरे हुए फिर उसने उद्यापन किया। पांच वस्त्रों का दान दिया, पांच ब्राह्मणों को भोजन कराया। अगली रात जब सुलोचना सोई और सुबह उठी तो राहु ग्रह की कृपा से उसकी आंख की रोशनी लौट आई थी। उसके सौन्दर्य

में और अधिक वृद्धि हो गई थी। फिर उसने प्रण किया कि वह सदैव पति को परमेश्वर मानकर पूजा करेगी।

इस प्रकार सुलोचना को व्यभिचार जैसे पाप से मुक्ति मिल गई थी। उसके एक पुण्य के कार्य ने उसका जीवन सार्थक कर दिया था।

राहु ग्रह की इस कथा का जो भी स्त्री-पुरुष पाठ करेगी, पूजा विधि-विधान द्वारा करेगा, उसे राहु ग्रह की कृपा से लाभ होगा। यश और सौन्दर्य में वृद्धि होगी।

केतुदेव का परिचय

केतुदेव जैमिनी गोत्र, शूद्र वर्ण के हैं तथा कुशदीप के अधिपति हैं, इनका वर्ण धुएं सा है और वैसे ही वस्त्र धारण करते हैं। मुख विकृत है, गिद्ध वाहन एक हाथ वरमुद्रा तथा एक हाथ में गदा लिए हुए हैं। इनके अधिदेवता चित्रगुप्त एवं प्रत्यधि देवता ब्रह्म हैं।

जैसा कि राहु पर विचार करते हुए हमने लिखा है कि राहु एवं केतु सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवं नेपच्यून, यूरेनस, प्लूटो की भांति आकाशीय पिंड नहीं हैं। वे क्रांतिवृत्त पर पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए चंद्रमा द्वारा सूर्य की परिक्रमा करती पृथ्वी के यात्रा पथ के कटाव बिन्दु हैं। उत्तरी बिन्दु को राहु, 'ड्रेगंस हेड' और दक्षिणी बिन्दु को केतु या 'ड्रेगंस टेल' कहा जाता है।

राहु की चर्चा करते समय हमने समुद्र मंथन संबंधी एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा का उल्लेख किया है। विश्व मोहिनी का रूप धरे विष्णुजी ने सूर्य-चंद्र के संकेत पर अमृत पान करने के लिए वेष बदल कर देवताओं की पंक्ति में बैठे राहु का सिर काट दिया था, लेकिन तब तक राहु अमृत पान कर चुका थ। सिर कटने के बाद उसका धड़ देवताओं से युद्ध करता रहा। अंत में ब्रह्मा द्वारा राहु को ग्रह पद पर प्रतिष्ठित किए जाने के बाद केतु रूपी धड़ ने संघर्ष त्याग दिया। राहु की भांति उसे भी ग्रह के रूप मे मान्यता मिली।

यद्यपि सूर्य, मंगल, शनि, राहु की भंति केतु को भी क्रूर

ग्रह माना गया है। फल दीपिका में लिखा है- 'शनिवतराहु कुजवतकेतु' अर्थात राहु शनि की भांति एवं केतु मंगल के समान होता है, लेकिन द्वादश भाव में केतु को मोक्षकारक ग्रह माना गया है।

भारतीय ज्योतिष में केतु को सर्प कहा गया है, जिससे राहु सदैव भयभीत रहता है। राहु को काल तथा केतु को सर्प कहा गया है।

केतु का पैरों के तलवे पर अधिकार माना गया है। केतु एक राशि में डेढ़ वर्ष तक रहता है, चूंकि यह मंगलवत है, अत: इसे मेष राशि का स्वामी कहा गया है। मेष के प्रथम नक्षत्र अश्विनी का स्वामी भी केतु ही माना गया है। केतु की नपुंसकलिंगी, तामसी ग्रह में गणना की जाती है। वृष में केतु को उच्च का कहा गया है, जबकि वृश्चिक में नीच का, जो मंगल की राशि है।

सूर्य-चंद्र से राहु-केतु की शत्रुता है। अत: उनकी राशियां सिंह एवं कर्क केतु के लिए शत्रु राशियां मानी गई हैं। मित्र राशि हैं-मिथुन, कन्या, मकर एवं मीन।

केतु की विंशोत्तरी दशा की अवधि सात वर्ष कही गयी है। अन्य ग्रहों की भांति केतु को भी तीन नक्षत्रों का स्वामी माना गया है ये नक्षत्र हैं- अश्विनी, मघा एवं मूल।

राहु की भांति केतु को भी किसी राशि का स्वामित्व नहीं प्रदान किया गया है। केतु चंद्रमा का मित्र माना गया है, बल्कि राहु परम शत्रु।

केतु ग्रह शांति हेतु मंत्र, जाप, अनुष्ठान, दान आदि की विधि

1. परिचय/दान पदार्थ : वायव्येध्वजाकार मंडल अंगुल 6 अवन्ति देशोद्भव, जैमिनी गौत्र, विचित्रवर्ण/कुलित्थ, माषान्न, सप्तधान्य कस्तूरी, कृष्णवस्त्र, कंबल, शस्त्र, बकरा, लहसुनिया, स्वर्ण, तिल, तेल।
2. जपनीय एकाक्षरी मंत्र – **ॐ कें केतवे नमः।**
3. जपनीय बीज मंत्र – **ॐ ह्रीं ऐं केतव नमः।**
4. जपनीय तंत्रोक्त मंत्र – **ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं सः केतवे नमः।**
5. जपनीय वैदिक मंत्र :

ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽऽअपेशसे।
समुषद्रि रजाययाः।

6. गायत्री मंत्र :

ॐ पद्मपुत्राय विद्महे आमृतेशाय धीमहि
तन्नो केतुः प्रचोदयात्।

7. जप संख्या/समयः 17,000 /रात्रिकाल
8. समिधः /औषधि : कुशा/असगन्ध
9. अन्य उपायः ध्वजा दान
10. रत्न/उपरत्न दान : लहसुनिया/श्वेत चंदन
11. धातु/न्यूनतम वजन : त्रिधातु या चांदी/ 3 रत्ती
12. केतु की उंगली : मध्यमा/कनिष्ठा
13. जाप करने के नक्षत्र : अश्विनी, मघा, मूल
14. जाप करने के वार/समय : रवि, सोम, मंगल/सूर्यास्त बाद

15. पुराणोक्त स्तवन –

पलाशपुष्पसंकाशं, तारकग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।

केतु ग्रह का संपूर्ण विवरण

छाया ग्रह केतु को काल पुरुष का दुख माना गया है। इसके संबंध में कुछ तथ्य निम्नलिखित हैं –

रत्न दान	लहसुनिया
स्वरूप	मलिन
उपरत्न	संगगोदन्ती
तत्व	वायु
राशि संचार समय	18 माह
प्रकृति	वात
समय	अपराह्न
गौत्र	जैमिनी
स्वभाव	पापी, तीक्ष्ण व दारुण
अवस्था	अतिवृद्ध
समिधा	कुशा
वार	कोई नहीं
पुष्प	काला पुष्प
वाहन	कबूतर
गुण	तमोगुण
ऋतु	कोई नहीं
अंग्रेजी पर्याय	ड्रेगन्स टेल
कद	छोटा

स्वामित्व	मीन राशि
पराभव	किसी से नहीं
मूल त्रिकोण	मकर
संज्ञा	अशुभ
उच्च राशि	धनु
क्रीड़ा स्थल	श्मशान भूमि
नीच राशि	मिथुन
रुचि	तन्त्र-मन्त्र शास्त्र
वर्ण	भूरा काला, सलेटी
भाग्योय	48-54 वर्ष
जाति	म्लेच्छ
जड़ी	असगन्ध मूल
आकृति	पुच्छ, दीर्घ
दान का समय	रात्रि या संध्या समस
दिशा	नैऋत्य
मंडल	ध्वजाकार
धातु	लोहा, अष्टधातु
भाग	पृष्ठभाग
लिंग	पुरुष
विचारणीय विषय	नाना या मातृ परिवार
प्रतिनिधि पशु	बकरा
रोग	हैजा, चर्मरोग, चेचक, विषविकार
अवस्था	वृद्ध
दृष्टि	सप्तम
शरीर में कारक	रस

मित्र ग्रह	बुध
शुष्कता	तिक्त
अन्य कारकत्व	दुख, शोक, चर्मरोग
राज्याधिकार	कोई नहीं
शरीर में प्रभाव	त्वचा व स्नायु पर
निसर्गबल	स्थिति में संगतिनुसार
बली	रात्रि में
स्थान	ऊसर भूमि
दोष शमन	किसी का नहीं
शुभाशुभ	अशुभ
देश	अवन्ती
देवता	उभय
स्वामी	मीन
विद्या	तंत्र-मंत्र शास्त्र
दीप्तांश	12 अंश
काल समय	उभय
दान पदार्थ	तिल, तेल, लहसुनिया, काला-सलेटी वस्त्र, कस्तूरी, काले फूल

केतु शांति के चमत्कारी उपाय

1. अशुभ भाव में स्थित केतु के लिए गणपति सहस्त्रनाम सहित गणेश पूजा करें और दूर्वा से उनका अभिषेक करें। (जल चढ़ाएं)।
2. केतु के वैदिक या तांत्रिक मंत्र का जाप करें।
3. पीपल वृक्ष की प्रदक्षिणा एवं नाग प्रतिष्ठा भी लाभकारी है।

4. केतु के अशुभ प्रभाव के शमन में गणपति उपासना सर्वोपरि मानी जाती है। उनके अथर्वशीर्ष और किसी भी मंत्र के अनुष्ठान से लाभ प्राप्त करें।
5. केतु द्वादश नाम का नित्य पाठ करना चाहिए।
6. राहु-केतु के दोष निवृत्ति हेतु सर्पाकृति चांदी की अंगूठी धारण करें।
7. केतु को प्रसन्न करने हेतु लहसुनियायुक्त 'केतु यंत्र' गले में धारण करें।
8. गुरुवार को यथाशक्ति ब्राह्मणों को दान दें।
9. दत्त चरित्र के 11 पारायण करें।
10. शनि एवं गुरु के होरा में निर्जल रहें।
11. केतुकृत शारीरिक पीड़ा में (टी.बी. के कारण जीर्ण ज्वर में) बकरे के मूत्र से स्नान करना और लोबान की धूप देना लाभप्रद है।
12. काले-सफेद कुत्ते को भोजन का हिस्सा दें या पालें।
13. काले और सफेद तिल प्रवाहित करें।
14. केतु उच्च का हो तो केतु की चीजों का दान न दें और केतु नीच का हो तो केतु की चीजों का दान न लें।
15. गणेश और देवी मंदिर में नित्य अर्चना करें और दीन-मलिन भिखारियों को यथाशक्ति दान एवं मछलियों तथा चींटियों को चीनी मिश्रित आटा खिलाएं।
16. जिन स्त्रियों का सप्तम या अष्टम भाव केतु से आक्रांत हो, उन्हें पीपल वृक्ष की प्रदक्षिणा और नाग प्रतिष्ठा लाभदायक है।
17. नीम का एक वृक्ष अपने हाथ से लगाएं

18. हाथी दांत से बनी वस्तुओं का व्यवहार या स्नान के जल में उसे डालकर स्नान करने से भी कष्ट निवारण होता है।

केतु मंत्र

केतु मंत्रों का जाप श्रद्धा, विश्वास और विधि के अनुसार करना चाहिए। केतु के वैदिक, तांत्रिक और पौराणिक मंत्र निम्नलिखित हैं –

वैदिक मंत्र

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोंमर्याऽऽअपशसे समुषद्भिरजाययाः।

तांत्रिक मंत्र

ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

पौराणिक मंत्र

ॐ कें केतवे नमः

ह्रीं पलाशपुष्प संकाश, तारका ग्रह मस्तकम्।
रौद्रं रोदात्मकम् घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम्।।

उपरोक्त केतु मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नियमित रूप से विधिवत जप करके केतु–पीड़ा का निवारण कर सकते हैं। केतु मंत्र अल्पतम 17000 जपें, जबकि अधिकतम 68000 जपने पर पूर्ण फलदायी होता है।

राहु नामावली

ॐ केतवे नमः	ॐ स्थूलशिरसे नमः
ॐ शिरोमात्रय नमः	ॐ ध्वजाकृतये नमः
ॐ नवग्रहयुताय नमः	ॐ सिंहिकाऽऽसुरीगर्भसंभावाय नमः
ॐ महाभीतिकराय नमः	ॐ चित्रर्णाय नमः

ॐ शरीपिंगलाक्षकाय नमः
ॐ तीष्णदंष्ट्राय नमः
ॐ रक्तनेत्राय नमः
ॐ तीव्रकोपाय नमः
ॐ क्रूकण्ठाय नमः
ॐ छायाग्रहविशेषकाय नमः
ॐ महीशीर्षाय नमः
ॐ पुष्पवद्ग्रहिणे नमः
ॐ गदापाणये नमः
ॐ चित्रध्वजपताकाय नमः
ॐ चित्ररथाय नमः
ॐ कुलुत्यमक्षकाय नमः
ॐ उत्पातजनकाय नमः
ॐ मन्दसखाय नमः
ॐ नाकपतये नमः
ॐ जैमिनिगोत्रजाय नमः
ॐ दक्षिणामुखाय नमः
ॐ महासुरकलोद्रवायं नमः
ॐ लंबदेवाय नमः
ॐ उत्पातरूपधारिणेनमः नमः
ॐ कालाग्निसन्निभाय नमः
ॐ गृहकारिणे नमः
ॐ चित्रप्रसूताय नमः
ॐ सर्वव्याधिविनाशकाय नमः
ॐ नवमे पापदायकाय नमः
ॐ फुल्लधूमसंकाशाय नमः
ॐ महोदराय नमः
ॐ चित्रकारिणे नमः
ॐ महासुराय नमः
ॐ क्रोधनिधये नमः
ॐ अन्त्यग्रहाय नमः
ॐ सूर्यारये नमः
ॐ वरहस्ताय नमः
ॐ चित्रवस्त्रधराय नमः
ॐ घोराव नमः
ॐ शिखिने नमः
ॐ वैदूर्यावरणाय नमः
ॐ शुक्रमित्राय नमः
ॐ गदाधराय नमः
ॐ अन्तर्वेदीश्वरया नमः
ॐ चित्रगुप्तात्मने नमः
ॐ मुकुन्दवरपात्राय नमः
ॐ धनवर्णाय नमः
ॐ मृत्युपुत्राय नमः
ॐ अदृश्याय नमः
ॐ नृपीडाय नमः
ॐ सर्वोपद्रववारकाय नमः
ॐ अनलाय नमः
ॐ अपसव्यपचारिणे नमः
ॐ पश्चमें शोकदाय नमः

ॐ उपरागरवेचराय नमः
ॐ तुरीये सुखप्रदाय नमः
ॐ पापग्रहाय नमः
ॐ प्राणनाथाय नमः
ॐ द्वितीयेऽऽस्टुटवाग्दात्रे नमः
ॐ कामरूपिणे नमः
ॐ कुशेध्मप्रियाय नमः
ॐ नवमे पितृनाशकाय नमः
ॐ सुतानन्दनिधानकाय नमः
ॐ अनंगाय नमः
ॐ उपान्ते कीर्तिदाय नमः
ॐ अष्टमे व्याधिकर्त्रे नमः
ॐ जनने रोगदाय नमः
ॐ ग्रहनायकाय नमः
ॐ खेचराय नमः
ॐ अशषपूजिताय नमः
ॐ नटाय नमः
ॐ धूम्राय नमः
ॐ अजिताय नमः
ॐ सिंहासनाय नमः
ॐ रवीन्दुघूतिनाशकाय नमः
ॐ पीड़काय नमः
ॐ विष्णुदृष्टाय नमः
ॐ भकतरक्षाय नमः
ॐ विचित्रफलदायिने नमः
ॐ अपिुरुषकर्मणे नमः
ॐ तृतीय वैरदाय नमः
ॐ स्फोटककारकाय नमः
ॐ पंचश्में श्रमकारकाय नमः
ॐ विषाकुलितवक्तकाय नमः
ॐ सिंहदन्ताय नमः
ॐ चतुर्थे मातृनाशाय नमः
ॐ अन्त्ये वैरप्रदाय नमः
ॐ सर्पाक्षिजाताय नमः
ॐ कर्कराशयुभवाय नमः
ॐ सप्तमेकहलप्रदाय नमः
ॐ घने बहुसुखप्रदाय नमः
ॐ उर्ध्वमूर्धजाय नमः
ॐ पापदृष्टये नमः
ॐ शांभवाय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ शुभाशुभफलप्रदायक नमः
ॐ सुधापायिने नमः
ॐ भक्तवत्सलाय नमः
ॐ केतुमूर्तये नमः
ॐ अमराय नमः
ॐ अमर्त्याय नमः
ॐ असुरेश्वराय नमः
ॐ वैचित्र्यक्पोतस्यनन्दनाम नमः
ॐ भक्ताभीष्टफलप्रदायं नमः

केतु ग्रह की पूजन विधि

जातक का जब केतु ग्रह खराब हो तो वह सबसे पहले केतु ग्रह के लिए आचमनी में जल लेकर पृथ्वी पर विनियोग दें और यह मंत्र पढ़ें -

विनियोग

ॐ केतु कृष्णवन्निति मधुच्छन्द ऋषिर्गायत्रीछन्दः
केतु देवता केत्वाहने विनियोगः।

ध्यान-तत्पश्चात्- हाथ में काले तिल लेकर केतु का ध्यान करें-

धूरो द्विबाहुर्वरदो गदाधरः गृधासनस्थो विकृतानस्च।
किरीटि केयर विभूषितायः स चास्तु में केतुगण
प्रशान्त।।चक्रधरस्य च राहु सिंहासनस्थो वरदोस्थ मह्याम।।
अथ ध्यानं समर्पयामि।

यह मंत्र पढ़कर तिल पूजा स्थल पर चढ़ा दें।

तत्पश्चात्- केतु को जल चढ़ाएं -

शुद्धोदकं जलं समानीतं स्नानं प्रतिगृहताम्।

तत्पश्चात्- हाथ में रोली या चन्दन लेकर केतु को अर्पित करें-

ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशोंमर्या अपेशसे समुषिदर जाययाः।
चंदनं समर्पयामि।

केतु को प्रणाम करें-

पलाश पुष्प संकाशं तारकाग्रह मस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः अर्न्तवेदी समुद्रभवाः जैमिनीसगोत्र भो।

केतु इहागच्छ इहातिष्ठ आवाहयामि स्थापयामि।।

सभी ग्रहों को हाथ जोड़कर प्रणाम करें।

ब्रह्मा मुरारि त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमि सुतोबुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहः शांति करा भवन्तु।
ॐ सर्वेभ्र्या ग्रहाणां सुप्रतिष्ठितो वरदो भवः।।

केतु ग्रह की व्रत विधि

केतु ग्रह का व्रत शनिवार के दिन किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से प्रारंभ किया जाता है। इसके वर्ष पर्यन्त कम से कम 18 व्रत करने चाहिए। यदि अधिक करें तो और भी उत्तम है। इस दिन सर्वप्रथम प्रातःकाल दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर एक बर्तन में जल, दूर्वा, कुशा लेकर पीपल के वृक्ष में पानी सीचें तथा सायंकाल घी का दीपक जलाएं। केतु के तांत्रिक या बीज मंत्र की 3 या 18 माला का जप करें। काले कंबल का आसन बनाकर व्रत पूजन करें। व्रत के दिन सायंकाल मीठा चूरमा, रोटी, तिल, तेल, रेवड़ी या तिल के लड्डुओं का भोजन करके व्रत का समापन करें।

उद्यापन

व्रत की समाप्ति पर अंतिम शनिवार को उद्यापन करें। इस दिन ग्रह पूजन में इसका मंडल ध्वजाकार 6 अंगुल बनाकर वायु कोण में पूजन करें। हवन-पूर्णाहुति के पश्चात ब्राह्मण को भोजन करावें व दान-दक्षिणा देवें।

केतु शांति के उपाय

1. काला या नीला रुमाल उपयोग में लें।
2. काला वस्त्र या काला कम्बल धारण करें।
3. आंखों में काजल लगाएं।
4. लोहे की अंगूठी, नीला पैन, नीली माला धारण करें।
5. नीले वस्त्र पहनें।
6. घर के पर्दे-सोफे का कवर व घर की चादरें काली रखें।
7. घड़ी का पट्टा काला रखें।

दान की वस्तुएं

गेहूँ, रत्न, अश्व, नीलमणि, कंबल, कस्तूरी, शास्त्र, काले वस्त्र, तेल, काले-फल-फूल, बकरी, सोना, सीसा, सप्तधान्य, नारियल व उड़द आदि।

बीज मंत्र **ॐ कें केतवे नमः।**

तांत्रिक मंत्र **ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।**

वैदिक मंत्र **ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशोंमर्या अपेशसे।**
समुषद्भिरजायथाः।

केतु ग्रह की व्रत कथा

बहुत समय पहले की बात है। किसी राज्य में राजा भीमसेन राज्य करते थे। उनके राज्य में चारों तरफ खुशहाली थी। राज्य में प्रजा में किसी भी प्रकार का असन्तोष नहीं था।

लेकिन उनके राज्य में कुछ व्यक्ति ऐसे थे, जो कर्ज लेकर अपने कार्य करते थे और व्यापार में घाटा हो जाने पर कर्ज नहीं

चुका पाते थे। हालांकि उनकी नीयत तो कर्जदार का कर्ज चुकाने की होती थी, परन्तु जब कर्ज चुकाने की सामर्थ्य ही नहीं तो वह बेचारे कर्ज कैसे चुकाएं। इस प्रकार कर्जदारों से उन्हें अपमानित होना पड़ता था। उनकी प्रताड़ना सहन करनी पड़ती थी और वह चिंतित होकर दुखी हो उठते थे।

इसी राज्य में एक अग्रवाल परिवार भी रहता था। उस परिवार के मुखिया का नाम था मोहनचंद्र गांधी। उसके परिवार में उसकी पत्नी और दो बच्चे थे। उनमें से एक तो पुत्र था जिसका नाम था रोहन। उसकी उम्र बारह साल थी। दूसरी एक पुत्री थी सुरभि। जिसकी उम्र दस साल थी। मोहन चंद्र का लालटेन, दीपक, लैम्प आदि बेचने का छोटा-सा कारोबार था।

मोहन चंद्र ने एक साहूकार से कर्ज लेकर यह व्यापार शुरु किया था। लेकिन उसका व्यापार चला नहीं। उसके व्यापार में लगातार घाटा हो रहा था। व्यापार बढ़ाने के लिए उसने साहूकार से और कर्ज लिया। लेकिन तब भी व्यापार नहीं जमा। उनके हालात दिन पर दिन बिगड़ते चले गए। मोहन चंद्र यह देखकर चिंतित रहने लगे।

उनके घर में एक समय चूल्हा जलता। खाने को रूखा-सूखा मिल रहा था। इससे मोहन चंद्र बहुत दुखी थे। परन्तु उन्हें अपनी परेशानी दूर करने का कोई मार्ग नजर नहीं आ रहा था।

उनके पड़ोस में साधु नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वह ज्योतिष विद्या का अच्छा ज्ञाता था। जब उसने मोहन चंद्र की दयनीय दशा देखी तो गणना करके बताया-'मोहन! क्यों चिंतित होते हो? तुम्हें व्यापार में जो लगातार घाटा हो रहा है, वह सब केतु ग्रह की अप्रसन्नता के कारण हो रहा है। अत: तुम केतु ग्रह

को प्रसन्न करो। तुम्हारा शीघ्र ही उद्धार होगा। केतु ग्रह कर्ज से मुक्ति दिलाता है जो उसकी (केतु ग्रह) की आराधना करते हैं, उन्हें कभी भी कर्ज के बोझ से नहीं दबना पड़ता, वह कभी कर्जदार नहीं होते।' मोहनचंद्र ने कहा-'पंडित जी। मैं यह व्रत जरूर करूंगा। कृपा करके आप मुझे उपाय बताइए।'

साधु नाम के पंडित ने बताया-'केतु ग्रह के लिए तुम्हें शनिवार या मंगलवार के पांच व्रत रखने होंगे। एक समय फल का आहार लेना होगा। छठे मंगलवार या शनिवार को उद्यापन करना होगा। पांच ब्राह्मणों को भोजन कराना होगा। उन्हें अन्न और वस्त्र का दान देना होगा। इस प्रकार केतु ग्रह की तुम पर कृपा दृष्टि हो जाएगी। तुम्हें कर्ज के बोझ से मुक्ति मिल जाएगी।'

अगले दिन जब मंगलवार आया तो मोहन चंद्र ने केतु ग्रह के व्रत प्रारंभ किए और जैसा साधु पंडित ने बताया वैसा ही किया। उसने उद्यापन किया। वस्त्र और फलों का दान दिया और जब यह सब कार्य संपन्न हो गया, तब उस रात केतु ग्रह ने स्वप्न में उन्हें दर्शन दिया।

एक दिव्य पुरुष जो कि केतु ग्रह थे, उन्हें जगा रहे थे। वे कह रहे थे -'उठो मोहनचंद्र जागो।' उनकी आंख खुल गई। एक दिव्य पुरुष को अपने सामने देखकर पहले तो वह हैरान हुआ, फिर पूछा-'हे श्रेष्ठ पुरुष! आप कौन हैं? कृपया अपना परिचय दें।'

उसने कहा-'मैं केतु ग्रह हूँ। तुमने मेरे व्रत रखे, उद्यापन किया। वस्त्र और फलों का दान दिया। मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। अब तुम्हें कर्ज से मुक्ति मिल जाएगी। जो भी मेरी कथा पढ़ता

है, प्रचार करता है, उस पर कभी कर्ज नहीं होता। लक्ष्मी भी उस पर प्रसन्न रहती है। उसका लाभ मार्ग प्रशस्त होता है।'

यह सुनकर मोहन चंद्र ने कहा-'केतु ग्रह देव! आपने मुझे दर्शन दिए, मैं धन्य हुआ।' अभी मोहन ने सिर्फ इतना ही कहा था कि केतु ग्रह अन्तर्धान हो गए। तभी मोहन चंद्र का स्वप्न टूट गया।

अगले दिन सुबह जब वह दुकान पर पहुंचा तो दुकान पर ग्राहकों की भीड़ लग गई। उसकी छोटी सी दुकान चल निकली। शीघ्र ही उसने सारा कर्ज भी चुका दिया। फिर उसने यह बात अन्य लोगों को भी बताई।

जो केतु ग्रह की पूजा-पाठ करता है, उस पर कर्ज की कभी छाया नहीं पड़ती। वह सदैव खुशहाल जीवन बिताता है।

विशेष

आजकल प्रचलन में रत्नों द्वारा ग्रह शांति के संबंध में प्राचीन ज्योतिष धर्म ग्रन्थों में कहीं पर भी कोई एक श्लोक द्वारा उल्लेख नहीं है। इस विषय में हम सभी का दायित्व है कि ज्योतिष से हटकर विषय रत्न, आभूषण आदि का प्रचार-प्रसार करने से बचें। इसी में ज्योतिष शास्त्र एवं हम सभी की भलाई है।

www.mahaherbals.biz

महा हर्बल्स™

उत्तमोत्तम गुणवत्ता का स्वास्थ्य संरक्षण

रोग निवारक शाश्वत् आयुर्वेदिक औषधियों द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण व चिकित्सा

रसायन

एकल औषधियां

विशेष औषधियां

तेल

आयुर्वेदिक चाय

शास्त्रोक्त औषधियां

रोग-प्रतिरोधक औषधियां

ऑनलाइन आर्डर हेतु कृपया विजिट करें : www.mahaherbals.biz

Mfd. in India by:
Maharishi Herbal Pharmacy & Research Centre
Plot No. B-30, Sector-1/A, Bagroda Industrial Area, Bhopal (M.P.) 462045

Please Contact: Mobile : +91 9179042571, 573 Ph. : +91 755 4951200, 201

पदाधिकारी

ज्योतिष मठ संस्थान

संस्थापक अध्यक्ष
पं. श्री अयोध्या प्रसाद गौतम

अध्यक्ष
श्रीमती भूपिन्दर कौर

उपाध्यक्ष
डॉ. जे.पी. पॉलीवाल

संचालक
पं. श्री विनोद गौतम

कार्यालयाध्यक्ष
पं. श्री कैलाश चंद्र दुबे

कोषाध्यक्ष
श्रीमती सविता गौतम

सह-व्यवस्थापक
श्री अशोक प्रियदर्शी
श्री सुबोध मिश्रा,
पं. जितेंद्र शर्मा,
पं. अभिषेक दुबे

कानूनी सलाहकार

श्री अमित शुक्लाजी, एड. हाईकोर्ट जबलपुर मो.-9425325708
श्री उमाकांत शुक्लाजी (सीनि. एड.), सतना मो.-9303321029
श्री ओपी त्रिपाठीजी (एड. हाईकोर्ट), जबलपुर मो.-9826768278
श्री योगेश द्विवेदीजी (एड.) भोपाल मो.-9425159954
श्री सी.एस. शर्मा (एड.) भोपाल मो. 9425016814

मार्गदर्शी

पूर्व चीफ जस्टिस मा. श्री डीपीएस चौहानजी, इलाहाबाद, जस्टिस मा. श्री आरडी शुक्लाजी, भोपाल, जस्टिस मा. श्री अशोक तिवारीजी, इंदौर, न्यायमूर्ति मा. श्री एसएन द्विवेदीजी, भोपाल, न्यायमूर्ति मा. श्री शिवशेखर उपाध्यायजी, भोपाल

परामर्शदाता

पं. श्री धनेश प्रपन्नाचार्य, कालीमठ, भोपाल
पं. श्री रामकिशोर वैदिक, ब्राह्मण वैदिक युवा संगठन, भोपाल